

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रन्थमाला

६

नागदमण

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रंथमाला

६



परामश मण्डल

- श्री नरोत्तमदास जी स्वामी, एम ए
- श्री गान्ध्याल जी सबसेना, साहित्यरत्न
- श्री अक्षयचन्द्र जी शर्मा एम ए
- श्री नाथूराम जी लडगायत, एम ए
- श्री रामेश्वरप्रसाद जी पांडिया, एम ए
- श्री चन्द्रदान जी धारण एम ए

नागदमण

[ढिगळ कृष्ण-भक्ति-साहित्य का सुमधुर काव्य]

सम्पादक

मूलचर्च 'प्राणेश', साहित्यरत्न
शोधसहायक, मा० वि० म० शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर



भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर [राबतस्थान]

भारतीय विद्या मंदिर ग्रन्थमाला-६

● सम्पादक
श्री मूलचन्द्र 'प्राज्ञेय', साहित्यरत्न

● आवरण शिल्पी
श्री आशाराम गोस्वामी

● प्रथम संस्करण भा० सं० १८८८, १९६६ ई०

● मूल्य ५ ००

● प्रकारांक
भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर [राजस्थान]

● मुद्रक
एनूकेशनल प्रेस, बीकानेर

विषय-सूची

आभार	१
प्राक्कथन	२
सम्पादकीय	१-५
भूमिका	१-१२

खंड १

प्रथम अध्याय	
मूला सांयाजी व्यक्तित्व और कृतिरत्व	३
द्वितीय अध्याय	
नागबमण का कथा स्रोत तथा कवि की मौलिक उद्भावना	११
तृतीय अध्याय	
नागबमण की भाषा और व्याकरण	२१
चतुर्थ अध्याय	
नागबमण का साहित्य सौष्ठव	३६

खंड २

नागबमण : मूल पाठ, महारूपण पाठनेर, गन्थाप एवं भावाय	५३
--	----

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य में नागबमण प्रतग

आभार

भारतीय विद्या मन्दिर प्रथम माला का छठा पुष्प पाठकों की सेवा में सह्य प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं परम बख्श साहित्यानुसारी श्रीमान गिरधरदास जी भूषडा द्वारा उदारता पूर्ण प्रदत्त वार्षिक सहयोग के लिए हम उनके बड़े आभारी हैं। बख्श बक्ति साहित्य पर सस्था का यह पत्रला प्रथम है। आशा है इसी प्रकार भविष्य में भी सस्था अपने शुभचिंतकों व सहायकों के सहयोग एवं सहायता से उपयोगी प्रथों का प्रकाशन करती रहेगी।

मूलचन्द पारीक

रजिस्ट्रार

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर

प्राक्कथन

कालिय और कस की दुरभित्ति के कारण आये दिन ब्रजमण्डल में नये-नये उत्पात हो रहे थे । जन घन की अपार क्षति हो रही थी । सारे भूभाग में क्षोभ की लहर दौड़ रही थी । जनता हाथों में तलवार लिए दुष्टों का बलन करने के लिए सज्ज थी । भगवान कृष्ण ने उनका नेतृत्व किया । ब्रजमण्डल की हृषि और भोषन की समृद्धि के लिए यह आवश्यक हो गया कि विषधर कालिय का तत्काल न्यून किया जाय । एक दिन कटुक-क्रोडा के निमित्त कृष्ण ने कालिय को उसके घर में जा बसाया । पुराने सारे घर चुका दिया । इस पौराणिक आह्वान को कवि साया भूता ने भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से मौनिक रूप में काव्यात्मि व्यक्त दो है । काव्य सौंदर्य और शलीगत विनोयताओं पर सूत्रिकाकार और सपादक महोदय ने विशद प्रकाश डाल दिया है, मेरे लिए कुछ कहने की शेष नहीं रहा है । रचनाकार ने समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों और आवश्यकता के परिप्रेष्य में इस कृति का सजन किया है और वह इसमें पूर्ण सफल हुआ है । साधना क एक एक शब्द से अभि-मप्रित यह काव्यकृति पुरातन काल से कवि की कीर्ति का कला रही है, और आज की बदली हुई परिस्थितियों में भी यह हमें दुष्टों का बलन करने की बराबर प्रेरणा दे रही है । अत्याचारियों उ गर्व को धूर कर जन जीवन को निरापद करने की यह शौर्य पुर्ण गाथा लौकिक साहित्य की अमर-निधि है और इसीलिए इसे पूरी मेहनत के साथ सम्पादित कर साहित्य जगत के हाथों में सौंपा गया है ।

प्रिय श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने ढिगल भाषा और साहित्य की भाष प्रवणता और उसके व्याकरण के मम को समझकर आधुनिक साहित्य के विद्वानों के लिए कृति को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है । वह हम सबके साधुवाद के पात्र हैं ।

हमें इस बात का गर्व और हय है कि इस महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ को नये रूप में प्रकाशित करने का श्रेय गोप प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ है । भागा है, विश्व पाठक इसका पूरा ध्यान उठा पायेंगे ।

स्वयनारायण पारीक

अध्यक्ष

मा वि म गोप प्रतिष्ठान, बीकानेर

आभार

भारतीय विद्या मन्दिर प्रय माला का छठा पुष्प पाठकों की सेवा में सह्य प्रस्तुत है । इसके प्रकाशन में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं परम ब्रह्मण्य साहित्यानुरागी श्रीमान गिरधरदास जी मू षडा द्वारा उदारता पूर्ण प्रदत्त धार्मिक सहयोग के लिए हम उनके बड़े आभारी हैं । ब्रह्मण्य भक्ति साहित्य पर सस्या का यह पत्रला प्रय है । आशा है इसी प्रकार भविष्य में भी सस्या अपने शुभचिंतकों व सहायकों के सहयोग एवं सहायता से उपयोगी ग्रंथों का प्रकाशन करती रहेगी ।

मूलचन्द पारीक
रजिस्ट्रार
भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर

प्राक्कथन

कालिय और कस की दुरभिसधि के कारण आये दिन ब्रजमण्डल में नये नये उरपात हो रहे थे । जन घन की अपार क्षति हो रही थी । सारे मूसाग में क्षोभ की लहर दौड़ रही थी । जनता हाथों में तलवार लिए दुष्टों का बलन करने के लिए सन्नद्ध थी । भगवान् कृष्ण ने उनका नेतृत्व किया । ब्रजमण्डल की कृषि और गोधन की समृद्धि के लिए यह आवश्यक हो गया कि विषघर कालिय का तत्काल वधन किया जाय । एक दिन कन्दुक-क्रीडा के निमित्त कृष्ण ने कालिय को उसके घर में जा बचाया । पुराने सारे खेर छुका दिये । इस पौराणिक आख्यान को कवि साया झूठा ने भाया और भाव दोनों दृष्टियों से नौविक रूप में काव्याभि-व्यक्ति की है । काव्य सौंदर्य और श्लोगत विवेकताओं पर सूत्रिकाकार और सपादक महोदय ने विगद प्रकाश डाल दिया है, मेरे लिए कुछ कहने की श्रेय नहीं रहा है । रचनाकार ने समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों और आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में इस कृति का सर्जन किया है और वह इसमें पूर्ण सफल हुआ है । साधना के एक एक शब्द से अभि-मन्त्रित यह वाक्यकृति पुरातन काल से कवि की कीर्ति का कलश रही है, और आज की बदली हुई परिस्थितियों में भी यह हमें दुष्टों का बलन करने की बराबर प्रेरणा दे रही है । अत्याचारियों के गर्व को चूर कर जन जीवन को निरापद करने की यह शीघ्र पूज गायी लौकिक साहित्य की अमर-निधि है और इसीलिए इसे पूरी मेहनत के साथ सम्पादित कर साहित्य क्षमता के हाथों में सौंपा गया है ।

प्रिय श्री मूलचन्द्र 'प्रार्थना' ने डिगल भाषा और साहित्य की भाव प्रवणता और उसके व्याकरण के मम को समझकर आधुनिक साहित्य के विद्वानों के लिए कृति को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है । वह हम सबके साधुवाद के पात्र हैं ।

हमें इस बात का गव और हर्ष है कि इस महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ को नये रूप में प्रकाशित करने का श्रेय शीघ्र प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ है । धन्य है, विज्ञ पाठक इसका पूरा ध्यानव उठा पायेंगे ।

सत्यनारायण पारीक

अध्यक्ष

भा वि म शीघ्र प्रतिष्ठान, बीकानेर

आभार

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रन्थ माला का छोटा पुष्प पाठकों की सेवा में सह्य प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं परम बख्श साहित्यानुरागी श्रीमान गिरधरदास जी भूषडा द्वारा उदारता पूर्ण प्रदत्त वार्षिक सहयोग के लिए हम उनके बड़े आभारी हैं। आशा है इसी प्रकार भविष्य में भी सस्था अपने शुभचिंतकों व सहायकों के सहयोग एवं सहायता से उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन करती रहेगी।

मूलचन्द पारीक

रजिस्ट्रार

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर

प्राक्कथन

कालिय और कंस की दुरभिसंधि के कारण आये दिन ब्रजमण्डल में नये नये दरपात हो रहे थे । जन धन को अपार क्षति हो रही थी । सारे भूभाग में शोक की लहर दौड़ रही थी । जनता हाथों में तलवार लिए दुष्टों का बलन करने के लिए सज्ज थी । भगवान कृष्ण ने उनका नेतृत्व किया । ब्रजमण्डल की क्षुब्ध और रोधन की समृद्धि के लिए यह आवश्यक था गया कि विषघर कालिय का तत्काल वधन किया जाय । एक दिन कटुक-क्रीडा के निमित्त कृष्ण ने कालिय को उसके घर में जा बसाया । पुराने सारे बर चुका दिये । इन पौराणिक आह्वान को कवि साया झूला ने माया और भाव दोनों दृष्टियों से मौलिक रूप में काव्याभिव्यक्ति दी है । काव्य सौंदर्य और श्लोगत विशेषताओं पर सूक्ष्माकार और सपादक महोदय ने विशद प्रकाश डाल दिया है, मेरे लिए कुछ कहने को शेष नहीं रहा है । रचनाकार ने समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों और आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में इस कृति का सजन किया है और वह इसमें पूर्ण सफल हुआ है । साधना के एक एक शब्द से अभिमत यह काव्यकृति पुरातन काल से कवि की कौति का कलश रही है, और आज की बदली हुई परिस्थितियों में भी यह हमें दुष्टों का बलन करने की बराबर प्रेरणा दे रही है । अत्याचारियों के गव को घूर कर जन जीवन को निरापव करने की यह दीप पुण गाथा लौकिक साहित्य की अमर-निधि है और इसीलिए इस पुरी मेहनत के साथ सम्पादित कर साहित्य जगत के हाथों में सौंपा गया है ।

प्रिय थी भूलघद'प्राणे' ने हिमाल माया और साहित्य की नाव-प्रवणता और उसके व्याकरण के मम को समझकर आधुनिक साहित्य के विद्वानों के लिए कृति को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है । वह हम सबके साधुवाद के पात्र हैं ।

हमें इस बात का गव और ह्य है कि इस महत्वपुण काव्य ग्रन्थ को नये रूप में प्रकाशित करने का श्रेय गीध प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ है । आशा है, वित्त पाठक इसका पूरा मानव उठा पायेंगे ।

सदयनारायण पारीक

अध्यक्ष

मा बि न शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

सम्पादकीय

शोध प्रतिष्ठान द्वारा संचालित साप्ताहिक साहित्य गोष्ठी ने एक दिन द्विगल भावा और साहित्य विषय की चर्चा चल रही थी । प्रतिष्ठान के सत्कालीन सचालक श्रीमान् अक्षयचन्द्रजी शर्मा एम ए ने द्विगल काव्य पर कर्ण कटुता एवं बुद्धता का आरोप लगाने वाले व्यक्तियों की अल्पज्ञता पर सरस सारते हुए प्रस्तुत 'नागदमन' की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया तथा साथ ही इस कृति का सुन्दर ढंग से सम्पादन करके प्रकाशित करवाने की आवश्यकता भी प्रकट की और इसके सम्पादन का काय मुझे सौंपा ।

'नागदमन' द्विगल मक्ति साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति होने के कारण मत्त एवं कवि तो अपने सफलप्रार्थों (मुठकों) में इसका सकलन करते ही थे पर साथ ही राजस्थान में इस काव्य का उपयोग सर्पविष निवारणार्थे भाद (मंत्र) के रूप में होने के कारण जन सामान्य भी इस कृति को अपने पास सुरक्षित रखने का प्रयास करता था । राजस्थान प्रांत में नागदमन की गताधिक प्रतियों का उपलब्ध होना इस बात का प्रबल प्रमाण है ।

प्रस्तुत सम्पादन का काय प्रारम्भ करने पर मुझे 'नागदमन' की लगभग तीस प्रतियों के अवलोकन का सोभाग्य प्राप्त हुआ । यद्यपि ये प्रतियां स० १७१० वि० से लगा कर स० १९९० वि० तक की प्रसम्भ अवधि में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखित एवं सुरक्षित थीं, फिर भी उन प्रतियों में पर्याप्त रूप से पाठ साम्य दृष्टिगोचर हुआ । यदि उनमें कोई अक्षर था वह या तो प्रतिलिपिकार द्वारा अपने मानवद्व द्वारा विनिर्मित शैली के कारण प्रतीत हुआ या फिर दुर्बोध गव्यों के स्थान पर सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण । अत उक्त सभी उपलब्ध प्रतियों के पाठान्तर देकर पृष्ठमार एक समय के बुरूपयोग से बचने के लिए उनमें से केवल छह प्रतियों को मूल-पाठ एवं पाठ-नेत्र की दृष्टि से चुना गया । ये छहों

प्रतियों उपयुक्त सभी प्रतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनका सविष्ट परिचय इस प्रकार है—

- 'क' प्रति हस्तलिखित
 प्राप्ति स्थान—श्री बद्धमान ज्ञान भण्डार, बीकानेर।
 अनुलिपिकार—बीररा रामचन्द्र।
 अनुलिपि काल—स० १७१७ वि० मात्रपद कृष्णा ८ शनि।
 अनुलिपि स्थान—जतारण
- 'ख' प्रति हस्तलिखित
 प्राप्तिस्थान—श्री भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर।
 अनुलिपिकार—मथेन कुण्डा
 अनुलिपिकाल—स० १७५२ वि० द्वितीय आषाढ़ शुक्ला १२
 अनुलिपिस्थान—बीकानेर (अनु०)
- 'ग' प्रति हस्तलिखित
 प्राप्ति स्थान—श्री खजांची कला भवन पुस्तकालय, बीकानेर।
 अनुलिपिकार—अज्ञात
 अनुलिपिकाल—स० १८०९ वि० शिव कृष्णा ७ गुप्त
 अनुलिपि स्थान—अज्ञात
- 'घ' प्रति हस्तलिखित
 प्राप्ति स्थान—श्री अमय जन प्रयालय, बीकानेर।
 अनुलिपिकार—५० गुणसेन गणि तन्त्रिण्य ५० यशोवाम मुनि
 अनुलिपिकाल—स० १७१० वि० म.ग.शीव शुक्ला ५ सोम
 अनुलिपिस्थान—श्री येशन्मेद (असलमेर)
- 'ङ' प्रति मुद्रित
 प्राप्तिस्थान—राज्य कवि लखधिरात्मज हम्मोरदान, पालणपुर।
 सम्पादक—मोतीदर कुलोत्पन्न श्री हम्मोरदान
 मुद्रणकाल—१८ वीं शताब्दी की तीन प्रतियों के आधार पर स० १९८९
 वि० में मुद्रित
- 'च' प्रति हस्तलिखित
 प्राप्ति स्थान—श्री अमय जन प्रयालय, बीकानेर।
 अनुलिपिकार—अज्ञात
 अनुलिपिकाल—१९ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध (अनु०)
 अनुलिपि स्थान—अज्ञात

मूल पाठ की प्रति

सम्पादनाय निर्वाचित छहों प्रतियों में 'क' प्रति प्राचीन एष सप्तम की दृष्टि से शुद्ध होने के कारण इस प्रति का मूलपाठ में उपयोग किया गया है। यद्यपि प्रतिलिपि के कालक्रम से 'घ' प्रति सभी प्रतियों से प्राचीन है, परन्तु आदि नाग व चौबीस छ'द नुदित होने के कारण इसको मूल पाठ का आधार नहीं बनाया जा सका।

पाठ भेद की प्रतिया

पाठ भेद व लिए निर्वाचित प्रतियों की प्रतिलिपि के कालक्रमानुसार न रखकर पाठ की निम्नलिखित स्थिति के अनुसार रखा गया है।
पाठ भेद अकन

पाठ भेद क रूप में प्रतिलिपिकारों के शैलीगत विभेद को अंकित नहीं किया गया है। जबल उन्हीं पाठों को पाठ भेद के रूप में स्वीकार किया गया है जिन्हे द्वारा या तो मूल शब्द के स्वरूप की पुष्टि होती हो या जिन्हे द्वारा अलगत विशेषता प्रगट होती हो। उक्त छहों प्रतियों में से जिन प्रतियों में 'क' या 'ख' छ'द उपलब्ध होते हैं उन्हें यथास्थान 'नहीं है' व 'य० पा०' के चिह्न द्वारा दिखाया गया है।
शैलीगत विषमताओं का परिहार

(अ) राजस्थान के प्रतिलिपिकारों के द्वारा समुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'इकार' या 'ईकार' को सवत्र दीर्घ लिखने की परम्परा रही है इसी प्रकार समुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'उकार' या 'ऊकार' की लुप्त्य लिखा गया है। परन्तु मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों का छ'द अथवा ध्याकरण के अनुसार जिस स्थान पर जसा रूप होना चाहिए, कर दिया है।

(आ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों ने 'ऊ' के स्थान पर 'बु' लिखा है परन्तु मूलपाठ में उक्त 'ऊ' ही स्वीकार किया है। यथा—'ऊमो' के स्थान पर 'बुमो' न लिखकर उक्त 'ऊमो' ही लिखा गया है।

(इ) राजस्थान के प्रायः प्रतिलिपिकारों ने 'ड' या 'ढ' के स्थान पर सवत्र 'ड' ही लिखा है इसी प्रकार 'ल' या 'ळ' के स्थान पर सवत्र 'ल' ही लिखा है। परन्तु मूलपाठ में उक्त ध्वनि के अनुसार 'ड' एवं 'ळ' कर दिया गया है।

(ई) राजस्थान के सभी प्रतिलिपिकारों ने सानुनासिक ध्वनि एष

धनुस्वार की प्रकट करने के लिए सबसे शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग किया है। अतः मूलपाठ में भी उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया है।

(उ) रामस्थान के कई प्रतिलिपिकारों द्वारा अनुनासिक धर्णों से पूर्वके षण्ण पर शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग द्विगोचर होता है। परन्तु मूलपाठ में उसे स्वीकार नहीं किया गया है। यथा—'मुण'या राणी' को 'मु णै' वा 'राणी' न लिखकर 'मुणै' या 'राणी' ही लिखा गया है।

(ऊ) नागवमण की कई प्रतियों में 'औ' के स्थान पर 'अउ' एवं 'ऐ' के स्थान पर 'अइ' का प्रयोग भी दाने में आया है, जो छत्र विधान के अनुसार उपयुक्त नहीं है। अतः मूलपाठ में उक्त दानों स्वरों को यदि वे शब्द के अन्त में प्रयुक्त हुए हैं (केवल सन्धोचन या तिरस्कारवाची गन्धों की छोड़कर) तो उनको सबसे 'औ' या 'ऐ' लिखा गया है और यदि वे शब्द के मध्य में प्रयुक्त हुए हैं तो उन्हें यथा स्थिति 'ओ' या 'औ' एव 'ए' या 'ऐ' लिखा गया है।

आलोचनात्मक अध्ययन

आलोचनात्मक अध्ययन में जिन जिन सवभ प्रथों एवं जिन जिन महानुमाओं के अभिमत का उपयोग किया गया है, उन सब का यथास्थान पाठ टिप्पणियों में उल्लेख कर दिया गया है।

हिन्दी भाषाय

हिन्दी भाषाय लिखते समय मूल गन्धों के निकटतम ध्वनित अक्षर पर ही अधिक बल दिया गया है तथा धरनी ओर से कल्पित शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया गया है। यदि किसी स्थल पर शब्दावली ठीक होने पर भी कोई भाव अस्पष्ट रह गया है तो वहाँ उसे 'अर्थात्' करके सुस्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

आवरण पृष्ठ का चित्र

आवरण पृष्ठ पर अंकित चित्रों में से मध्य भाग का चित्र मडोवर से प्राप्त एवं जोधपुर के सरदार भूजियम में सुरक्षित गुप्तकालीन स्तूप, इससे बाहिने भागवाला चित्र मद्रास में प्राप्त आठवीं शताब्दी की कांस्य मूर्ति एवं बायें भागवाला चित्र मायुनिक लीला अंकन की, सरल रेखानुकृतियाँ हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति की अधिक से अधिक उपादेय एवं बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। इति सफल बनाने में गोप्य प्रतिष्ठा के वसन्तमान सचालक श्रीमान् सत्यनारायणजी पारोक एम ए के

मूल-पाठ की प्रति

सम्पादनाय निर्वाचित छह प्रतियों में 'क' प्रति प्राचीन एष सेतन की दृष्टि से शुद्ध होने के कारण इस प्रति का मूलपाठ में उपयोग किया गया है। यद्यपि प्रतिलिपि के कालक्रम से 'घ' प्रति सभी प्रतियों से प्राचीन है, परन्तु जादि नाग व चौबीस छन्द नुटित होने के कारण इसको मूल पाठ का आधार नहीं बनाया जा सके।

पाठ भेद की प्रतिया

पाठ भेद के लिए निर्वाचित प्रतियों की प्रतिलिपि के कालक्रमानुसार न रखकर पाठ की निकटतम स्थिति के अनुसार रखा गया है।

पाठ भेद अकन

पाठ भेद के रूप में प्रतिलिपिकारों के शैलीगत विभेद को प्रकृत नहीं किया गया है। बवल उन्हें पाठों की पाठ भेद के रूप में स्वीकार किया गया है जिनके द्वारा या तो मूल शब्द के स्वरूप की पुष्टि होती हो या जिनके द्वारा अथगत विशेषता प्रकट होती हो। उक्त छह प्रतियों में से जिन प्रतियों में कम या अधिक छन्द उपलब्ध होते हैं उन्हें यथास्थान 'नहीं है' या 'अ० पा०' के संकेत द्वारा दिखाया गया है।

शैलीगत विषमताओं का परिहार

(अ) राजस्थान के प्रतिलिपिकारों के द्वारा सयुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'द्वार' या 'का' की सवत्र दीर्घ लिखने की परम्परा रही है इसी प्रकार सयुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'उकार' या 'ऊकार' को ह्रस्व लिखा गया है। परन्तु मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों का छन्द अथवा व्याकरण के अनुसार जिस स्थान पर जसा रूप होना चाहिए, कर दिया है।

(आ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों ने 'ऊ' के स्थान पर 'बु' लिखा है परन्तु मूलपाठ में उसे 'ऊ' ही स्वीकार किया है। यथा—'ऊमो' के स्थान पर 'बुमो' न लिखकर उसे 'ऊमो' ही लिखा गया है।

(इ) राजस्थान के प्रायः प्रतिलिपिकारों ने 'ड' या 'ढ' के स्थान पर सयध 'ड' ही लिखा है, इसी प्रकार 'ल' या 'ळ' के स्थान पर सयध 'ल' ही लिखा है। परन्तु मूलपाठ में उसे ध्वनि के अनुसार 'ड' एवं 'ळ' कर दिया गया है।

(ई) राजस्थान के सभी प्रतिलिपिकारों ने सानुनासिक ध्वनि एष



अनुस्वार को प्रकट करने के लिए सवत्र शिरोचिह्न (मस्ते) का प्रयोग किया है। अतः मूलपाठ में भी उन्हीं व्यंजनों का त्यों स्वीकार कर लिया गया है।

(उ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों द्वारा अनुनासिक व्यंजनों से पूर्वके वण पर शिरोचिह्न (मस्ते) का प्रयोग दृग्गोचर होता है। परन्तु मूलपाठ में उसे स्वीकार नहीं किया गया है। यथा—'मुण' या 'राणी' को 'मु णे' या 'राणी' न लिखकर 'मुण' या 'राणी' ही लिखा गया है।

(ऊ) भागदमण की कई प्रतिग्रंथों में 'ओ' के स्थान पर 'अठ' एव 'ऐ' के स्थान पर 'अह' का प्रयोग भी देखने में आया है, जो छत्र विधान के अनुसार उपयुक्त नहीं है। अतः मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों को यदि वे गण के अंत में प्रयुक्त हुए हैं (जबल सञ्चोषण या तिरस्तरवाची गणों को छोड़कर) तो उनको सवत्र 'ओ' या 'ऐ' लिखा गया है और यदि वे गण के मध्य में प्रयुक्त हुए हैं तो उन्हें यथा स्थिति 'आ' या 'औ' एव 'ए' या 'ऐ' लिखा गया है।

आलोचनात्मक अध्ययन

आलोचनात्मक अध्ययन में जिन जिन सदभ-प्रयोगों एव जिन जिन महानुभावों के अभिमत का उपयोग किया गया है, उन सब का यथास्थान पाद टिप्पणियों में उल्लेख कर दिया गया है।

हिन्दी भाषाएँ

हिन्दी भाषायें लिखते समय मूल गणों के निकटतम ध्वनित अथ पर हो अधिक बल दिया गया है तथा अन्तों ओर से कल्पित गणों का कम से कम प्रयोग किया गया है। यदि किसी स्थल पर गणद्वय टोक होने पर भी कोई भाव अस्पष्ट रह गया है तो वहाँ उसे 'अर्थात्' करके स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

आवरण पृष्ठ का चित्र

आवरण पृष्ठ पर अक्षित चित्रों में से मध्य भाग का चित्र मञ्जोर से प्राप्त एव जोषपुर के सरदार म्युजियम में सुरक्षित गुप्तकालीन स्तूप, इसका बाहिरी भागवाला चित्र मद्रास में प्राप्त प्राठवीं शताब्दी की कांस्य मूर्ति एव बायें भागवाला चित्र आधुनिक लोहा ध्रुवन की, सरल रेखानुकृतियाँ हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति को अधिक से अधिक उपादेय एव शोषण्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। इसे सफल बनाने में शीघ्र प्रतिष्ठान के धनमान सहायक श्रीमान् सत्यनारायणजी पारोक एम ए के

निर्वेगन, श्री तरोत्तमदास जी स्वामी एम ए , श्री उदयरामजी उज्वल, श्री चन्द्र
दानजी चारण एम ए श्री बट्टोप्रसादजी सावरिया श्री सूर्यशंकरजी पारीक
और श्री पुरुषोत्तमजी मनारिया के सुभाषी एव श्री अमय जन प्रधालय,
बीकानेर के सचालक श्री अमरचन्दजी नाहटा, श्री लज्जाजी कलामवन
पुस्तकालय बीकानेर के सचालक श्री मोतीचंदजी राजांची, श्री अनूप
सम्पूत पुस्तकालय, बीकानेर के श्री बाबूरामजी सक्सेना और प्राच्य विद्या
प्रतिष्ठान जोधपुर के उपसचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा के सहयोग
का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । एतदर्थ में उन सभी महानुभावों का धामारी
है । अतः मेरे राजस्थान वालभारती के प्रिंसिपल श्री रामेश्वरप्रसाद जी
पांडिया एम ए का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समयमात्र की स्थिति
में भी समय निकालकर प्रस्तुत ग्रन्थ की विद्वत्तापूर्ण सूचिका लिखने का
कष्ट किया है ।

—मूलचन्द्र प्राणेश

भूमिका

साया भूला कृत नाग दमण' १७वीं शताब्दी में लिखी डिगल साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। साया 'भूला' चारण कवि थे। आपको ईश्वर राज्य में राज्याश्रय प्राप्त था। बाल्यकाल में ही आपकी रचि भगवद्भक्ति में जागृत हो चुकी थी। भयस्या के साथ साथ इसका विश्वास होता गया। आपकी अपनी प्रत्युत्पन्नमति तथा भक्ति नायना के कारण तत्कालीन चारण तथा राज समाज बड़े सम्मान की दृष्टि से देखता था। चारण कवि श्री साया जो के लिये दो ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—'दशमणी हरण' और दूसरा 'नाग दमण' नाग दमण की रचना दशमणी हरण के पश्चात् हुई है। कवि ने इसकी अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में लिखा है। अतः इसमें भाषा प्रांजल्य एवं भाषा प्रौढ़ता का हीवा स्वाभाविक ही है।

भारतीय साहित्य एवं जन जीवन में राम और कृष्ण इन दो प्रसिद्ध अवतारों का बड़ा महत्त्व है। निराशा और मानाश हिन्दू जनता के जीवन में आशा एवं उत्साह का संचार करने हेतु मनोपो भगवद्भक्त कवियों ने इन दोनों अवतारों के जीवन को श्रेष्ठ रजन एवं सौम्य मंगल कारी विविध लीलाओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। कृष्ण की लीलाओं में नाग दमण, नाग लीला, कालीय दह लीला अथवा कमल लीला का विशेष महत्त्व है। इसका चलन भागवत पुराण, विष्णु पुराण, पद्म पुराण, हरिवंश पुराण एवं ब्रह्मवैव्यन्त पुराण में भी प्राप्त होता है। कवि की दृष्टि विलक्षण होती है। इन विभिन्न स्थलों से प्राप्त कथासामग्री को ग्रहण कर वह अपने युग के आलोक में उसकी अभिव्यक्त करता है। हिन्दी में सब प्रथम कालिय दमन लीला की अथनारणा कृष्ण लीला के अमर गायक महाकवि सूरदास के गीतों में हुई। नाग दमण लीला से हिन्दी तथा गुजराती के अनेक कवि प्रभावित हुए और इन्होंने मुक्तपद्य से इस कथा प्रसंग की लेकर अनेक गीत गाए। नरसी मेहता सूरदास के समकालीन कवि थे। उन्होंने भी इस लीला का दृश्यस्पर्शी चित्रण किया है। शताब्दियों अतीत के अक्षरार में विलीन हो गई, किन्तु मरगो कृत नाग-दमण के गीत आज भी लोगों की प्रज्ञान पर सुने जाते हैं। साया जो ब्रह्मवैव्यन्त धारा से सरलित गुजरात के ही संप्रदाय थे। उनकी भाषा दमण

रचना आज भी यहा के लोक कठों मे समायी हुई है ।

नाग दमन की गणना खड काव्य के अतगत् आती है । प्रथम काव्य अथवा खड काव्य के प्रारम्भ मे मगलाचरण एक काव्य परम्परा रही है । मगला चरण तीन प्रकार के होते हैं । (१) नमस्कारात्मक (२) आशीर्वादात्मक एव (३) वस्तुनिर्देशात्मक । इस काव्य का प्रारम्भ भी निम्नलिखित पक्तियों से होता है—

बल वो सादर वरणवू, सारद करी पसाय ।

पवाडी पनगा सिर, जदुपति कीधी जाय ॥

कवि मगलाचरण की प्रथम पक्ति में बुद्धि की अघिष्ठात्री मातेश्वरी गारवा से शृपारूप आशीर्वाद की याचना करता है ताकि वह कालिय नाग के सिर पर चढ़कर कृष्ण द्वारा किए गए युद्ध चरित्र का गान कर सके । दूसरी पक्ति कथा वस्तु की ओर निर्देश करती है । इसमें आशीर्वादात्मकता के साथ वस्तु निर्देशन भी है । अत इस मगलाचरण को आशीर्वादात्मक वस्तु निर्देशक मगलाचरण कहना ही उचित होगा ।

‘नाग दमन’ का कथानक पौराणिक है । इस पौराणिक कथा के माध्यम से कवि अपनी युगानुकूल नायनाओं की अभिव्यक्ति करता है । सांया मूला मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे । इतिहासकारों ने अकबर के शासनकाल को उत्तम बताने में कोई सकोच नहीं किया है । अकबर की दृष्टि से अकबर का शासन चाहे मध्य एव शानदार रहा हो, परन्तु सामाजिक एव सांस्कृतिक दृष्टि से उत्तम नहीं कहा जा सकता । समाज गरीबी एव दय का शिकार था । तुलसीदास जी की पत्तियां भी यही बताती हैं—‘मिलारी को न भोज, न चाकर को चाकरो ।’ दीन-दुलाही घम की स्थापना के साथ साथ हिन्दू सस्कृति का लोप होना प्रारम्भ हो गया था । मुगल बादशाहों द्वारा हिन्दू सस्कृति एव समाज पर नाने नाने होने वाले इस पदाघात की ओर नवत कवियों का ध्यान गया और उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से सस्कृति उद्धार एव समाज कल्याण के गीत सुनाने प्रारम्भ किए ।

भारतीय ग्रामीण समाज मे पशु घन का बडा महत्व है । पशु घन मे भी गौ घन का विशिष्ट स्थान है । समाज की संपन्नता तथा विपन्नता का मापदण्ड पशुओं की सख्या ही है । मुगल शासनकाल में गौ हत्या का प्रचलन था । उदार मुगल बादशाहों के गौ हत्या नियेधाज्ञाओं की अवहेलता मुगल सामंतों द्वारा होनी रहती थी । सांया-मूला ने नाग दमन मे गौ महत्ता के प्रसंग की काल्पनिक सृष्टि कर इस पशु घन की रक्षा का स्पष्ट संकेत किया है । नागरानी को स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं कि—

चब मात, भ्राता विहै घेन चारी, वहै आज ते नागणी भूस चारी ।
 सुरभी तणी नागणी ऊच मेवा, गळ अध्व नाचा सुरी वेह गेवा ॥

अध्व विनागिनी मोक्ष दायिनी गी के सां कृतिक स्वरूप को बताने के पश्चात् कवि कृष्ण से इस पद्य के आधिक्य महत्त्व पर भी प्रमाण उल्लेख करता है । गी रस से क्या नहीं बनना ? अनेक तरह के खाद्य पदार्थ तयार किये जाते हैं । अन्न के पेटे मिथी मावा तो आज भी प्रतिष्ठ है ।

दही दूध रावा ची आ सुखदाई, मठा घोळिया लाड खोहा मळाई ।

औद्योगिक विकास का आकांक्षी आद्य का भारत अत्र युग में स्वांस से रहा है, परंतु कवि के समय का भारत गोबर युग में था । तत्कालीन सारे आर्थिक समाज का ढांचा कृषि पर ही निर्भर था । हलकृषण का मुख्य साधन बल ही थे । इस सारी भारत गरी पृथ्वी का मार बल के वर्धों पर ही था । कवि गी के आधिक्य महत्त्व की चर्चा करते हुए बलों की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है ।

अवनी तणी भारि ले कव आयी, जुवो नागणी ने हुनी गव्नु जायो ।
 खळा हळा नागळा पाण खेती, अम नागणी हाच में आय एती ॥

इस महत्त्वपूर्ण गीधन को धराने की चारी गीकृष्ण की है और इसकी रक्षा करना वे अपनी परमदम समझते हैं । कालिय नाग ने यमुना के सारे जल को विषाक्त कर दिया है । इस जल का पान करने से गी बछड़े सब मर जाते हैं । गी हृषिकेश इस कालिय को मार कर गीओं को बचाना ही कृष्ण अरना परम कर्त्तव्य समझते हैं । इस काव्य के माध्यम से कवि परोक्ष रूपेण यही कहना चाहता है कि अत्याचारियों द्वारा मारी जाने वाली गी या पशु धन का संरक्षण करना हर भारतीय कृष्ण का प्रथम कर्त्तव्य है ।

इसके अतिरिक्त कवि बंठणव गकन है । इस कथा के माध्यम से वह अपनी मर्दित भावना का प्रकाशन करता है । कृष्ण जीवन की इस माधुर्य मरी भीजखी सीला का गान करता ही कवि का लक्ष्य है ।

प्राचीन ब्राह्मणों से शास्त्रीय दृष्टि से वाच्य के अन्वय भेद किए हैं । मुरण भेद प्रबन्ध और मुक्तक हैं । कथा बच की दृष्टि से प्रबन्ध काव्य को भी दो भागों में बांटा गया है । महाकाव्य और लघु काव्य । नाग उभय की रचना कृष्ण जीवन की एक विनिष्ट कालिय वधन की घटना को लेकर हुई है । अतः इसकी गणना लघु काव्य में ही करना समीचीन है । धीरगाथा काल मे रस प्रधान कथा काव्य को 'राजी' नाम से अभिहित किया जाता था । मराठी और डिगल साहित्य में एक 'पयादा' नामक काव्य का प्रकार भी पाया जाता है । पयादा लघु काव्य को कहते

हैं जिसमें युद्ध चरित्र का गान हो । नाग दमण' रचना को भी पवाडा की सजा दी जा सकती है । कवि ने भी प्रचारन में इस चरित्र को पवाडा सजा से अभिहित किया है—

पवाडौ पनगा सिर, जदुपति कीघी जाय ।

पवाडा योर रस प्रधान काव्य होता है । योर रस का स्थायी भाव उरसाह है । कवि की भक्ति भावना के प्राचुर्य एवं प्राबल्य को देखने से प्रकट हुई हैं । काव्य में भक्ति भावना के प्राचुर्य एवं प्राबल्य को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि पवाडा' गायक अपने भक्त कवि को नहीं बचा सका है । भक्ति में गात रस रहता है । इस काव्य कथा की समाप्ति कालिय की व्रज योधिकार्यों में घुमाकर, नव के आंगन में फिराने के साथ होती है—ताकि यहाँ की रजस्वग से उसकी देह बिता दूर हो जावे— अर्थात् उसको मुक्ति मिले । इस प्रकार इस लघु कथा काव्य का पद्यसात शांत भाव के साथ होता है ।

प्राचीन आचार्यों ने काव्य की परिभाषा करते हुए रस को ही काव्य की आत्मा बताया है । नाग दमण भक्ति भावना से प्रेरित होते हुए भी योर रस प्रधान काव्य है । प्रप के प्रारम्भ में मगलाचरण करने के पश्चात् कवि दूसरे ही छन्द में कृष्ण के साहसपूर्ण कार्यों की याद करता है ।

प्रभू घणा चा पाडिया, दत्य वडा चा दत ।

के पालण पोडिया, के पय पान करत ॥

अत इस काव्य को भक्ति भावना से प्रेरित पवाडा काव्य कहें तो कोई अनुचित नहीं होगा ।

काव्य की कथा का प्रारम्भ माता यगोदा द्वारा सोये कृष्ण का गो चारण के लिए जगाने से होता है । कृष्ण और बाल-बाल हर्षित होकर जंगल में जाते हैं । यमुना के किनारे गौए घास चर रही हैं । सारा गोप समाज खेल खेलने को आतुर है । कृष्ण इस टोली के नायक हैं । चारों तरफ उत्साह और उमग का वातावरण है । देखते ही देखते दही गेड़िये का खेल प्रारम्भ हो जाता है । उत्साह में आकर खिलाडो ने ओर से टोरा (hit) लगाया और गेँद यमुना में जा पड़ी । यमुना में महा पराक्रमी कालिय नाग का निवास है । गेँद उसके आवास में पहुँच गई । यहाँ से गेँद लौकर आना साधारण काम नहीं । सारा बाल समाज स्तब्ध एवं बेचन है । कृष्ण के हृदय में चोराय जागृत हुआ । गौ हृत्पारे कालिय को मारने का उपयुक्त अवसर जानकर वे यमुना के नाग कुंड में क्रुव पड़े । यहाँ से दही-गेड़िये खेल की समाप्ति तथा दूसरा खेल कृष्ण कालिय-

पुत्र प्रारम्भ होता है ।

कृष्ण के नाग कृष्ण में कूबते हुए वातावरण में परिवर्तन आता है । बाल सुलभ कीड़ा से उत्पन्न हर्षोल्लास का वातावरण विषाद और मर्म में बदल जाता है । इस घटना से ग्वाल-बाल तथा नगर निवासियों में जो खलबली मची उसका प्रभावपूर्ण वर्णन निम्नांकित पंक्तियों में देखिए ।

जदूनाथ काळी समी वाय जोडे, घणी भोम चाली चढी वात घोडे ।
ऊभा गाय गोवाळ भूरत आरं, हा हा वार हक्कार ससार सारं ॥

यह दुखद समाचार माता यशोदा के कानों में भी पड़ा । इसे सुनते ही माँ के ममता भरे हृदय पर आघात पहुँचा । उसका दिल द्रुत गया, शारीरिक शक्ति नष्ट हो गई । वह घडाम से गिर पड़ी । चतुर सखियाँ घटनास्थल पर माता यशोदा को ले गई । यशोदा में अधिक चलने की शक्ति अब कहाँ थी ? वह तो रास्ते में ही पक गई । कवि ने पुत्र-शोक से विह्वल माता यशोदा के विलाप का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है ।

सुण्यो वात आघात माता सनेही, जसोदा ढळी वढळी खभ जेही ।
सवाहै सखी लार हाली समाणी, रहावी विचाल यकी नद राणी ॥

×

×

×

बिहु लोचन नीर धारा बहती, कनयो कनैयो यशोदा कहती ।
कार्लिदी तणी आई लोटत काठ, गयो जाणि चित्तामणि रक गाठ ॥

विप्रसन्न या वियोग का काव्य में बड़ा महत्त्व है । कवियों की आत्मा वियोग वर्णन में खूब रमी है । मरुत कवियों में सूर और जायसी तो अपना सानो नहीं रखते । आधुनिक कवि सुमित्रानन्दन पंत भी 'वियोगी होगा पहिला कवि' कह कर वियोग का महत्त्व बताते हैं । वियोग वर्णन एक ऐसा शब्दाल जाल है कि उसमें जल्मन के बाद उससे निकलना मुश्किल होता है । साया झूला सिद्धहस्त कवि हैं । उन्होंने नागवर्मण रचना में वियोग वर्णन में दो तीन पद ही लिखे हैं । वियोग-वर्णन इस काव्य में चाहे थोड़ा हो, परंतु जो है वह बहुत ही प्रभावोत्पादक है । कवि की कुशलता इसी में है कि वह वियोग के जजाल में अविज्ञ न फस कर कथा को बड़े स्थाना-विक ढग से आगे बढ़ाता है । यह यमुना के कछार में खड़े मय सतस माता मगोदा एव गोप समाज से पाठक का ध्यान तुरंत हटाकर यमुना में नाय कृष्ण की ओर जाते धीकृष्ण की ओर खींच लेता है । कृष्ण यमुना मथन करते हुए नागराज के महल की ओर जाने विछाई देते हैं । यह देखकर

सारा गोप समाज घबरा जाता है। कृष्ण के माता पिता तथा सभी सखा
 लौट आने की प्रायना करते हैं, परंतु अत्याचारी कालिय को मारने की
 उकट इच्छा रखने वाला कृष्ण एक भी नहीं सुनते। वे गहरे पानी में
 बैठ कर नागराज के महल में पहुंच जाते हैं। महल में नागराज सोया
 हुआ है। नागरानियां अपने कक्ष में बठी हैं। कृष्ण को वहां वेले उसके
 धमलस्वरूप पर मुग्ध हो जाती हैं। कृष्ण के लोकरजनकारी रूप चित्रण
 का इस काव्य में विगिष्ट स्थान है। नाग पनिर्वा कृष्ण रूप धनन करती
 हुई कहती हैं कि सु वर सलोने इयामल रूपधारी कृष्ण के कान मुक्ता जटित
 कर्णामूषण से मुञ्जीत हैं। शरीर पर नगाचित पीताम्बर ओड़े हैं।
 गले में मुक्ताहार, गुजमाल तथा केहरि नख बहुत ही सुंदर लगते हैं।
 बाहुओं में यथ मणि युक्त याजूवध तथा सुंदर कीमती रत्नों से जटित
 मणिधय नागरानियों की दृष्टि धोर लते हैं। हाथ की मंगुली में पहिनी
 मुद्रिका उनके चित्ताकषण का विशेष केन्द्र है। नागरानियों के मुह से
 आभूषण धनन तत्कालीन सामाजिक धर्म एव नारी सुलभ आभूषण प्रम का
 परिचायक है। आभूषण सौ दय वृद्धि का साधन है। वास्तविक सौंदर्य
 तो मनुष्य की आदृति एव मानसिक गुणों पर निर्भर करता है। कृष्ण
 धीरोदात्त एव विरोचित गुणों से तो युक्त हैं ही उनके शारीरिक सौंदर्य का
 चित्रण निम्नांकित पक्तियों में देखिए।

इस नासिका सिध्ध दीपक ऐरी, क्ली चप जाणं लळी लप केरी ।
 नवा नेह दीरघ्य पक्कज नेत्र सोभा मीन सजन मृगा सहेत्र ॥

कृष्ण का याम सलोने रूप पर मुग्ध नागरानियां कृष्ण की
 उपस्थिति से विस्मित हैं। कृष्ण के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति जागृत
 होती है। वे पूछती हैं—अरे तू यहां कहां से आ गया, यहाँ क्या काम
 है? क्या तू रास्ता भूलकर सप क घर आ गया है? हाय हाय आज
 यह बकरी बाघ की गुफा में कहां से घली आई? इस प्रकार नागरानियां
 बहुत समझती हैं, डराती हैं परंतु कृष्ण त्रिलुल हो पय विचलित नहीं
 होते। बड़े आत्मविश्वास के साथ वह कहते हैं— मैं बसते प्रतीक्षा में
 सदा हूँ। हे नागिन! तुम जाओ और जल्दी ही नागराज को बगावो।
 आज हम यही अशाबा रचेंगे। युद्ध में हार-जीत तो भगवान के हाथ हैं।

युद्ध धनन हिरो के आदि-साहित्य की एक बहुत बड़ी विषयता
 है। युद्धों का सजीव एव सांगोपांग चित्रण धीरगाथा काल का अत्यंत
 मिलना कुलम है। मत्त कवि साया जी ने प्रस्तुत रचना में युद्ध वर्णन को

स्थान दिया है। युद्ध में विजय के महत्त्व का अनुभव कराने हेतु विजित के शीघ्र और पराक्रम का दिग्दर्शन कराना नितान्त आवश्यक है। नाग दमन में युद्ध कृष्ण एवं नागराज के बीच हुआ है। कवि ने नागराज के शीघ्र का वर्णन नागरानियों के मुह से ही करवाया है—

इसो आज ते कौण भूलोक आछ, काळी नागसू जुध्ध सभ्राम काछ ।
चढे कूण काळी तणी सीम चाप, काळी नाग हू आज ही कस काप ॥

अपने युग के महापराक्रमी योद्धा ब्रह्म को कपा देने वाले कालिय नाग की भीषणता का वर्णन तो अत्यन्त बढ़नीय है।

जाळ खिख्त नीला बहै विखल झाळा, वदन्त सहस्सं वधं व्योम व्याळा ।
वडा शृ ग सीतग हेमग वाळा, जिरी फू क आगे भर दू क फाळा ॥

इस दुर्द्धय भयानक नागराज को कौन जगावे ? कैसे जगावे ? यह गभीर प्रश्न सभी के सामने खड़ा हो गया। आखिर नागरानी के अनुरोध पर स्वयं कृष्ण ने मुरलीवादन शुरू किया। मुरली का स्वर सप्त पाताल भेदो था, उसका स्वर स्वर्ग देवताओं को भी सुनाई पड़ा। इस महानाद को सुनकर बुद्धों का हृदय कपायमान हो उठा। वज्र निवासी इस स्वर से अमृत पान करने लगे। इस महा-भयानक सिन्धु राग को सुनकर अत्यन्त क्रोधित, समस्त फणों को ऊँचा उठाए, फुकार करते हुए नागराज अपने दरबार में आया और उसने कृष्ण को अपनी पूछ के पर कोटे में घेर लिया। डक डक करते कालिय ने कृष्ण पर प्रहार करने प्रारम्भ किये। कृष्ण के हाथ कालिय नाग की गदन के पास थे। वह एक गारुडो की तरह दिखाई देते थे। इस दृढ़ युद्ध को देखन सारा नाग समाज एकत्रित हो गया। नागरानियाँ भी यहाँ उपस्थित थीं। कोई भी भारतीय नारी अपने सामने किसी अथ पुण्य द्वारा पति को अपमानित होते तथा पीटे जाते हुए नहीं देख सकता। किसी पुण्य को उसकी पत्नी के सामने अपमानित करना उस नारी का निरादर करना है। इसी कारण कृष्ण कालिय को उसके दरबार से बाहर निकालकर यमुना के गहरे पानी में ले गए। वहाँ भी कृष्ण ने अपने प्रहारों से नाग को बुरी तरह घायल किया—

मचे मूठ मारा क्षरं शोण शारा, फणारा घणारा करं फूत्रकारा ॥

इस अबरदस्त भार को सहने की शक्ति कालिय में न रही। वह क्षान्ताव कर उठा। भीकृष्ण के प्रहारों से वह बेहोश हो गया और छोटी नाव की तरह पानी में तैरने लगा। कालिय एक अत्याचारी नाग था। अत्याचारी के मरने पर धुर, नर आदि सभी को खुशी होती है।

श्रीकृष्ण के हाथ में कालिय नाग का सिर बँधकर देवगण भी अपने रथों को रोक कर सड़े हो गए ।

धीरे काव्य में युद्ध-सामग्री का भी बड़ा महत्त्व है । कवि ने कृष्ण, नाग रानी सबाव में समरोचित सामग्री का भी ध्यान किया है। तत्कालीन युद्ध में हथ-दल पदल, हस्तौदल आदि का होना आवश्यक था । इसके अतिरिक्त शरीर रक्षाय बाजूबंद तथा बहतर का भी महत्त्व था । अनेकानेक गधनों का प्रयोग उस समय किया जाता था । नीचे की पंक्तियों में कवि ने युद्ध सामग्री में अनेक शस्त्रास्त्र एवं घातों के नाम बताये हैं ।

फिर डबरी सँय नाही फरस्सी कड चौल कट्टार बस्सो न कस्सी ।
टकारी न भारी न अडारटाकी, पापण न बाण न कमाण वाकी ॥
नफेरी न भेरी न निस्साण-नहा, रिणतूर बाज न गाज रवदा ।

अत उपयुक्त ध्वनि के व्यापार पर यह तो निस्तकोच कहा जा सकता है कि कवि को युद्ध एवं युद्धोचित सामग्री का ज्ञान था । इसके साथ साथ यह कहने में भी सकोच अनुभव नहीं करना चाहिए कि कवि को आत्मा कृष्ण कालिय द्वंद्व युद्ध चित्रण में अधिक नहीं रमी है । इसका मूल कारण समयत कवि का भक्त होना है । भक्त कवि इस युद्ध में एक क्षण के लिए भी अपने धाराध्यवध को बचट में बँधना नहीं चाहता । इसीलिए कालिय के प्रहार कृष्ण को फूल छोटी की तरह मालूम हो रहे हैं ।

साया भूला प्रधानत भक्त कवि हैं । यद्यपि इन्होंने प्रथम से ही उस्ताहपूण धाताकरण में बालकृष्ण के शीघ्र एवं पराक्रमपूण कार्यों का चित्रण किया है किन्तु भी समग्र प्रथम का सम्बन्ध अवलोकन करने के बाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शीघ्र गान गायक कवि भक्त हृदय पर विजय नहीं पा सका । भक्त कवि ने इस प्रथम में स्थान स्थान पर बालकृष्ण पर देवत्व का आरोप किया है । प्रथम के प्रारम्भ में ही कृष्ण को प्रभु कहकर संबोधित किया गया है वह दूसरों को जीवन मरण के बयन से मुक्त कराने वाला है । अपनी मार उतारवा जाग्यो एण जुगति' कहकर कवि ने प्रथम के प्रारम्भ में ही कृष्ण को अवतार मान लिया है । कवि सामान्यतः बालक कृष्ण का ध्यान करते हुए पाठक को एक उस्ताही पराक्रमी तथा वाक्-घुनुर बालक का परिचय देता है । यह परिचय दते बँते कवि के अन्तमन में सोयी भक्ति भावना जागृत होती है और अनेक प्रसंगों को सट्टि कर बाल-कृष्ण के ईश्वरत्व की ओर संकेत करता है । कृष्ण के बाल रूप पर मुग्ध होकर नागरानियों ने सहानुभूतिवश कालिय से बचाने के लिए जय कृष्ण को अपने महलों में छिपाने के लिए कहा तो

स्वयं श्रीकृष्ण ने निम्नांकित पक्षियों में अपने आपको विराट् बताया है ।

रहा तो धरं दाव दूज रहावू , मोरो घाट वैराट एये न भावू ।

कृष्ण कायिक रूप में तो मयुरा में रहने हैं परन्तु वास्तव में उनका निवास तो नक्तों के हृदय में है—'अमारा भगता तथा एहू ओरा' पक्षियों द्वारा गीता के इस प्रसिद्ध कथन की याद दिलाई है— 'नाऽह वसादिर्वकुंठे नक्त हृदये यसाभ्यहम् ।' इसी प्रकार नागरानो सवाद, नागरानियों द्वारा कृष्ण पूजा, नारद द्वारा स्तुति गान आदि अनेक ऐसे प्रसङ्ग कृष्ण के देवत्व की ओर संकेत करते हैं । सारा का सारा घम कवि की भक्ति-भावना से भरा पडा है ।

प्रकृति चित्रण का काव्य में बडा महत्वपूर्ण स्थान है । कविगण हमेशा से ही प्रकृति की गोद में बैठकर उससे प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं । प्रातः, संध्या, सूर्य, चंद्र, नदी, जगल, पर्वत आदि अनेक प्राकृतिक अवकरणों के साथ अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर उनके विभिन्न स्वरूपों की प्रवतारणा काव्यात्मकता के बढन में सहायक होती है । प्रस्तुत रचना नाग-बमण में कवि ने सामने अनेक ऐसे अवसर लाये हैं जहाँ वह प्रकृति चित्रण कर सकता था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ । प्रातः गोचारण को जाने समय ऊया काल एक उगते सूर्य का ग्याल बाल के खेरते क्षमय जगल का तथा यमुना नदी का थोडा बहुत चित्रण हो जाता तो अच्छा था । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के हृदय में प्राकृतिक सुषमा के प्रति कोई आकषण नहीं है । कवि मुद्द सामग्री की परिगणना का अवसर तो नागरानी कृष्ण सवाद की रचनापर प्राप्त कर लेता है, परन्तु प्रकृति चित्रण का सहज स्वाभाविक ढंग से अवसर प्राप्त होते हुए भी काव्य के इस पक्ष की ओर ध्यान नहीं देता ।

भाषा प्रौढ़ता का निश्चय उताका सश्लिष्ट स्वरूप है । थोड़े से शब्दों में भावों को बोधकर रखना भाषा पर पूण अधिकार रखने वाले कवियों का ही काम है । नागदमणकार का भाषा पर पूर्ण अधिकार है । इसी कारण इस काव्य में सवाद सौष्ठव एवं गहव चित्रों की योजना यकी सफलता के साथ बन पडी है । 'असावा दला कहली खन जेही' में माना यगोदा की कृपता एव गिरने का बडा सफल चित्रण है । 'लियां सङ्गुबी कथ ऊना हुलास' की गहवावमी पढ़ने से आँसुओं के सामने चलने की आतुष्ट लिसाबियों का चित्र तो लिखना ही है, परन्तु हुलास गहव का प्रयोग उनकी मन विषति का भी परिघायक है । सूत्रम की स्पूल रूप बना आधुनिक युग के छायावादी कवियों की एक विशेषता रही है, परन्तु १७वीं गताब्दी

में 'गदमग'कार न इसका कितनी कुशलता के साथ प्रयोग किया है, वह द्रष्टव्य है—'घणो भोम खाली चड़ी बात घोड' में बात की प्रसरण गति का चित्र सा पडा हो जाता है। इसी प्रकार 'पढो दीतबी आज हा बाप पान' में कृष्ण की सुकुमारता तथा कालिध नाग की मयानकता का चित्रण है। 'नारी गाठियो सूठ दूनी न सायो' में मा ध्यव्यक्तक भावों को बड़ी कुशलता के साथ बांधा गया है। 'हरी हो हरी हो हरी धेन हाक' में गौजा को हाकने का दृश्य उपस्थित करने में तो कवि ने जमात दिखाया है। इसके अतिरिक्त सवा रचना में भी कवि की बड़ी सफलता मिली है। नीचे की पक्तियों में नागरानी और कृष्ण के बीच प्रश्नोत्तर की स्त्री दखिए—

कठा हूँत भायी अठ काज केहा, ग्रहा भूलियो वापरो साप मेहा ।

कृष्ण उत्तर देते हैं—

भली नागणी नाकियो राह खुली, देवो आपरो लाज लीधो दहूली ॥

आने फिर कृष्ण कहते हैं—

खट्टकै मु है नागणी बाउ खारो, प्रभू जागसी मूझ पाछा पधारो ।

नागिन फिर कृष्ण को समझाती है—

काळी नाग सु लीजिए बेगि कानी, पढ्यो तात सोक्षै चढे मात पानी ।

इस प्रकार छंद स० ३० से लेकर छंद स० ९३ तक में सवावों की छटा भरी पढी है। एक ही पद में प्रश्न उत्तर, प्रत्युत्तर का समा-सा व्यव जाता है। यह सब भाषा पर अमित अधिकार होने से ही सम्भव हो सकता है।

चित्रोपमता भी इस काव्य की अपनी विशेषता है। इस काव्य का प्रारम्भ भी सगलाचरण के पञ्चात शब्दविध से ही होता है। नीचे की पक्तियों में माता यज्ञोदा द्वारा कृष्ण को जगाने, दधिपपन करने, तथा मक्षान मांगने जैसी अनेक क्रियाओं का चित्रण देखने योग्य है।

विहाणू त्वी राव जागो वह्ला, ह्यो दोह्वा धेनु गोवाळ हेला ।
जगाळ जसोदा यदुगाथ जागे, मही माट धूम, नवनीन मागे ॥

धरने घर से प्रात काल गीर्षों को निकालकर खोपान में सामा और उगने परावर लाने के लिए ग्वाल के छीप दना प्राय्य जीवन की दृष्टि प्रकिया है। कवि ने इसका बहुत ही सजीव एवं मनोरम चित्र खींचा है।

हरी हो हरी हो हरी धेन हावै, झरता चढी नदकुमार झाकै ।
अहिराणिया अद्वला भूल आवै, भगवान न धेन गाप्या भळावै ॥

इकी-वेवटी चौवटै आय ऊभी, सभाली लियो द्याम मोरी मुर भी ।
हुई नद री घेन मू घेन हेडा, भिळ वाळवा जाणि शो गग मेळा ॥

नाग दमण डिगल भाषा की रचना है । इटली के सुप्रसिद्ध भाषा
वैज्ञानिक राजस्थानी भाषा के अनन्य प्रेमी डॉ० तत्तितोरी ने इस भाषा को
अनियमित, गवारू तथा साहित्यशास्त्र का अनुसरण करने वाली भाषा
कहा था । नाग दमण में डिगल के इस स्वरूप को अपने से उपयुक्त सभी
भारतियों का निवारण होता है । विद्वान सम्पादक ने इस पुस्तक के प्रथम
खण्ड में इस भाषा का व्याकरण भी दिया है । प्रस्तुत रचना में डिगल
भाषा का स्वरूप बहुत ही प्रौढ़, नियमित, शिष्ट एवं व्याकरण शास्त्र-
सम्मत है ।

भुजग प्रयात छंद का प्रयोग संस्कृत काव्य में बड़ी प्रचुरता के
साथ मिलता है । हिन्दी कविता ने इस छंद को यहीं से प्राप्त किया है ।
डिगल भाषा के कवियों ने संस्कृत के सभी वण युक्तों को अपनाया है फिर
भी उनका सर्वाधिक झुकाव भुजगप्रयात की ओर ही रहा है । इसका
कारण इस छंद का गति शक्ति है । साया जो ने इस छंद का प्रयोग
अपने इस पद्य में प्रारम्भ से लेकर अंत तक बड़ी कुशलता के साथ किया है ।

डिगल के प्रसिद्ध अलंकार वयणसगाई का निर्वाह करना कोई सरल
काम नहीं है । यह तो सिद्धहस्त कवियों से ही सम्भव हो सकता है ।
क्योंकि इसमें भाषा, छंद, अलंकार तीनों पर समान रूप से अधिकार होना
चाहिए । नागदमण में इसका सुंदर निर्वाह हुआ है । उदाहरणार्थ
निम्नलिखित पद को देखिए—

मडचौ दूगरो खेल खेलत माथ हिव ऊनरी वात गोवाळ हाथ ।
करै तीन लडो नमतेय काना, जावै घेन धडीक काठ जमूना ।

उपयुक्त छंद के प्रत्येक घरण में प्रथम गन्द तथा अंतिम गन्द
का प्रारम्भ एक ही वण से होता है । इस वण-मन्त्री को ही डिगल कवि
वयण सगाई कहते हैं । देखने से यह अनुप्रास का ही एक भेद मालूम होता
है । इसके अतिरिक्त उपमा उपमेया, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग
भी बड़े सुंदर ढंग से किया है ।

सारांशतः नागदमण गौ-सरक्षण का सत्य वाहन, भाषा सारल्य,
संगलित भाषा शैली, चित्रोपमता मधुर संगीतात्मक छटा एवं भाव-
सौंदर्य से विभूषित डिगल भाषा का भक्ति भावना से पूरित एक सरल
पद्यादा काव्य है ।

हिन्दी भाषा में साहित्य सज्जन का प्रारम्भ स० ७०० से शुरू हो

गया था । इस १३०० वर्ष की लम्बी अवधि में भाषा स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं । डिगल और पिगल ये दोनों हिन्दी भाषा के आदि स्वरूप ही हैं । इस दीर्घकाल में नाय बमण जैसे अनेक प्रौढ़ काव्य लिखे गए होंगे । उनमें से उचित ध्यान न दिए जाने के कारण अनेक रचनायें व्यतीत के गभ में दबी पड़ी हैं । इन प्रयों को खोजकर साहित्य सत्कार के सामने लाना साहित्यबेवता तथा माँ सरस्वती की सर्वोत्तम पूजा है । सग भग साडे तीन सौ साल पुरानी साया जो कृत 'भाग बमण' जसी प्रौढ़ एव सरस रचना को सटीक सम्पादन के साथ साहित्यानुरागियों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास स्तुत्य एव अनुकरणीय है । इस सु प्रयास के लिए विद्वान सम्पादक श्री मूलचन्द जी 'प्राणेश' एव ना० वि० म घोष प्रतिष्ठान बधाई के पात्र हैं ।

प्रिसिपल

राजस्थान बाल भारती,
वीकानेर

रामेश्वर प्रसाद पाडिया

एम० ए०, बी० एड०

भूला सांपाजी
वृत्त
नागदुमण

आलोचनात्मक अध्ययन

झूला सांयाजी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजस्थानी कृष्ण भक्ति साहित्य में झूला सांयाजी का विनिष्ट स्थान है। ये सफल कवि होने के साथ साथ भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त भी थे। इसी कारण से इनकी कृतियों में आत्म प्रचार भावना का स्वभाव अभाव पाया जाता है। अतः साक्ष्य के आधार पर केवल स्वयं के नाम^१ तथा स्वयं के गुरुव्यय श्री गोविन्ददासजी के नाम^२ के अतिरिक्त जीवन संबंधी कुछ भी सामग्री नहीं मिलती। यह साम्प्रदायिक सन्धि-प्रति ऐतिहासिक प्रथा से अथवा प्रचलित अनुश्रुतियों में कुछ सामग्री उपलब्ध होती है, उसी के आधार पर निम्नांकित पंक्तियों में भक्त कवि की जीवन शक्ती प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

जन्म और वंश-परिचय ———

भक्तवर झूला सांयाजी का जन्म चारण कुल की झूला नामक गाँव के अंतर्गत वि० सं० १६३२ भाद्रपद कृष्ण ९मी के दिन लीलछा नामक ग्राम में हुआ।^३ इनके पिता का नाम झूला स्वामीदासजी था। स्वामीदासजी लीलछा नामक ग्राम के जागीरदार थे। यह ग्राम गुजरेश्वर सोलकी राजा सिद्धराज जयसिंहजी की ओर से इनके पूर्वजों को मिला था।^४

^१(अ) समवाद कालीतला पह मारो

चवै दामदासानु सांयो चिनारी।—न गदमणु छ० १२१

(आ) सरण लीयो जिही निमोछ सो दूठ करी,

सादर राखियो त्याग ब्रज सुन्दरी।—रुक्मिणी हरण छ० २०३

^२गोविन्ददासजी आसौ जन्म गायो।—नागमणु छ० १०१

^३लीलछा नामक ग्राम गुजरात प्रांत के प्रसिद्ध नगर ईडर से १२ मील पूर्व की ओर इन्द्राणी नामक नदी के तट पर स्थित है।

^४श्री हमीरदान —नागमणु (सांयाजी की जीवनी) पृ० १

वात्सराज एव भक्ति महारज

सांवात्री वात्सराज त ही होगहार प्रतीत होने थे। इनका पिता राज से इसी कारण से वे भी निरप्य प्रति भुवनेश्वर महादेव का वनामाय जाते थे और प्रगवान मोनेनाय की पुता अर्था विद्या करने थे। अनुभव नि है कि—मवनाय महादेव ने इसकी धडा एव प्रति म इति होकर योगी का रूप में सांवात्री को दान दिया था।

विद्याध्ययन—प्रभिरचि तथा गुरु

पिता की मृत्यु का उपरान्त सांवात्री ने ईडर जाकर विद्याध्ययन करने का सङ्कल्प किया। एक दिन जब व ईडर की ओर जा रहे थे तब सीमाय से इसकी भेंट गुलेमान नामक मुगलमान जमादार ने हो गई। वह सांवात्री के ध्यतिष्ठत से बहुत हा प्रभावित हुआ तथा अपने साथ इन्हें ईडर ले गया और एक ब्राह्मण का घर इनका लाने गीने एव रहने का प्रबंध कर दिया।

महात्मा हरिदासजी के निरप्य महारमा गोविन्ददासजी इन दिनों ईडर म निवास करते थे। इसकी स्थिति से प्रभावित होकर सांवात्री ने गोविन्ददासजी का निरप्य पठन करने का निरप्य किया। एक दिन अवसर देतकर इन्होंने म० गोविन्ददासजी का समय अपना विचार प्रगट किया। इन्होंने सांवात्री की जराट अमिताया की देगकर पलाय विधि ने शोभा प्रदान की एव नियमित रूप से गारत्रीय पथों का साथ-साथ श्री महागणेशादि पुराणों का अग्याम करवाने लगे।

राज्याश्रय एव राज्यसम्मान

इन दिनों ईडर पर राठौर राय बीरमदेवजी (१६३५-१६५३ वि०) का शासन था। राय बीरमदेवजी प्रारंभ पूर्णिया की रात्रि में स्वय से सम्पत्तित बीति काथ्य गुनाने जाने को लाग्यताय दिया करते थे। एक समय आलोजी नामक कारण ईडर आये हुए थे। राय बीरमदेवजी ने तदा की मांति लास्यताय की तपारी करण आलोजी को मुलवाया। आलोजी तथा राय बीरमदेवजी के परस्पर तकरार हो जाने के कारण आलोजी की लात

^१ ईडर राजपना इतिहास पृ० १६८

^२ राजम्यान में शासकों की आर से करि तथा याचकों की लास्यताय, करीफ पसाव थीर अरबदनाय का रूप में समय टननी ही सम्पति भेंट करने का प्रचला था, परन्तु बाद में इन पमात्रों का पट अभी बधाई परिपाटी के अनुसार मरण (दुर्नि) कर दिया जाता था।

पसाव नहीं दिया जा सका। राव वीरमदेवजी ने तत्काल किसी अन्य कवि को खाने का आदेश दिया। जमादार मुलेमान उचित अवसर पर सायाजी को बुला लाया। सायाजी की विलम्ब प्रतिक्रिया देखकर राव वीरमदेवजी आश्चर्यचकित हुए तथा उक्त सायपसाव के साथ साथ रेहडा नामक ग्राम देखकर विशेष सम्मानित किया। साथ ही ईडर में इनका तम्बू बंधवा कर राग्याश्रय भी प्रदान किया। राव वीरमदेवजी इन्हें समय समय पर धीरे भी अनेक प्रकार के दान देकर सम्भारते सम्मानित रहते थे जिनमें चवालीरा हजार के मूल्य का झालाहर नामक घोड़ा तथा रायपुर से लौटते समय एक हाथी और सातपसाव का दिया जाना अधिक प्रसिद्ध है।¹

राव वीरमदेवजी की मृत्यु के उपरान्त इनके लघु भ्राता राव कल्याणमलजी ईडर के शासक बने। य भी राव वीरमदेवजी की तरह भक्तवर सायाजी को अपार धृष्टा की दृष्टि से देखते थे। एक बार राव कल्याणमलजी स्वयं छोटी सवारी से लीलछा पधारे थे।² इन्होंने भी राव वीरमदेवजी की तरह वि० स० १६६१ में मूला सायाजी को सातपसाव तथा बुवावा नामक ग्राम शासन में देकर विशेष सम्मानित किया था।

भक्तवर मूला सायाजी का भी राव कल्याणमलजी के प्रति अपार स्नेह था। उनके द्रव्यवास के समय रावजी की लिखे गये गीतात्मक पत्र के द्वारा ऐसा स्पष्ट ध्वनित होता है। यथा —

गीत सायाजी भूला रो कह्योडो

॥ प्रथम दूहो ॥

मन धारे मछवाह, एचै आवाय नहीं।

आडा ईडरियाह, काकट घणा किल्याणमल ॥१॥

॥ गीत ॥

आख सूर हो सदेश अमीणो,

ब्रज आया किम बळिये ।

माम तिया सेहर सामळिया,

मळै तो मथुरा मळिये ॥१॥

¹ कावमें कृत रासमाला का गुजराती अनुबाध पृ० ६६४

² राग्याश्रय के शासन जन किसी व्यक्ति का विशेष रूप से सम्मानित करके दरबार में बुलाते थे तब वे स्वयं सम्मानित व्यक्ति से छोटी सवारी (वाहन) पर बैठ कर उसके पीछे पीछे चलने थे जिसे छोटी सवारी कहा जाता था।

बान्ह तहो अठ गाई अणगम,
 दकन्ह तहो गाई दरिया ।
 मोन ख मर राय मान्ह,
 एवाण ईडगिया ॥२॥

रसग गमाभम (सरस अठ रस)
 प्रथयी अण पयाणा ।
 धर भेटवा तणी गावरभर,
 कहजा पर विन्याणा ॥३॥

शोध प्रतिष्ठाप—रघुट साहित्य सघट्ट पृ० १५३

इस गीतात्मक पत्र के प्राप्त होने का राय बख्शानामन्त्री ने अविश्वस्य
 ईडर से मथुरा की ओर प्रस्थान कर दिया था, परन्तु मथुरा पहुँचते ही पुनः ही
 साँयाजी के गोखोजगमन की बुद्धि सूचना इन्हें मिल जाने के कारण वे भाग
 न जाकर ईडर लौट आए ।^१ यह घटना वि० स० १७०३ के भावना मुरा २ के
 प्राप्त कास में घटित हुई जाती है ।^२

रासमाला में उक्त घटना का बाणी स एक पड़ाव की दूरी पर घण्टित
 होता बताया गया है^३ जिसका आधार सम्भवतः गीतात्मक पत्र के द्वितीय
 द्वाले का अंगुष्ठ पाठ रहा है । जिसमें— 'गण-सनातन करण गाडीगुर, आर्य जो
 ईडरिया' पाठ से गंगा का बाणी में होना सम्भावित मानकर उक्त घटना का
 बाणी के निश्चय होता मान लिया गया है । परन्तु मा० वि० म० शोध
 प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चित हस्तलिखित सामग्री के अन्तर्गत जो गीतात्मक पत्र
 प्राप्त हुआ है उसमें उक्त पाठ नहीं है तथा होना भी नहीं चाहिए । क्योंकि
 डिगल के छोटे साधोर गीत की यह एक विशेषता रही है कि—प्रथम
 द्वाले में घण्टित भाव को ही अग्रिम द्वालों में गद्य भेद से परिपुष्ट किया जाता
 है । प्रतिष्ठाप के सञ्चलन द्वारा प्राप्त गीत में यह विशेषता उपलब्ध है अतः
 इसका पाठ अधिक विन्यास करने योग्य है । इस गीतात्मक पत्र में कवि
 साँयाजी ने राय ^{बैरमद्वेजी} को मथुरा ही बुलवाया है । क्योंकि ब्रजवासी
 करने के उपरांत किस प्रकार अय स्थान को जाना जाय ? इसलिए
 गोवधनधारी की घर पर भेंटन के लिए ही माल राय से प्रायना की गई है ।

^१ श्री हमीरदान — नान्दमण (साँयाजी की जीवनी) पृ० ४६

^२ श्री मोतीलाल मनारिया — राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७५-१७६

^३ काशी के रासमाला (गुजराती अनुवाद) पृ० ६७७

अतः काशी के पास उक्त घटना के घटित होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

जनमानस पर सायाजी का प्रभाव

मत्त कवि भूला सायाजी सबगृहस्य होते हुए भी अपने जीवन काल में चमत्कारी सत्त माने जाते थे । इनके द्वारा गाय पर भपटते हुए घाय को श्रापित करके गधा बना देना, ईंटर के सरोवर पर स्नान करते समय एक मगर को अजुलिदान द्वारा यज्ञ का स्वरूप प्रदान कर देना, द्वारिका स्थित रणछोड जी के वस्त्रों में लगी हुई अग्नि को ईंटर के दरबार में बड़े बड़े बुझा देना इत्यादि चमत्कारपूर्ण अनुभूतियाँ उनकी लोकप्रियता के प्रबल प्रमाण हैं । इतना ही नहीं एक डिगस कवि तो भूला सायाजी को भगवान से भी बड़ कर मानता है तथा उनकी पूजा-अर्चा में ही अपना कल्याण मानता है । यथा —

गीत साया भूलारो

पावन मन तिसो भगता पण,
वेहूडो सकव थये उदार ।
साइयो एकण वार साभळ,
हर साभळ वार हजार ॥१॥

मामा मोहन लागो जे मन,
गढवी तूझ लगी हर ग्यान ।
लीबा भायावत चै (?) लाधै,
सहस नाम फळ एक समान ॥२॥

भूला राव इसो नित झीलै,
किसन गगजळ समोकरि ।
वर दीघो एहवो लिखमीवर,
भगत सहवै साख भरि ॥३॥

तू गोकळ घर रहे निरन्तर,
रिदै तूझ चरण हू रीत ।
गायस तू गढवी त्रभुवण गुण,
गायस हू थारा गुण गीत ॥४॥

गोध प्रतिष्ठान—स्फुट साहित्य सग्रह पृ० ११२

भूला सायाजी की रचनाएँ

भूला सायाजी की दो धार स्फुट पद्य रचनाओं के अतिरिक्त केवल

दो काव्य ग्रंथ उपलब्ध हैं—नागदमण और रुक्मिणीहरण । उक्त दोनों काव्य भगवान कृष्ण की पावन लीला से संबंधित हैं । भाव भाषा और गली-गत समी विनोयताआ व रहने हुए भी रचनाकाल के उल्लेख का अभाव लक्ष्यता है । पालणपुर निवासी राय कवि तलपोरात्मज हमीरदानजी ने स्वसम्पादित नागदमण में रुक्मिणीहरण और नागदमण का रचनाकाल राव वीरमदेव जो व देहावसान क उपरांत राव कल्याणमल जी के द्वारा प्रदत्त साक्ष्यपत्राव से पूर्व माना है ।¹ राव वीरमदेव जी का देहावसान विक्रमी सवत १६५३ में हुआ था और राव कल्याणमल जी द्वारा सायाजी की वि०स० १६६१ म साक्ष्य पत्राव दिए जाने की मायता है ।² इस मायता के आधार पर [१६५३ स १६६१ वि० तक] घाट वय का कवनकाल टहरता है । रुक्मिणीहरण की भाषा गली की देखते हुए तो उक्त काल की ठीक कहा जा सकता है, पर नागदमण की गलीगत प्रीयता देखत हुए, उचित प्रतीत नहीं होता । कारण कि—उक्त कवनकाल क समय मूला सायाजी की आयु [ज०म १६३२ वि०] केवल २१ वय की थी । इतनी अल्प वय में नागदमण जसी प्रीय रचना का रचा जाना संदेहास्पद है तथा आगे के जीवनकाल [म०पु १७०३ वि०] में हाय पर हाय घरे बटे रहना कम आश्चर्यजनक नहा है । नागदमण का सजनकाल रुक्मिणीहरण क साय मानने क पीछे उमको अकबर के दरबार में प्रस्तुत करने की प्रकृष्टि रही हो तो भी कीइ अस्पृक्ति न होगी । प्राचीन शास्त्रकार परीक्षा³ के अनुसृत मध्य युग क कवियों में यह भावना पाई जाती है कि—वे भी अपनी रचनाओं की तत्कालीन शासक के सम्मुख प्रस्तुत करके उम पर सम्मति प्राप्त करें ।

साहित्य जगत में प्रचलित यह प्रवाद—यह [रुक्मिणीहरण] और वेलि दोनों ग्रंथ एक साय बादशाह अकबर को निरोधनाय भेजे गये । बादशाह ने पहले वलि को सुन कर हरण को सुना । घत में हरण की रचना की ध्येष्ठतर निर्णय करके "लेय और ध्यय में पृथ्वीराज से कहा—“पृथ्वीराज तुम्हारी वेलि को धारण यावा की हरिनिधा चर गई ।”⁴ भी परीक्षणोप है ।

¹ श्री हमीरदान—नागदमण [सायाजी की जीवनी] पृ० २५

² श्री माहेरवरी—राज्यानी भाषा और साहित्य पृ० १७७

³ भूयते च पाणिनि पुत्रे शास्त्रकार परीक्षा । अत्रापवर्ष वषाविह पाणिनि सिंगडा-विह याडि बरुचि पतंत्रली इह परीक्षिनाख्यातिमु जग्मु ।

राजशर—कान्य भीमामा

⁴ दा० मानन्दप्रकाश दीक्षित—वलि जिसन रुक्मिणी री भूमिका पृ० ३५

यादगाह अक्षर का जीवनकाल १६.२ वि० तक माना गया है।
 बेलि क रचयिता राठौर पथ्वीराज जी १६५७ वि० में बकुण्ठवासी हुए।
 उक्त प्रवाद में यादगाह अक्षर बेलिकार की उपस्थिति में अपना निणय देते
 हैं। इस से सिद्ध होता है कि—उक्त घटना १६५७ वि० से पूर्व की है। शूला
 सायाजी [जन्म १६३२] की आयु २१-२५ वर्ष और राठौर पथ्वीराज
 [जन्म १६०६] की आयु ५१ वर्ष ठहरती है। यादगाह अक्षर जैसा
 साहित्यमन्त्र एवं व्यवहारकुशल गायन एक प्रतिष्ठित प्रौढ़ साहित्यकार
 एवं अंतरंग मित्र की तुलना में एक नवोदित युवा कवि को बाबा सम्बोधित
 करे, यह कुछ अटपटा सा लगता है, जबकि शूला सायाजी कोई साधु
 सायासी न हो कर एक सबगृहस्थ युवक थे।

शूला सायाजी वृत्त रश्मिणीहरण का काव्यसौष्ठव भी एक
 विवादात्मक प्रश्न है। राजस्थानी साहित्य में ममज्ञ ५० धी मोतीलाल जी
 मेनारिया तथा श्री सीताराम जो लालस नागदमण की तुलना में रश्मिणी
 हरण को एक साधारण श्रेणी का घणनात्मक ग्रन्थ मानते हैं, जिसमें काव्यत्व
 का कहीं पता भी नहीं है।^१ इधर श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया स्वसंपादित
 रश्मिणीहरण की प्रस्तावना में—ग्रन्थ नण्डारो में सायाजी वृत्त रश्मिणी
 हरण की प्रतिपाद्य बहुत कम मिलती हैं अतः आलोचकों की धारणाएँ स्पष्ट
 न हो सकीं—कारण बताते हुए 'कवि की दोना कृतियों में समान रूप से
 सफलता प्राप्त हुई है' मानते हैं।^२ वस्तुतः स्थिति ऐसी नहीं है। रश्मिणी
 हरण कवि के युवाकाल की सत्रप्रथम रचना है तथा नागदमण प्रौढ़काल
 की। अतएव यदि रश्मिणीहरण में नागदमण की सी सजीव गज परिपुष्ट
 गली का अभाव पाया जाता है तो वह उपक्षणीय नहीं, उचित ही है।

नागदमण की सजीव—वित्ताकषय गली में परवर्ती - १५१
 पर्याप्त मात्रा में प्रनाशित किया है। अनेक चारण तथा चारण - ३०७
 कवियों ने प्रपने काव्य ग्रन्थों में नागदमण के छन्दों को छोड़े - २२५
 साथ अपना लिया है। सब से बड़ी लोकप्रियता का उर्व - तो २
 कल्याणदास का नागदमण है।^३ इस प्रयत्न में कवि, शूला सायाजी वृत्त

^१[अ] श्री मोती लाल मेनारिया—२१० भा० और साहित्य पृ० १३३

^२[आ] श्री सीताराम लालस—राजस्थानी-संस्कृत-विज्ञान भाग १ मूल्यांक

^३प्रकाशक—प्राथम्य विद्या प्रतिष्ठान, जाधपुर

^४श्री मानदान नारद, ग्रामनगरी द्वार हरिस क साथ प्रकाशित

नागवमण के विविष्ट कलात्मक गन्द वि यासो को स्वीकार करते हुए उसी छंद और उसी परिमाण का काव्य अपने नाम से प्रचारित करने का लोभ सधरण नहीं कर सका है । उदाहरणाय कतिपय छंदों का अवसोक्तन कीजिए —

सश चद्रिका चद्रिवा सीस तार्क,
जरी को दुपट्टो झलकर झगाफ ।
जडो लालर मूदडी रूप पुजा,
गलै दूल्लडी तिल्लडी हार गु जा ॥४॥

मिलाइये छ० स० २६

हका किलक्का ग्वाल हल्ले वहला,
हुव मात गादावरी गग हला ॥

× × ×

भले नदर धेनवा बाग टोळा,
हले सिधु ज्या नीर लेती हिलाळा ॥१०-११॥

मिलाइये छ० स० ६७

उतसी छटा रूप वसी अधारो,
प्रभू फूटरा स्याम पाछा पधारो ।
अडे अतरी पत हुता अरोडो,
जदूनाय थारे किसो नाग जोडो ॥३२॥

मिलाइये छ० स० ३४-४०

इत्यादि

द्वितीय अध्याय नागदमन का कथा-स्रोत तथा कवि की मौलिक उद्भावना

नागदमन भगवान् श्रीकृष्ण की बाललीला से सम्बन्धित एक चरित्र काव्य है। कालिय दमन का वृत्तान्त—महाभारत (समा ३८), हरिवंश (२१२), ब्रह्म पुराण (१८५), श्री मदभागवत (१० १६) इत्यादि पौराणिक ग्रन्थों में उपलब्ध है। इन सब में श्री मदभागवतमहापुराणोक्त कालिय दमन लीला सुविस्तृत रूप से वर्णित है। यही प्रस्तुत नागदमन का कथा स्रोत है। इसी बहुरूप प्रचलित कथा को मूला सायाजी ने अपनी काव्य प्रतिभा का मनुष्य बन कर मौलिक स्वरूप प्रदान किया है। भगवान् श्रीकृष्ण तथा कालिय नाग इस आख्यान के विशिष्ट पात्र हैं। अपेक्षित विवेचन से पूर्व इन दोनों पर संक्षिप्त प्रकाश डालना अप्राप्तगिक न होगा।

भगवान् श्रीकृष्ण

भारतीय साहित्य में कृष्ण का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कृष्ण के चरित्र का विस्तारक्षेत्र व्यापक है।^१ यद्यपि वेदों में वामुदेव कृष्ण की चर्चा नहीं है, पर ऋग्वेद में सबसे पहले वे ही की पूजा होने लगी थी।^२ ईसा से कम से कम चार सौ वर्ष पहले वामुदेव की पूजा चल पड़ी थी। धीरे धीरे वामुदेव और नारायण को एक ही समझा जाने लगा था।^३ सनातन नारायण के चार अवतारों में एक अवतार कृष्ण भी प्रमुख है।^४

विद्वान् लोग कृष्ण के स्वरूप की प्राचीनता और व्यापकता में सन्देह प्रकट करते हैं। विद्वान् विद्वान् पांडवों के सलाहकार कृष्ण पौराणिक कृष्ण, गीता के उपदेशक कृष्ण को विभिन्न व्यक्ति मानते हैं। भारतीय विचारधारा

^१ श्रीमती पांड— दृग्निर्गुण पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० ७

^२ श्री चारण— अलम्बिया संप्रदाय पृ० ७

^३ श्री द्विवेदी— सूर साहित्य पृ० १

^४ महाभारत— १२ ३२१, ८१०

पाश्चात्य विद्वानों के इस सदेह को महत्त्व नहीं देती। इस विचारधारा के अनुसार कृष्ण के अनेक स्वरूपों का समावेश एक कृष्ण में हुआ है। प्रारम्भिक पुराणों में कृष्ण का अशावतार, उत्तर कालीन पुराणों में सोलह कला से युक्त पूर्णावतार हो गया है। कृष्ण चरित्र के विभिन्न स्वरूपों का सम्भव हो उत्तर काल में उनके पूर्णावतार की जन्म देता है।¹

नागवमण का सम्बन्ध बालकृष्ण या गोपालकृष्ण से है। गोपालकृष्ण सबंधी कथाओं का वर्णन हरिवंश और वायुपुराण में उपलब्ध होता है। भागवत पुराण में कंस वध, पूनना तथा जय राक्षसों का वध भावि कथाओं का विस्तृत वर्णन है। इनमें कंसारि कृष्ण और गोपालकृष्ण को अभिन्न समझा गया है। इन कथों के बनने के समय निश्चय ही गोपालकृष्ण की कथा खूब प्रचारित हो गई होगी। महाभारत के ही समापक (अ०४१) में शिशुपाल के मुह से ऐसी बातें बहलाई गई हैं जिनमें कृष्ण को गोकुल वाली कथा का आभास पाया जाता है।² डा० मण्डारकर का अभिमत इससे भिन्न है। उनके अनुसार कृष्ण आभीर नामक एक घुमक्कड़ जाति के बाल बच्चा हैं। वे (आभीर) ही सम्भवतः बाल देवता की जन्मस्थान और पूजा तथा उनके प्रख्यात पिता का उनके विषय में यह अज्ञान कि वह उनके पिता हैं, और निरपराधों के वध की कथा अपने साथ ले आये।³ यह बालकृष्ण की कथा ईशानसोह की कथा का (ही) भारतीय रूप है।⁴ केनेडी, प्रियसन, वेबर भावि विद्वान भी मण्डारकर के अभिमत से सहमत हैं।

डा० मण्डारकर, केनेडी तथा वेबर का मत समीचीन नहीं प्रतीत होता। बालकृष्ण की भक्ति भारत के लिए विदेशी वस्तु नहीं है। रेघोघरी सुदूर वेदों के अतगत विष्णु के नटखट स्वरूप में बालकृष्ण के बीज की उपस्थिति बतलाते हैं।⁵ कीच ने भी बालकृष्ण की कथा को ईस्वी सन से पूर्व का होना सम्भव बताया है।⁶ आभीर इसी देश की पुरानी जाति हो सकती है उनके अपने बाल बच्चा भी हो सकते हैं। श्री कुमारस्वामी ने कहा है कि—आभीर शब्द द्रविड भाषा का है जिसका अर्थ होता है गो पाल। यह कहा जा सकता है और कहा

¹ श्रीमती पांड—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १२, १३

² श्री द्विवेदी—सूर साहित्य पृ० ४

³ वैष्णवि म रीविन एण्ड माइनर रेलिजम मिस्ट्रेस प० ३६, ३७

⁴ वेदी पृ० ३८, २६

⁵ श्रीमती पांड—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १३

⁶ ज० रा० ए० सो० सन् १६०७

भी गया है कि—आमीरों (अहीर, जाट, और गूजरों) की मुखाकृति, शरीर गठन आदि, द्रविड नहीं बल्कि सीथियन है। केनेडी इन्हें सीथियन मानते भी हैं। पर इससे उक्त अनुमान में कोई बाधा नहीं पड़ती। हो सकता है कि—आमीर नाम की कोई द्रविड जाति जिसका धर्म भक्ति प्रधान हो और देवता बालकृष्ण हों, पहले से ही इस देश में रहती हो, बाद को ये सीथियन जातियां आकर इनका धर्म ग्रहण करके अपने को आमीर कहने लगी हों। आमीर शब्द का द्रविड होना और देवता कृष्ण (काला) होना इस अनुमान का सहायक होना बताया जा सकता है। यह बात ऐतिहासिकों के अहापोह का विषय बनो हुई है कि बाहर से आई हुई कितनी ही जातियां ब्राह्मण धर्म में गिरण न पा सकी थीं।¹

नारद पंचरत्न में बालकृष्ण की महिमा का उत्तम मिलता है। ज्ञाना मृत सार संहिता के अनुसार नारद कृष्ण माहात्म्य सुनने के लिए कलांग पर शिव के पास जाते हैं, वहां उनके महल के सान पाटकों पर—यमुना, कंबु पर श्रीकृष्ण वस्त्र हरण, नान गोपिकाएं आदि लीलाएं चित्रित थीं। इस कथा के अनुसार चित्रित एक स्तम्भ जोधपुर के निकट मण्डोवर ग्राम में पाया गया है।² मण्डारकर के कथनानुसार इस का काल ईस्वी सन की चौथी शताब्दी के पहले नहीं हो सकता।³ फिर भी यह तो मानना ही पड़गा कि चौथी शताब्दी तक कृष्ण की लीलाएं भारत में सूत्र प्रख्यात हो गई थीं।

कालिय नाग

भगवान श्रीकृष्ण के प्रतिद्वंदी कालिय का चित्रण एक भयंकर सप के रूप में हुआ है। कालिय क्रुद्ध होकर अपने सहस्र फनों द्वारा भगवान पर आक्रमण करता है तथा पूछ की लपेट से उन्हें घेर लेता है। भगवान श्रीकृष्ण अपने पराक्रम से नागपान से मुक्त होकर प्रत्याक्रमण स्वरूप उसके फनों पर चढ़ कर उन्हें कुचल दते हैं। वह हजार फनों द्वारा रक्त धमन करने लगता है। नागपत्नियां उसकी मुक्ति के लिए भगवान की स्तुति करती हैं। कालिय के लिए—महाकाल, पन्नग, भुजंग, सप, अहि, महिराव, सणिपट इत्यादि सत्ता ग्य विरोधियों का अग्रद्वार हुआ है।

कुछ विद्वान उक्त कथा का प्रतीकारम्भ अर्थ करते हैं। नाग

¹ श्री द्विवेदी—मूर मा. व. पृ० ६

² आर्कैलाजिरल सर्वे ऑफ म्थिया, वार्षिक विवरण १९०५

³ वैश्वकिण्ठ, जीवि-म पण्ड माइनर री लजम मिश्रम ०० १४ ४२

को काल का प्रतीक माना गया है।¹ गति और स्थिति, शान्ति तथा क्रियात्मक विभु की क्रियाशक्ति के दो प्रधान रूप हैं। गत्यात्मक शक्ति का नाम काल है। यह स्वयं गतिशील रहता है और सृष्टि में किसी को स्थिर नहीं रहने देता। सब को विकास द्वारा, परिणित या परिपक्वतावस्था में पहुँचा कर उन्हें समेट लेता है। इसी क्रिया का यही स्वभाव है। इसलिए सारी सृष्टि विनाग हो कर इसके वग म पड़ी हुई है और इसकी निरपेक्ष क्रिया-शीलता से प्रसन्न रहती है। क्योंकि अपनी जवाघगति में यह छोटे बड़े और अच्छे-धुरे का विचार नहीं करता। इसके चक्कर में या लपेट में सारी सृष्टि पड़ी हुई है।² समस्त शक्तियों का उदगम और आधम परमात्मा है। भगवान् कृष्ण उसी परमात्मा के पूण अवतार माने जाते हैं। अतएव काल सामान्य जीवात्माओं की तरह ही भगवान् कृष्ण को वेष्टित करता है, परन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाता पराजित हो जाता है।

कालिय के प्रतीकात्मक पक्ष के अतिरिक्त व्यावहारिक पक्ष भी उल्लेखनीय है। इस पक्ष के अनुसार कालिय, नागराज है। उसके पत्नियाँ, दास, शसिया तथा प्रजा है। वह एक महल में निवास करता है। इन सब पर ध्यान देने से नाग सृष्टि की ओर दृष्टि जाती है। आर्यों के आगमन से पूर्व भारत में नाग और सुपण इत्यादि आर्यतर जातियों की प्रबलता रही है। नाग जाति में अनेक नैघदिक काल में ब्राह्मण और ऋषि का पद प्राप्त किया था।

नाग काश्यप हैं। नागों की माता का नाम विनता था। कद्रु सभों की जानी है। सप और नाग भाई भाई हैं। काश्यप गर्भ से इनकी शत्रुता रही है। यक्ष और नागों को अमृत—क्षोम का रक्षक कहा गया है।³ पवत म कुबेर के स्वर्ण तथा धन की रक्षा करने में नाग भी नियत था।⁴ गण, जड़ी नागों को रावण ने जीता था। नाग सु दरिया को बंदी बना लिया था। नागाह्वय नगर में धम चक्र का प्रवर्तन हुआ था। परवर्तीकाल में नागाह्वय

¹ निग पुरुष इत्युक्ती शक्तिरनु प्रकृति स्मृता।

नाग काल समाख्यात सम्बन्ध स्तु तयो द्वयो ॥

—प्राधानिक रहस्य की टीका में अुक्तेश्वरी सहिता से उद्धृत

² भारतीय प्रतीक विद्या पृ० १७

³ यक्ष ० पृ० ३१

⁴ शिव माययालाजी पृ० २७

हस्तिनापुर को करते थे ।¹

भोगवती नागों की राजधानी थी । वहाँ का राजा नेप था ।² कुदओं का प्रारम्भ क्या नाग जाति से जोड़ा जा सकता है ? क्रिवि=क्रिमि, और यह नाग का नाम है । पचाल सम्भवतः पाच नाग जातियाँ हैं । घतराष्ट्र, ऐरायत, घनजय, वदिक नाग हैं । नाग विवाद करता है । वामुकि उत्तर देता है । मूह्य नाग ये हैं—ककौटक [सप], वामुकि [भुजग], कच्छप, कुड, तसक [महोरग] । एक भोगवती सर्पों का देवी ब्रामुरी सम्बन्ध है ।³

नाग लोग प्रधानतः शिव के उपासक थे और सुपण लोग विष्णु के । गरुड विष्णु के वाहन हैं और नाग शिव के भूषण ।⁴ कहीं कहीं नागों की वरुणोपासक बताया है । आय भी इन्हें नीच नहीं समझते थे । राजतरंगिणी के अनुसार नागकन्या चन्द्रलेखा का विवाह एक ब्राह्मण से हुआ था । ऐसे विवाह उन दिनों सभी तरह से बन्ध समझे जाते थे । पांडव अजु न का विवाह नागकन्या उलूषी से हुआ था ।⁵ सोमश्रवा नागकन्या गन्धसम्भूत महातपस्वी हुए हैं, इन्होंने जनमेजय के यज्ञ में पौरहित्य किया था ।⁶ जरत्कारु महातपा, उष्वरेता तपस्वी थे । नि सतान होने के कारण इनके पूवज अधोगति में जा रहे थे । जरत्कारु की प्रायना पर नागराज वामुकि ने अपनी बहिन का सम्बन्ध इनके साथ कर दिया ।⁷ इससे उत्पन्न सतान ने जरत्कारु के पितृपितामहों का अधोगति से उद्धार किया था । जनमेजय को नाग यज्ञ से विरत कराने वाला तपस्वी आस्तिक का मातकुल नाग था ।⁸ इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि—नाग यहा जतुवाचक शब्द नहीं है ।

कालिय नाग गरुड के नय से रमणीक द्वीप छोड़ कर (काली) बह म आकर बसा था ।⁹ गरुडनागों के प्रबल गयु थे, यह पहले बताया जा चुका है । खूब समझ है इन दोनों (नाग और सुपण) जातियों के लक्षण

¹वही पृ० ८१

²वही पृ० ३२

³श्री रामाय रामन् —प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास पृ० ८८

⁴श्रीतेन —संस्कृति संग्रह पृ० २६

⁵महामात —समापर्व

⁶ " आदिपर्व पौष्य १७ अ०

⁷ " आदि० ४६ अ०

⁸ " आदि० ५६ अ०

⁹श्रीमद्भागवत-१० अ० १६ उलो० ६०

(टोटेम) य दोनों (सप और पत्नी) जंतु थे ।¹ मडोपर से प्राप्त गुप्तकालीन स्तूप के अक्षर से भी यही प्रमाणित होता है ।²

नागदमण कथा का प्रयोजन

नागदमण के रचयिता तथा श्रीमदभागवतकार या मुख्य चरित्र, भगवान् श्रीकृष्ण की अलौकिक लीलाओं का परिचय देना होने हुए भी, दोनों की कथन शैली भिन्न भिन्न है । नागदमण या कथा सगठन वाच्यारम्भ दृष्टि को ध्यान में रखते हुए किया गया प्रतीत होता है और श्रीमदभागवत का इतिवत्सारम्भ दृष्टि से । यथा —

नागदमण की कथा सक्षिप्ति

माता यशोदाजी के प्रबोधन से सचेत होकर भगवान् श्रीकृष्ण प्रातःकालीन भोजन से निवृत्त होकर गो चारणाय घर से प्रस्थान करते हैं । सबको गोप बालक तथा बछड़े उनके साथ हैं । गोविन्दाएँ अपने अपने घरों पर चढ़ाई कर श्रीकृष्ण की याद दल रही हैं । कई गोविन्दाएँ भगवान् श्रीकृष्ण की ओर आती हैं । वे समस्त गो धन को एकत्रित करके वा की ओर प्रस्थान करते हैं । रास्ता तट पर पहुँचने के उपरान्त गोप बालका के प्रस्ताव से कबुका भीड़ का गौरी जाती है । दोनों पक्षा में अपार गोप बालक हैं । भगवान् श्रीकृष्ण उनमें मध्य खेल रहे हैं । दोनों पक्षा के परस्पर संध से रोँद उठल कर यमुना के गभीर जल में जा गिरती है । भगवान् श्रीकृष्ण गेँद लाने एवं कालिय के दुष्प्रभाव को सदा के लिए समाप्त करने के निमित्त — तस्मान्न कदम्ब की टहनो पकड कर यमुना में कूद जाते हैं । यह वृत्तान्त तीव्र वेग से समस्त विश्व में व्याप्त हो जाता है । माता यशोदाजी ता इस बात कपी आघात से बदली स्तम्भ की तरह गिर पड़ती हैं । समस्त ब्रजमंडल के निवासी गोवाकुल होकर यमुना तट पर पहुँचते हैं । भगवान् श्रीकृष्ण को जहाँ न देखकर सबक संध आसनाद करते हुए विलाप करते हैं । गाय, बल, बछड़े सभी स्तम्भ पड़े हैं । इधर भगवान् श्रीकृष्ण कालिय के दरवार में पहुँचते हैं । कालिय भी रहा है । नागपत्निका भगवान् के बालमुलम सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो जाती हैं । समस्त नागलोकवासी उन्हें देखने के लिए कालिय के दरवार में एकत्रित हो गए हैं । नागपत्निका भगवान् श्रीकृष्ण से परिचय प्राप्तो हुई आश्रय करती हैं—लाला, कहीं माग तो नहीं भूल गए हो, यह साँप का घर है ? आप कालिय के सोते सोते वापस लौट जाइए । भगवान् श्रीकृष्ण प्रत्युत्तर में अपनी गेँद जो नाग

¹ श्री सेन — सस्कृति संग्रह पृ० २८

² देखिए पृ० सख्या १३ पादपिप्पण तथा चित्र

पानियों ने छुपा रखी है देने की माग करते हैं। नागपत्निया पुन कालिय की मयकरता का घणन करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण को कालिय के दुष्स्वरूप स्मरण हो आते हैं। वे कालिय के साथ युद्ध के लिए ब्यज जाते हैं। नागपत्निया बालक के मोनेपन पर आश्रय प्रकट करती हैं। कालिय से बड़ बड़े राजा तक कापत हैं, जिनके पास अवार सेना है। तुम्हारे पास तो गम्नास्त्र के नाम पर केवल एक मुरली है। भगवान श्रीकृष्ण कालिय को भी अपने समान निरस्त बताने हैं। हम दोनों गम्नास्त्रविहीन हैं। नाग और हमारा बाहु युद्ध होगा। हार जीत भगवान के हाथ है। लाल समझाने पर भी जब भगवान श्रीकृष्ण अपने हठ को नहीं छोड़ते हैं तब नागपत्निया प्रसन्न प्रयोग करती हैं। यमुनाजी भगवान के मस्त्व का घणन करती हुई कहती हैं—यह वालर और कोई नहीं, स्वयं भगवान हैं। नागपत्निया भगवान से हार जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण मधुर तथा उच्च स्वर से वेद्युवादन करते हैं। मधुर स्वर समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त हो जाता है। वन निवासिनी की लस चेतना पुन जाग्रत हो जाती है। उच्च स्वर से कालिय की तन्ना भग होती है और वह अपने दरवार में भगवान कृष्ण को देखकर कुफकारता हुआ उन पर आक्रमण करता है। भगवान पर इस का कोई प्रभाव नहीं होता। दोनों बाढा मल्ल युद्ध में प्रयुक्त होकर दह म आ जाते हैं। यमुना का जल उनका सघष से मया जा रहा है। भगवान के सबल हाथ कालिय की घ्रीवा पर पडते हैं। जिन प्रकार गारुडी साप के साथ खेल करता है उसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण कालिय से खेल रहे हैं। कालिय जोर जोर से कुफकार रहा है। भगवान श्रीकृष्ण हाथों और पैरों से निरंतर प्रहार कर रहे हैं। समस्त लोक कपायमान हैं। इस दृश्य को देखने के लिए देवता अपने-अपने विमानों में बठ कर आ गए हैं। भगवान श्रीकृष्ण के प्रहारों से कालिय का गात्र भग हो जाता है। वे उसे एक हाथ में उठा लेते हैं तथा दूसरे हाथ से उसकी बध्नाए तोड़ते हैं। वह अपने सहस्त्र पत्नों से रक्त घमन कर रहा है। मूह से फन गिर रहे हैं। श्वास नासा सपुट में उलभ गया है। इस प्रकार कालिय विवग होकर गिर पडता है। भगवान श्रीकृष्ण तत्काल मूढ कर उसके सिर पर चढ़ जाते हैं तथा नृत्य करने लगते हैं। नागपत्निया अपने पति की बुद्धगा देकर भगवान श्रीकृष्ण से उसे छोड़ देने के लिए विनय करता हैं। भगवान श्रीकृष्ण उसे यथाणीघ्न छोड़ देने का मचन देते हैं। नागपत्निया भगवान की पूजा प्रवा करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण कमल की नाल से कालिय के नकेल डालते हैं तथा उसकी पीठ पर सवार होकर उसे व्रज की गलियों एव नद के आगन में धुमाते हैं। इस प्रकार कालिय का मानमदन करके तथा उसे दह से निकाल कर भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथ जोड़े हुए माता यगीदा जी की ओर ला रहे हैं।

भागवत कथा सक्ति

भगवान् श्रीकृष्ण यत् समझ कर कि—कालिय नाग ने यमुना का जल दूषित कर दिया है, उसके शुद्ध यथ यमुना में बूद पड़े और अतुल बल वाले मत्तज्वराज के समान कालिय दहका जल उछालने लगे। कालिय नाग को अपने नियामस्थान का इस प्रकार से तिरस्कार सहन न हुआ। यह चिढ़ कर भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख आया। भगवान् श्रीकृष्ण को विपाक्त जल में निभय और निडर हो कर क्रीड़ा करते बल कर घह और भी क्रोधित हा गया। उसने भगवान् श्रीकृष्ण के समस्थानों पर साघात करके अपने शरीर के बंधन से जकड़ लिया। भगवान् श्रीकृष्ण नागपान में आवद्ध होकर निश्चेष्ट हो गए। उनकी यह दगा बल कर उनके प्रिय सखा, गाय, बल, बछिया सभी वातर स्वर से विलाप करने लगे। इधर व्रज में भी परधी, जावान और शरीरों में भयकर उत्पात होने लगे। नद बाबा आदि गोपों ने पहले तो इन जपकुन्तों को बखा फिर यह जाना कि—बाज श्रीकृष्ण बिना बलराम के गौण घराने गये हैं तो वे बहुत ध्याकुल हुए तथा अपने प्रिय को डूबते डूबते यमुना तट पर पहुंचे। उन्होंने दूर से ही भगवान् श्रीकृष्ण को कालिय के बंधन में बंध हुए तथा कुण्ड के किनारे बवाल वालों को मूर्छनावस्था में देखा। गौए, बल बछेजास्त स्वर से रांभ रहे थे। इस प्रकार का दृश्य देख कर वे गोप भी मूर्छित हो गए। माता यगोदाजी तथा नद बाबा तो वह में बूदन तक को उद्यत हो गए, पर भगवान् के पराक्रम को जानने वाले बलरामजी के प्रयत्नों से उनके जीवन की रक्षा हुई। मुहूर्त तक मय के बंधन में रहने के उपरांत भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने शरीर की वृद्धि करना प्रारम्भ किया। परिणामस्वरूप माप का शरीर दूटने लगा और उसने अपना पाग छोड़ दिया तथा भगवान् के सम्मुख क्रोधित हो कर फुफकारने लगा। भगवान् श्रीकृष्ण पतरे बाल घटल कर उसके प्रत्येक आक्रमण को विफल कर रहे थे। ऐसा करते करते कालिय का बल क्षीण हो गया तब भगवान् श्रीकृष्ण उछलकर उसके शिर पर सवार हो गये तथा बलापुण नश्य करने लगे। भगवान् श्रीकृष्ण के मक्त गधव, देवता, चारण एक देशगतान बडे प्रेम से बाद्य यत्र बजाय लगे। कालिय नाग के सौ तिर थे। जिस तिर को वह नहीं झकाता था उसे भगवान् अपने पत्र तल प्रहार से कुचल दते। इस प्रकार कालिय की जीवनशक्ति गन गन क्षीण होने लगी। वह नयुनों तथा मुह से लूटा उगठ रहा था। कालिय, मन ही मन भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में गया। अपने पति की दुःशा बलकर नागपत्नियों भी भगवान् की शरण में आई और स्तुति करने लगीं। भगवान् ने बधा करके उस

छिन निन गरीर वाले कालिय को छोड़ दिया। गन शनं कालिय मे चेतना शक्ति का संचार हुआ। उसने बड़ी बीनता से भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति की। भगवान ने उसे गद्यों से अभय करते हुए तत्काल यमुना को छोड़ कर समुद्र मे जाने का आदेश दिया। उनका आदेश प्राप्त करा क पश्चात-कालिय नाग एव उसकी पत्नियों ने दिय वस्त्र, पुष्प माला, मणि, आमूषण, दिव्य गंध, चंदन और उत्तम कमलों की माला से भगवान श्रीकृष्ण का पूजन प्रबन किया। तत्पश्चात सपरिवार भगवान की बदना परिक्रमा करके रमणरु द्वीप की ओर प्रस्थान किया।

नागदमण तथा मे भूला सायाजी की मौलिकता

उपयुक्त दोनों कथा भगवतों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर नागदमण का कथा भगवत अधिक विज्ञानसम्मत एवं मौलिक प्रतीत होता है। भागवत मे भगवान श्रीकृष्ण एक बालक होते हुए भी एक सत्पत्तिमान परमेश्वर के स्वरूप मे चित्रित हुए हैं। नागदमण मे उनके बालस्वरूप का निर्वाह कवि की विवेकता है। यमुना तट पर गोप बालकों की व दुर्ग कीडा सायाजी की मौलिक उदभावना है और सगत भी। वतमात मे भी खाने वट तेल खेनते देने जाते हैं तथा गेव की दुग्म से दुग्म म्यान पर से लाने का धन करते हैं।

भागवत के श्रीकृष्ण यमुना मे कूदने हो जल का विलाडन करके कालिय को क्रोधित होन का अवसर देते ह। नागदमण का कालिय स्वभाव से ही भूर है वह बालक बड क भेद का नहीं समझता है ला जाता है। कालिय दरबार तथा नागपत्नियों क काय कथाप स्वरूप मौलिक प्रसंग जोड का कति ने कथा स्वाह की अक्षुण्ण रखा है। भगवान श्रीकृष्ण के बाल सुलभ माधुय तथा वाणी के द्वारा उत्पन्न एक मनोमुग्धकारी दृश्य पर कवि स्वयं मुग्ध ह "मुग्धो हर येन सु पश्यो सब ही, घडा भागरी नागरी नारी देही" कह कर नागपत्नियों क भाव्य की सराहना करता है। भगवान श्रीकृष्ण का कालिय के साथ मुद्ध करने का हठ भी बालसुलभ वृत्ति का परिचायक है। बालक कथा निर्मोक है। गी महत्ता का प्रसंग नागदमणकार की अपनी रचपना है। भगवान श्रीकृष्ण की जात्र बारी है। अत सरचित सप्तति का रना करना उनका धम है। नति नेति प्रक्रिया से नागपत्नियों द्वारा सत्य पर प्रस्यारर उपन कवि की घोर भावना का परिचायक है। क लिय क साथ नाशाप श्रीकृष्ण का सघष विमो भी घोर वाद्य के सघष वचन मे कम न। है।

नागदमणकार कवि होने क साथ साव भक्त भी हैं। उह अपने इष्टदेव के प्रभाव पर रचमात्र भी अंध बना पसद नहीं है। भागवतकार को महरा भर नागपाग मे जकडे हुए निवेन कृष्ण की चिन्ता नहीं है पर नागदमणकार

इस प्रसंग को अथ ढंग से प्रस्तुत करते हैं। कालिय क्रुद्ध होकर आक्रमण करता है, प्रहार करता है, पर भगवान पर ये पुष्प पशुडियों के प्रहार के समाप्त अक्षर करते हैं। पुष्प सत्काराय हमेंगा चढ़ाते ही हैं।

भागवतकार कालिय के परामय के पश्चात् उसे सीधे यमुना से ही समुद्र में धसे जाने का आदेश भगवान श्रीकृष्ण से दिलवा देते हैं। नागवमणकार इसे पर्याप्त नहीं समझते हैं। वे इसके उपरांत भी भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कमलनाल से कालिय के नखेल डलवाते हैं। नखेल के द्वारा भयकर से भयकर बलगाली जंतु स्वयं हो जाते हैं यह सत्य है। दृष्ट मानवों के भी नखेल डाल कर घुमाना प्रसिद्ध है। स्वयं करके यत्र तत्र घुमाना प्रतिद्वंदी की हीनता का भी द्योतक है।

भयकर कालिय को परास्त करने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण विनय सहित अपने दोनों हाथ जोड़े हुए माता यगोदाजी के सम्मुख उपस्थित होते हैं। इस प्रकार नागवमण की पथा में भगवान श्रीकृष्ण के बालस्वरूप का आदि से अत तक निर्वाह हुआ है। अनुग्रह से उत्थापन भगला, अज्ञार, राजभोग आदि क्षात्रियों का वर्णन कवि का बल्लभकुल सम्प्रदायानुयायी होना प्रमाणित करता है।

तृतीय अध्याय नागदमण की भाषा और व्याकरण

भाषा

नागदमण की भाषा राजस्थान के अतगंत मध्यपूर्वी गताब्दी की प्रचलित साहित्यिक भाषा—डिंगल है।¹ डिंगल गण की व्युत्पत्ति की तरह भाषा के सम्बन्ध में (भी) विद्वानों में अद्यावधि पर्याप्त ध्यान फला हुआ है। अधिकांश विद्वान साधारणतया डिंगल को राजस्थानी का एक रूप मानते हैं। अतएव इस प्रसंग में, राजस्थानी की वास्तविक स्थिति क्या है इस ओर भी सकेत कर देना अनुपयुक्त न होगा।

“राजस्थानी भाषा” शब्द “हिन्दी भाषा” के समान ही भ्रमात्मक है। जिस प्रकार घस्तुत हिन्दी—अनेक विभाषायों का एक सामूहिक नाम है, ठीक वही परिस्थिति राजस्थानी भाषा के साथ है, जो कि हिन्दी की एक विभाषा के रूप में भाष्य है।²

राजस्थानी—राजस्थान प्रांत की भाषा है। राजस्थान केवल आधुनिक राजपूताना-प्रांत तक ही परिमित नहीं है, किन्तु मातवा और हिसार का भी बहुत-सा भाग राजस्थान के ही अंतर्गत समझा जाना चाहिए। राजस्थानी इन समस्त भू-खंड की भाषा है³ जिसमें मारवाड़ी (जिसके अतगंत मेवाड़ी भी), दुडाड़ी (जिसके अतगंत हाडोती भी), मालवी और वागड़ी उपभाषाएँ (बोलियाँ) प्रमुख हैं।

राजस्थानी की समस्त बोलियों में मारवाड़ी प्रमुख है। मुख्यतया लिखित रूप में वर्तमान साहित्य, जो कि एक प्रकार से इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि—मारवाड़ी राजस्थानी की प्रतिमित अथवा परिनिष्ठित (Standard) भाषा है। यह प्रतिमित मारवाड़ी ही घस्तुत डिंगल है जिसे मध्य भाषा राजपूतानी,

¹ श्री मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७६

² डा० जगदीशप्रसाद—डिंगल साहित्य पृ० २६१

³ श्री स्वामी—दोखा मारू रा दूहा पृ० १०७ [प्रस्तावना]

पश्चिमी राजस्थानी आदि नामों से अभिहित किया गया है।¹ इससे एक महत्वपूर्ण बात यह भी सिद्ध होती है कि—प्रारम्भ में डिगल बोल चाल की भाषा थी। बाद में बोल चाल की भाषा और साहित्यिक भाषा में अंतर हो गया और डिगल का प्रयोग साहित्य की भाषा के लिए होने लगा² और डिगल साहित्य राजपूताना के चारणा तथा भाटों द्वारा विशेष ममूद हो उठा।³

श्री मेनारिया जी ने नागभण की चर्चा करते हुए इसकी भाषा पर क्वचित गुजराती का प्रभाव स्वीकार किया है तथा कवि का काठियावाड़ी होना इसका कारण माना है,⁴ परन्तु यह तो निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि—गुजरात तथा मारवाड़ अथवा पश्चिमी राजस्थान की भाषा सोलहवीं शताब्दी ईस्वी तक एक थी⁵ तब इसी अर्थ में जासपास की रचना पर गुजराती के प्रभाव का प्रश्न ही नहीं उठना है। हा, प्रकाशित ग्रंथ में भाषा के गुजरातीकरण की प्रवृत्ति लक्षित होती है,⁶ यह दूसरी बात है।

शब्द-समूह

नागभण की भाषा में सत्सम, तद्भव, देगज और विदेशी चार प्रकार के शब्द उपलब्ध होते हैं जिन में तद्भव और देगज शब्दों का बाहुल्य है।

व्याकरण

किसी भाषा के ज्ञान अथवा दूसरे शब्दों में शुद्ध लिखने, पढ़ने और बोलने के लिए उसके व्याकरण की जानकारी नितांत आवश्यक होती है।⁷ अतएव डिगल भाषा के व्याकरण को ध्यान में रखते हुए नागभण का संपिप्त व्याकरण दिया जा रहा है।

¹(अ) डा० जगदीशप्रसाद—डिगल साहित्य पृ० २६२

(आ) डिगल उपनाम कहुँ मन्वाना हु विषय।

अपम शू जामे अचिक, सग धीर रस म् ॥

—मन्त्रवि सूर्यमल-वशमास्वर प्र मा पृ० १४७

²डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० ६

³डा० चटर्जी—भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएँ पृ० ५१

⁴श्री मनाशिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७६

⁵डा० चटर्जी—राजस्थानी भाषा पृ० ३६

⁶डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७५

⁷डा० जगदीशप्रसाद—डिगल साहित्य पृ० २६२

ध्वनि समूह

१ स्वर—नागदमण में प्रयुक्त अं, ज, ओ, औ के ह्रस्वरूपों को छोड़ कर बाकी स्वर हिन्दी के समान ही हैं। यथा—

अ —मध्य, अध विवृत, ह्रस्व ।

आ —अग्र, विवृत, दीर्घ ।

जा —यह 'आ' का ह्रस्व रूप है। दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'अ' के समान ही होता है—

१ माहो माह आणद दाख मुरक्की ।

छंद ३२

२ आया औद्रक सूरमा ऐणि आर ।

” ४९

३ जाळै ग्रिहव नीला वहे विहल शाळा ।

” ५३

इ —अग्र, सवत, ह्रस्व ।

ई —अग्र, सवत, दीर्घ ।

उ —पश्च अध सवत, ह्रस्व ।

ऊ —पश्च, अध सवत, दीर्घ ।

कहीं-कहीं छंद की सुविधानुसार इसका भी ह्रस्व उच्चारण पाया जाता है—

१ दूर्जे नवर घेन गोलख्व दूणी ।

छंद ७१

२ ऊभी मूरळी आप लीध अधूर ।

, ९४

अं —अग्र, अध विवृत, दीर्घ ।

अँ —अग्र, अध सवृत, ह्रस्व ।

इस ध्वनि के लिए कोई स्वतंत्र लिपि चिह्न नहीं है। दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'इ' के समान होता है—

१ देवो आपरो लाज लीधो दहू लो ।

छंद ३३

२ खेलीजे रमीज पिता मातु सोळा ।

, ३९

३ घेर्यो नद रो घोट अहिकोट अहो ।

, ९९

अ —अग्र-मध्य, अर्ध विवृत, दीर्घ ।

अँ —यह ध्वनि 'अ' का ह्रस्व रूप है। इसका उच्चारण लगभग अ-इ की तरह पाया जाता है।

१ अँर कूण लाज पखी आव ओरी ।

छंद ८१

२ पैसारा उत्तारा लरा पाइकारा ।

” १०२

ओ —पञ्च, अघ-सवृत, दीर्घ ।

ओ —पञ्च, अघ सवृत ह्रस्व ।

इस ध्वनि के लिए भी स्वतंत्र लिपि विह्वल नहीं है । दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग ह्रस्व 'उ' की तरह होता है—

१	बोलावै मळ नाप नाखी भुरक्की ।	छंद ३५
२	मोरे नद बाबो जसोमती माई ।	,, ५८
३	जोवो नबर घेट सत्रवट्ट जागी ।	,, ७५
४	गोपीनाथ रा हाय आया गड्डू ।	,, १००

इत्यादि

ओ —पञ्च मध्य, अघ सवृत, दीर्घ ।

ओ —यह 'ओ' का ह्रस्व रूप है । इस ध्वनि के लिए भी स्वतंत्र लिपि विह्वल नहीं है । दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का लगभग 'अ+उ' उच्चारण होता है—

१	आया औद्रके गुरमा ऐणि आर ।	छंद ४९
२	नौळी वांटेते सामठी छाट नाखी ।	,, ९९

अ —अनुस्वार ।

२ व्यञ्जन—नागदमण में प्रयुक्त व्यञ्ज ळ, द, घ, ङ, ण, य को छोड़ कर गैय हिंदी की तरह ही होते हैं । यथा—

स्पर्श (स्पृष्ट प्रयत्न)

प—कण्ठ्य, अल्पप्राण, अघोष

ख—कण्ठ्य, महाप्राण, अघोष

ग—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष

घ—कण्ठ्य, महाप्राण, सघोष

ङ—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक

च—घर्त्स्य, अल्पप्राण, अघोष

छ—घर्त्स्य, महाप्राण, अघोष

ज—घर्त्स्य, अल्पप्राण, सघोष

झ—घर्त्स्य, महाप्राण, सघोष

ञ—घर्त्स्य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक

ट—मूष्य, अल्पप्राण, अघोष

ठ—मूष्य, महाप्राण, अघोष

- ड—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष
 ढ—मूध-य, महाप्राण, सघोष
 ण—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक
 त—द-त्य, अल्पप्राण, अघोष
 थ—दन्त्य महाप्राण, अघोष
 व—द-त्य, अल्पप्राण, सघोष
 ध—द-त्य, महाप्राण, सघोष
 न—द-त्य, अल्पप्राण, सघोष सानुनासिक
 प—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, अघोष
 फ—ओच्छ्रय, महाप्राण, अघोष
 ब—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, सघोष
 म—ओच्छ्रय, महाप्राण, सघोष
 म—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, सघोष

अत स्थ

- य—वत्स्य, अल्पप्राण, ईपद्विवृत
 र—मूध-य, अल्पप्राण, ईपद्विवृत घणित
 ल—द-त्य, अल्पप्राण, ईपद्विवृत, पान्थिक
 य—द तोष्टय, अल्पप्राण, ईपद्विवृत

ऊष्म

- स—द-त्य, ताल्ध्य, महाप्राण, अघोष
 ह—कण्ठ्य, महाप्राण, सघोष

अ-य

- ड—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष, उत्क्षिप्त
 ढ—दन्त्य, महाप्राण, सघोष, उत्क्षिप्त
 ण—राजस्यानी व । इसका उच्चारण सरट्टत व 'व' से भिन्न होता है ।
 ल—मूध-य, सघोष, [उत्क्षिप्त]

कारक

मागदमण की भाषा म—सजा, सवनाम और क्रिया सूचक शब्दों का प्रयोग हिंदी भाषा के समान ही दो लिंग तथा दो वचन में हुआ है। नपुंसकलिंग के रूप भी उपलब्ध हैं परंतु नपुंसकलिंग एवं पुल्लिंग में विशेष भेद नहीं है। कारकों के लिए विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा कहीं-कहीं

विमलिष्ट प्रणयविहीन साक्षात् न मृत नवा विचारो करो न काम कथाया
 गया है । यथा —

कारक	प्रणय	विवरण	पङ्क्ति	श्लोक
कर्ता	×	परम जगतां तिमि कर्तव्यता ।	१४	२
	×	मुच्यते च यदीह कति अमया ।		१४
	घो	मन्त्रशासन धन गान्ध्या मन्त्र ।		५
	—	कपूरो पशु पात शोका प्रमत्त ।		२
धर्म	×	आयो मात्तो ताग कथा जगत्तो ।		१७
	×	दिया सास्ता मन्त्र कृत् विचारो ।		१
	गु	वाञ्छीतागन्तु आगिषो वाग्द कृत् ।		१०१
	"	अगोरा तोई रागन्तु पुत्र काम ।		११५
	मै	भगवान् धन गोप्यो मन्त्र ।		५
	"	अहिरायन वाच कोई न गुणयो ।		११९
करण	×	गत्त अल्प भोयो मुरीजाह येवा ।		६१
	अ	पद्मे देहिम गेद मंत्राय येरो ।		१०
	"	न बोनी करीये तात्र निहाळी ।		३०
	"	कार्ने हो मयी सांमत्त घो न पहाळी ।		३८
	गु	मवा नेहमू ते गोपी निहाळ ।		४
	"	हुई नवरी धामू धेन हेगा ।		६
	ह	वाञ्छीतागन्तु आत ही कंत वांय ।		५२
	—	अर जागमो माग रणो जनप्र ।		३०
सम्प्रदाय	×	इतो वाञ्छ इतो दया मू हा साध ।		३५
	गु	वाञ्छीतागन्तु जागन्तु तेन कीध ।		६७
	—	अयो देत दोज विप्र येर शोल ।		६२
अपादाय	अ	द्विष उत्तरी वात गोवाञ्छ हाथ ।		१४
	"	गयो जाणि विनामनि रत्त मन्त्र ।		१८
	हृत्	क ठाहुन आयो अठ वात्त केहा ।		३३
	गु	इतो छोरो से मानमू वात आङ्को ।		६८
	"	अहिरारिमू तारी माय अनेरो ।		६६
सम्बन्ध	×	तत्रो कृत्वा वम रयत ताती ।		७४
	"	रही घांतङ्को वेर दाणव्य राणी ।		७२
	घो	अथ नागनी अद्विषा मारचो ही ।		२८
	"	वही कृप रायाची मा गुणवाई ।		६३

चौ	उतारेवा ए भामचौ नार आयो ।	छद	९१
च	मलो हक बलभद्रचै नाम भाई ।	"	५८
रा	काळीनागरा कान समाळ केवा ।	"	१३
र	पहूच प्रभुर लटक प्रहूचो ।	"	२४
रो	अमा नागणीपत्यरो जूझ आछ ।	"	५१
री	घर कसर तातरी टाट घुटी ।	"	७४
तणा	महामद्र जाति तणा कान मोती ।	"	२२
तणी	हुई बुह मन्ला तणी हल हाय ।	"	१२
तण	जमुना तण नाखियो नार जाड ।	"	१२
तणो	तणा कसरी कसतूरी तितवक ।	"	२७
"	अवनी तणा मारि ले कप आयो ।	"	६५
हू	बोटू भ्रकुटी कोरहू देखि दूहे ।	"	२७
ओ	पडोछा नहींछी प्रिया राज पायो ।	"	११६
अधिकरण X	इसो आज ते कोण भूलोक आछ ।	"	५२
"	महाया मथुरा घरा वास मोरा ।	"	५८
अ	मुण्यो रूप वंद मु पेख्यो सवेही ।	"	३२
"	पहूचै प्रभुर लटक प्रहूचो ।	"	२४
अ	हिंडोळ घलाड घर हलरायो ।	"	२९
माहे	पिपूत दुवावहि माहेपरवा ।	"	६५
मां	मणि नग हीरातणी ज्यात माहे ।	"	२४
सबोधन X	जणणीतणी जूण मा ए न आयो ।	"	९१
"	प्रभू आपरा जाणि अन्नत पायो ।	"	९७
"	कहै कोजिय कान्हू भीरु विनाग ।	"	९

सामान्य टिप्पणिया

- १ - स्वर से आरम्भ हाने वाल प्रत्यय का प्रयोग करने पर पूर्व गण क अतिम स्वर का प्राथ लोप कर दिया गया है ।
- २ तणो, माहे आदि प्रत्ययों का प्रयोग गण्ड से पूर्व भी हुआ है ।
- ३ सम्बन्ध कारक के प्रत्ययों में परस्पर गण्ड क लिए लिंग धचन के अनुसार लिंग वचन का परिवर्तन हुआ है ।
- ४ करण व सम्बन्ध कारक का 'आ' प्रत्यय केवल बहुवचन धावी गण्ड के आगे प्रयुक्त हुआ है ।
- ५ बहुवचन में अकारांत शब्द क प्रत्यय लगने के पूर्व अतिम 'अ'

का प्राय 'ता' ही ग्या है ।

- ६ धोकारांत दाह बटुपण म अकारांत हो गये हैं ।
- ७ हिंदी क अकारांत " " [शमा, गण को छोड़ कर] रात्रापात्री में धोकारांत हो गये हैं ।
- ८ ईकारांत व उकारांत दाह क भाग बटुपण में 'मां' वा 'वां' छोड़ कर भिन्न स्वर को ह्रस्व कर दिया गया है ।
- ९ इकारांत व उकारांत " " व बटुपण बनाने समय उनक भाग 'मां' वा 'वां' छोड़ दिया गया है ।
- १० हिंदी और सहज शब्दों के मध्य " " वाले रेफ को स्थानान्तरित करके गहरों को निकल कर दिया गया है । यथा—घम—धम, कम—कम इत्यादि ।
- ११ जिन शब्दों में रेफ नहीं होता है उन्म रेफ का भागम कर दिया गया है ।

सर्वनाम

नागरमण म सत्रनामों का निम्न जिन शब्दों में प्रयोग हुआ है । उनका विवरण इस प्रकार है —

अमां (हमारा रे)	अमां संघ तांका सनी धार भाग ।	७२
	अमां नागनी परयो जू क भाई ।	५१
	दाह्नी सामुग ह सनी निगत भाष ।	८०
	समा देव मोटा गमा मल घोडी ।	११२
अमांरा रो (हमारा)	अगाग मगतां सना एर मोरा ।	५८
	अटो धनी स्याम हूटो अमारो ।	५४
अमांमू (हमारे त)	घाया राग ते गा-बीज अमांमू ।	१११
अम (हमारे)	अम हाय म गागनी तय एती ।	६६
आ (यह उन्मर्षिता है)	दही दूधगा आ गुणदा ।	६३
	धरीण विऊ नीमड़ धा जघावो ।	७८
आप (स्वयं)	ठगेया गयो ठाण आप ठगाण्यो ।	९२
	दियो आपमू आप भाळीज बाहे ।	१०१
	सबाण घमा आप आप अरुध्व ।	११८
	प्रनू आपरा जगि अरुन पायो ।	९७
	दयो आपरी लाज लीधो दडुलो ।	३३
	दिमू आपरो मोल आप बराध ।	८०
	मुणो गागनी आपणी हह माहो ।	८६

इसा (ऐसे)
इसो (ऐसा)

उवै (उत्तने)
अे (पह)

अेण (इस प्रकार की)
अेनै (इसको)
अेह (पह)

अेहरी (इसकी)
अैरी (इसकी)
अै (ये)
अैरे (इसके)
अैसी (ऐसी)
अौ (पह)

वाही (कोई)
किस (कौन से)
किही (किसी ने)
कू ण (कौन)

केण (कौन से)
कौण (कौन)
जिक (जो)
जिरी (जिसकी)

असव्यार हुवी आप अल्पनाणी ।	छद ११८
रनीज इसा मात आग रदाळा ।	" २७
इसो बाल देखी दया भू झ आव ।	" ३५
इसा छोटे ल मातसू बात आडो ।	" ६८
अधोराज मारा उवै कीध आरा ।	" १०३
जणणी तणी जूणमां ए न आयो ।	" ९१
उतारेवा ए नोमचा मार आयो ।	" ९१
जाग्यो अण जुगति ।	" ४
सली बाल अन त्रिभुवन सूत्र ।	" ८८
लला तू नहीं एह कू दत सूणी ।	" ७१
लम एह भूषया पछ छाट लाग ।	" ७३
अहीराव न डावडो एह भाडा ।	" ८४
विठ त्रिज्वरो एह उच्छाह बाळी ।	, १२१
अठ एहरी गम्म एहां अदेसा ।	, ८७
अैरी जोजोन दली चलन हेरी ।	" ८६
चवोज नहा बोल अ बाळ चाळा ।	" ३०
अैर कू ण लाज पखी आव ओरो ।	, ८१
असी मागणी कू ण जे कूप आयो ।	" २९
पड लातरो घन औ नीर नीर पीध ।	" ६७
त्रिलोकी न ब्रासइ वीहा औ न भू झ ।	" ८७
जितो डावडो औ बळी देल जाण्यो ।	, ९२
मारया ही राप घाय सू औ न माग ।	" १०८
कही सू पडो पपडो तीर काही ।	" ६६
लड सो किस भूळ पूछा लडाई ।	, ५०
किही कोर चपी रही मा बकाव ।	, ३५
असी मागणी कू ण जे कूप आयो ।	" २९
चड कू ण बाळी तणी सीम चांप ।	, ५२
बळ भूसरो ताहर कू ण धोरो ।	" ५७
अर कू ण लाज पखी आव ओरो ।	" ८१
सूतो साप जगानीज वेण कोड ।	" ६८
इसो आग ते कौण भूलोक आछं ।	" ५२
निमाव जिा मायता भोग जाणी ।	" २
जिरी कू क आग मर कू क फाला ।	" ५३

जे (जिसारी)	असी भागणी बूण जे बूत आयो ।	छर २९
जेही (जिस)	गसोवा डट्टी बढट्टी राम जेही ।	" १५
जेही (जिसों की)	सांमी रोत महेग जेही न सूक्ष ।	" ११६
तमा (तुम आप)	तमा देय मोटा अमां मत्त घोडी ।	" ११२
	तुमारा रेकारा जिकारा तमासू ।	" ११३
ता (वह)	घई घासळी तिगळी ताववा ता ।	" ७८
ताहरी (तुम्हारी)	तव ताहरी बेय लत्रयट्टू प्रूटी ।	" ६४
तिर (वे)	ग राम तिर नागणी घोल सू बो ।	" ६४
तिसो (वसा)	तिसो नागणी गम्पुरोचन टोको ।	" १२
तुना (तुम्हें)	मज नब तोई तुना पुत्र माय ।	" १५६
	तुन देसापू आज यगा तमाभा ।	" ५
तू (तु)	जुडेया जू तू नाग काळी जगाय ।	" ४०
	पछा पीक्षरा नागणी तू विछाण ।	" ६९
	लला तू गहीं एह बूवत सुणी ।	" ७१
	ग्रहिनारी तू एह नेठाह आण ।	" ७२
	बहू नागणी सुण तू रोप बान ।	" ७६
	मजाण घाळ तू घबूचाळ मापी ।	" ९२
तूय (तुम्हारे)	कटकरां अटकरां नहीं तूझ केड ।	" ४१
	दियो वास दूरतर तिरु तूझ बाडे ।	" १२०
तूही (तूही)	खरो हेर तूही पिया खब रोटा ।	" ११३
ते (वह)	रम्पो र्यांम ते ठाम जोयत रामा ।	" १९
	जुयो नागणी ते हुतो गम्बु जामो ।	" ६५
	ते घवण शुणण अहिराय तणी ।	" १२२
	आया आज ते माफ कीज अमागू ।	" ११३
तेण (उस)	काळीनागनू जगवू तेण कीध ।	" ६७
तेह (उसे)	नवा नेटसू तेह गोपी निहाळ ।	" ४
तोनु (तुम्हें)	पले तेतला आज तोनु पसाय ।	" ८२
तोन (तुम्हें-आपकी)	जुड हव ताने प्रणाप्रत जेहा ।	" ११४
तोसू (तुम्हारे से आपके)	हिव जीडि तोसू घातां घाद हारी ।	" ८१
धारा (तुम्हारा आपके)	राम आज धारा भुज तेव भारा ।	" १०५
धारी (तुम्हारी-आपकी)	जुन वस धारी परस्ते सनेहो ।	" ४०
धारें (तुम्हारे)	काळीनू । मापू तो धार बमावू ।	" ७७
	दिस मोरळी हेर थार दुगुज्जा ।	" ४९

थारो (तुम्हारा)

मूहै (मुझे)
मूय (मेरा)
मूझ (मुझ)
मूय (मेरे)

मो (मेरे)
मोरा (मेरा)
मोर (मेरे)

मारी (मेरा)

राज (आपके)
राजन् (आपकी)
रावळो (आपका)
वा (उसने)
वा (वह)
वेही (वे)
सोई (वे)
हू (मैं)
विनेपण

घत लोहवी लोह रिछया न थारै । छद ४९
वघारया न थारै अज बाळ बाळा । , ३९
नहों नागणी नाग थारो निवार । " ७७
प्रिया तातन गोत्र थारो पिछाण्या । " ६७
खटक्क मुहै नागणी बोल थारो । " ३४
प्रमू जागसी मूझ पाछा पघारो । " ३४
इतो बाळ दधी दया मूझ आय । , ३५
मण्या नागपत्नी जिता मूय नीर । " ५७
मोरे कस मामो रहै मूझ मूळ । , ५९
बह आज ते नागणी मूझ वारो । , ६१
घुया वण जाण रस मूय बाळा । " ७२
जप मो दिती जेम काळी जगाडो । , ६८
मठायी मघुरा घरा वास मोरा । " ५८
मोर नद बागो जमुमति माई । , ५९
मोरै कस मामो रहै मूझ मूळ । " ५६
मोर देख आहीर च गाम माह । " ७३
मोरो घाट घराट एथ न मावू । " ३१
मोरो एह कशालियो द्रोहमाणो । " ५५
मोरो जागसी र्थाम वाय मघूर । " ९४
पढीछा नहों छी प्रिया राज पायो । " ११६
जसोदा सोई राजन् पुत्र जाण । , ११५
वडा रावळो वणिमो देखि बाई । " ९३
रड दाढ काढ कियो वा न रोता । " १०७
बळ वा साइर वरणवू । " १
वडा भागरी नागरी नारी वेही । " ३२
प्रमू अग लागी सोही फूल पाखी । " ९९
इता दीट्चो हू हुतो उप्पवासी । " ६०

नागदमण मे विनेपणों का प्रयोग हिन्दी की तरह ही हुआ है तथा उनके लिये और घचन विनेपणानुवर्तों होने हैं । गुणवाचक विनेपणों मे कुछ द्विगल भाषा क मौलिक विनेपणों का प्रयोग भी हुआ है । सरयावाचक विनेपणों मे योगित सभ्यओं के द्वारा बने प्रयोग त्रिगिष्ट कहे जा सकते हैं ।

घण	घण उच्छ्रय व्याहिर्यं प्रेह शेया ।	८४	६५
घणी	अरुटी घणी सांग झूठी अमारो ।	"	५४
	घणी घातियो सांकड स्याम घेरी ।	"	९८
जाडै	जमूनां तण नांसियो नीर जाडै ।	"	१२
थड	थडै वेहड हह मातो १ पट्टा ।	"	४८
सवी	मिल घोट सांभी सवी दोट माय ।	"	१२
सर्व	सव भामला सामला प्रत्यसदा ।	"	८
	रभवा सर्व साय सू हेक राग ।	"	९
सामट्टी	भाग नागणी भेट सामट्टी भाण ।	"	११७
सारं	हाहावार हक्कार ससार सारं ।	"	१५
सखेप	प्रगाचार नारद सखेप गाई ।	"	९६
सरयावाचक			
हेक	रभवा सव साय सू हेक राग ।	"	९
	मिल आयता ऊलट हेक भेर ।	"	११
	एड आपड हक हेका खपोळा ।	"	१७
	ऊमी पू ट हेको करी जात वारा ।	"	२०
	मिळी नागणी हेक हेकां मिलाव ।	"	२१
	दिस मोरली हेक थार दुभुजा ।	"	४९
	मु ह जोड होती घडी हेक मांहे ।	"	५६
	भली हेक घलमद्र घ नाम भाई ।	"	५८
	जणणी किणीं हेक तू ही ज जायो ।	"	८३
	खरो हेक तू ही बिया खव खोटा ।	"	११३
इकी देवटी	इकी देवटी चौथट आय ऊमो ।	"	६
एकणी	पुणू एकणी वार इक्कोस पाळां ।	"	७२
एको	नहीं सेन सनाधि एको सजाई ।	"	५७
उभै	पचास उभै खट्ट दो पट्टराणी ।	"	९०
	इच्छातो उभ सौ दस वाधि आठ ।	"	९१
	उभै जू ग जेयो फिर नीर ऊ डं ।	"	१०१
दु	दिस मोरली हेक थार दु भुजा ।	"	४९
दुह	दुह भुज कर काळी वमण ।	"	१२२
दूजी	नारी गाठियो सू ठ दूजी न खायो ।	"	८३
दूसरी	वळ दूसरी ताहर कू ण वीरो ।	"	५०
दो	पचासां उभ खट्ट दो पट्टराणी ।	"	९०
दोहै	पक्षपार पिडार या दोहै पास ।	"	१०

विऊ	घड़ीए विऊ नीमड आ जघावो ।	७८
विहू	विहू लोवन नीर धारा बहती ।	" १८
विहै	चव मात, भ्राता वि है धन चारो ।	" ६१
विया	सरो हेक तू हो विया सब छोटा ।	, ११३
वेहू	किया सारखा लोक वेहू किनारी ।	, ९
त्रि	अठ मांडसा आज वेहू अलाडो ।	" ३७
त्रिहू	सखी बाळ ऐन त्रिभुवन सूत ।	" ८८
त्रीन	पल त्रिहू पोढो मानो सोल मोरी ।	" ८१
त्रीजै	कर त्रीन एडो नमतेय काहा ।	, १४
पचा	तर आविजो जागसी जाम त्रीजै ।	" ६९
खट	पचा अघत देव इच्छ पलाळा ।	" ६३
आठ	पचासा उभ खट्ट दो पट्ट राणी ।	" ९०
नौ	इत्यासी उभ सौ दस बाधि आठ ।	" ९१
दस	दूज नदर धन नौ लख दूणी ।	" ७१
सोळ	इत्यासी उभ सौ दस बाधि आठ ।	" ९१
वीसा	जळाबोळ माहै कळा सोळ जहो ।	" ९९
इक्कीस	सहसा लिपी सोळ अर सयाणी ।	" ९०
पचासा	बदल यहै शोण पचास वीसा ।	" १०७
पचास	पुणू एक्कीस वार इक्कीस पाळा ।	" ७२
साठ	ग्रहांड इक्कीसा देखावो विहाण ।	" ११५
इठ्यासी	पचासा उभ खट्ट दो पट्टराणी ।	" ९४
सौ	बदल यहै शोण पचास घोसा ।	" १०७
सहस्सा	सखी देल बेटा लिहया लख साठ ।	" ९१
सहस्स	इठ्यासी उभ सौ दस बाधि आठ ।	" ९१
हजारा	सहस्सा लिपी सोळ अर सयाणी ।	" ९१
हजार	बदल सहस्स वध श्योम थ्याळा ।	" ९०
लख	हजारा मुणां जागसी नाग हेवा ।	" ५३
कोड	रिच एक ही गांठ फेर हजारै ।	" ३९
सावनामिक	सखी देल बेटा लिहया लख साठ ।	" ७७
पुरपवाचक तथा निजवाचक सावनामों को छोड़ कर अन्य सावनामों	प्रणी बात साका बधी कोड काजा ।	" ९१
	निणां घाद जोतां बेई कोड गाडा ।	" ९८
		, ८४

का प्रयोग विनोपण की मति गया है । उदाहरण के लिए देखिए सर्वनाम ।
क्रिया

माया मे किया का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है । नागवमण में ससृष्ट भूलक तथा वेगज धातुओं से विनिर्मित त्रियाए प्रयुक्त हुई हैं । वाय्य का सवादात्मक शलो में होने का कारण वतमानकालिक त्रियाए रूपों की प्रचुरता है । जिनका यह प्रयुक्त प्रत्यय 'ज' है । 'छ' य 'हे' बहुत कम प्रयुक्त हुए हैं । भूतकालिक क्रियाए बहुधा ओकारात हैं । भविष्यकाल मे ज, सी, तां, ओ, ऊ प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है । कतिपय उदाहरण दृश्य हैं—

वतमानकालिक प्रयोग

रमै सग गोवालियां रग राती ।	छव	११
धहै सांमळो ब्रज सेरी जिचाळ ।	,	४
नवा नेहसू तेह गोपी निहाळै ।	,	४
आया औद्रक सूरमां एणि आर ।		४९
इसो आज त कोण भूलोक आछे ।		५२
रमा सारपी है सखी घणन रेखा ।		९०
करै मूरळी नाद ठाडो क-हाई ।	„	९५
विठै सांपन सामळो सूर वादी ।	„	१०१
बाळी नागसू लीजिए यगि कांनो ।		३४
बिही कोर सपो रही मा वकाव ।	,	३५
जमत्रा जप्पई नागणी छोटि जोरा ।	,	५५
वकवाळ न मु ह मा चाडि वाई ।	„	७९
देवो आपरी लाज लीधो दङ्गलो ।		३४
बटका अटकां नही त्रग बेड ।	,	४१
बळ वो सादर वरणवू ।	„	१

भूतकालिक प्रयोग

पुळी न'र मोसार आवो प्रहट्ट ।	„	७
वई वांसळो सिगळो नादया तां ।	,	८
घणी मोम चाली चने वात घोड ।	„	१५
जसोदा ढळी कहुळी लम जेही ।	„	१६
पडीछा न्हों छी प्रिया राज पायो ।	,	११६
माम मोत्रळी सोजना करण मासी ।	„	६०
तद ताहरो बेय लत्रवट्ट त्रूटी ।	„	७४
जमूना वही पूर सिद्धर वन	„	१०८
प्रह्लांड दक्षीसा देखावी विहाण	„	११५

छद	३
"	४
"	१२
"	१३
"	१९
"	३७
"	८०
"	९०
"	९२
"	११०
"	११९
"	२
"	७५
"	१०
"	१

किणन दीठी का हवो सुण्यो न लीला सप
 धवनी भार ऊतारवा जाग्यो एण जुगति
 जमूना तण नाखियो नीर जाड
 दडी लार काहो चढ्यो घछ डाली
 घळदव वूश्यो दिखाळयो मुवामा
 न दीठी कदीयै न नत्र निहाळी
 वळ मोकळी माळिय लाडवायो
 ठगंवा गयी आप आप ठगाण्यो
 वळी राव जेहो छळी एण वायी
 पयो मार पांण भयो गात्र भग
 वळ फेरियो आगण नद बाळ
 प्रभू घणा चा पाडिया
 तवै नदरै नेस बलमद्र न हुता
 पलै पार पिडार था दोहू पासै
 जगाडया जसोदा जडूनाय जाग

भविष्यत्कालिक प्रयोग

अमा नागणीपत्यरौ जूझ आठै
 हुसी ठाकरा आकरू आज आरौ
 तुनै देखावू आझ वेगा तमासा
 फणीनाथ नै झालवू एण पाणी
 मु ह जोड होसी घडी टैक माह
 फणीफण न खावसी देलि फोरा
 तरै आविजो जागसी जाम थोजै
 चवोजै न्हौं बोल अं काळचाळा
 काळो नू न नापू तो थारै कमावू
 मोरो जागसी साम वायै मधूरै
 बडा जीपसी जुढ याहँ बडाई
 अठै माडसा आन बेहू अलाढो
 हजारों मुखां जागसी नाग हेवां
 बुलाढो जगाढो जुवी जुढ वायै

"	५१
"	५४
"	५५
"	५५
"	५६
"	५६
"	६९
"	३७
"	७७
"	९४
"	९६
"	३७
"	३६
"	५१

अव्यय

नागवमण मे क्रियाविशेषण नामयोगी, सयोजक और केवल प्रयोगी
 श्रेष्ठ से चार प्रकार के अव्यय का प्रयोग हुआ है निम्नका छद सत्या सहित
 अकारादिक्रम इस प्रकार है —

अघाणक (२१), अज (३९, ४०, ४४), अठ (३३, ३७), आ (६३ ७८)
 आकह रो (५४ ११), आग (७५), आगो (८३), आज (३, ३७, ५४, ५५, ८२,
 ८३), इसो (१०९), ऊधो (६४) अण (४, ४९, ५५), अेह (५५, ७२, ७३, ८४, १
 २१), अेहरो (८७), अेहा (३५), अेहा (८७), जोछो (९५), ओरो (८१), ओ
 (९२), षठ (५७) षटा (३३), षदि (३७), णिणी (८३ ९५), कियू (४१, ८०,
 ८९), को (११५), कूण (५२, ८१), के (२), कई (८४), कण (६८), केयि
 (११४), केहा (११४), को (८२, ९०), गुड (१९), घणा (२), घमकी घमकी
 (३१), घो (९१), ज (५९, ८३), जाण (६, १०, १३, ४८, १००), जाणि (१८,
 ९७), जाण (२७, ११७), जिहू के (५४ ११७), जु (४०), जे (२९, ६९ ७०),
 जेता (८२) नेम (१०५) जेहा (११४) जेही (११५), जेहो (९२) तणी
 तण तणी (५९, ९१ १२०, १२१), तव (७४, ७५), तर (६६) तिक को
 (६४, १२०), ते (१९, ५२, ५६, ६१), तोई (११६), तात्र (८२) तोर (५०)
 थोथो (११२), तो विसो (६८ १२०), बुरतर (१२०) धारआण (७३), न
 (बहुप्रयुक्त), नको (४२), नयो (३८), नमो (८१), नहीं (४१ ४३, ५०
 ७७, ७८, ७९, ११६), नाही (४४, ४५) ना (८२, १००), नित (४),
 न (८४, १०१, १०६, १०८), नयो (५९), पछ (७३), पहेला (७८), पाछा
 आगो (८३), पाछ (७०), पास (११६) पासा (५५), पास (१०),
 पुणि (२२), पूर (१०८), विचै (२३), बिचाळ (४), बगा (५५), बारबारा
 (१०३), मल (३२), म (२०, ३५ ३९, ७९, ९२) मां (३९, ७९), मानहू (३०)
 मांहे (२४, ६५, ९९), माहोभाह (३२), मूळ (५०), मूळ (५९), मोकळो (८),
 षडो (९), रसाळी (९६), रीतो (७०), लार (४ १३) वळे (२५, ३१, ५७,
 १११, ११९) विहाण (१, ४, ६९), विहाण्यो (६७), विचाळ (१६, ११९),
 येगो (३७, ११७) घृया (७२), सग, समो (१५), सांफड (९८) सामहो
 (८०), सांमो (१२), सार (३), सारा (१०२), सिर (१, ११२), हिव (१४,
 ७६, ७७, ८१), ही (५२), ह्यवक (४८), हे (८०), हेवां (३६) ।

नागदमण का काव्य-सौष्ठव

स्वरूपगत भेद की दृष्टि में रखते हुए प्राचीन संस्कृत आचार्यों ने काव्य काव्य को गद्य, पद्य, मिश्र नामक तीन वर्गों में विभाजित किया है एवं पद्य काव्य को भी महाकाव्य, खड्काव्य, मुक्तक काव्य नामक तीन उपवर्गों में बांटा है। इन सब में प्रमुखता महाकाव्य को मिली। महाकाव्य के स्वरूप गठन का सब प्रथम विवेचन आचार्य भामह ने अपने काव्यालंकार नामक लक्षण ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् दंडी, वट्ट, हेमचंद्राचार्य इत्यादि विद्वानों ने इसकी सक्षिप्त विवेचना की। महाकाव्य का सबसे सुंदर एवं विस्तृत विवेचन आचार्य विश्वनाथ के साहित्यदर्पण में उपलब्ध है। खड्क काव्य पर विचार करते हुए साहित्यदर्पणकार ने लिखा है—

खड्काव्य भवेत्महाकाव्यस्य कवेऽनुसारि च ।

—साहित्यदर्पण, पृष्ठ परिच्छेद श्लो० ३२९

अर्थात्—महाकाव्य के एक अंग का अनुसरण करने वाला खड्काव्य होता है। इस लक्षण के उपरान्त भी खड्काव्य की स्वरूपगत विशेषता जानने के लिए महाकाव्य की विशेषताएं जानना पड़े रह जाता है। इसके स्वरूप को जाने बिना खड्काव्य और महाकाव्य की सीमाएं निर्धारित करना असंभव है।

साहित्यदर्पणकार ने महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन निम्न रूप में किया है —

- १ महाकाव्य का कथानक सर्गों में विभाजित रहता है।
- २ महाकाव्य का नायक कोई ब्रह्मता या धीरोवाच गुणा से समर्थित कोई उच्चकुलोत्पन्न क्षत्रिय होना चाहिए। एक ही वंश में उत्पन्न अनेक नरेश भी उसके नायक ही सकते हैं।
- ३ शूद्रार, वीर तथा गांत में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए।
- ४ उसमें नाटक की समस्त सधियों (मुख, प्रतिमुख, गव, विमर्ग, उपसंहार) को स्थान प्राप्त हो।
- ५ महाकाव्य का कथानक या तो ऐतिहासिक होना चाहिए या

संज्ञनाधित ।

- ६ उसमें चार वर्ग (धम ध्रय वाम मो १) में से कोई एक फल स्वरूप में होना चाहिए ।
- ७ प्रारम्भ में नमस्कार, आशीर्वाचन अथवा मुख्य कथा की ओर संकेत के रूप में मंगलाचरण घनमान रहना है ।
- ८ उसमें कहीं कहीं दुष्टा की गिंदा जाह संभना की प्रगसा होती है ।
- ९ महाकाव्य के सर्गों की संख्या जाठ से अधिक होनी चाहिए और इन सर्गों का आकार बहुत बड़ा या बहुत छोटा भी नहीं होना चाहिए । प्रायः प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद का प्रयोग होता है और सर्गांत में छंद परिवर्तन अपेक्षित है । कहीं कहीं सर्ग में विविध छंदा का प्रयोग भी हो सकता है । प्रत्येक सर्ग के अंत में आगत कथा की सूचना होनी चाहिए ।
- १० उसमें सध्या गूय, चंद्र, रात्रि, प्रबोध, अघशार, दिन, प्रात काल, मध्याह्न, मृगया, पयत, ऋतु, धन, समुद्र, सयोग, वियोग मुक्ति, स्वयं, नगर, यज्ञ, पुढ, यात्रा, विवाह, मरणा, पुत्रोत्पत्ति आदि का यथानुसूल सांगोपांग वणन होना चाहिए ।
- ११ महाकाव्य का नामकरण कथि, कथावस्तु नायक अथवा किसी अन्य व्यक्ति के नाम के आधार पर होना चाहिए और सर्गों के नाम संगत कथा के आधार पर होने चाहिए ।

उपयुक्त लक्षणों की ध्याना में रखते हुए विचार किया जाय तो नागदमण में महाकाव्य के अधिकांश गुण उपलब्ध हैं । नागदमण की कथा एक प्रख्यात पौराणिक कथा है । इसका कथानायक धीशृष्ण पूनब्रह्म परमेश्वर एवं नायकीधित गुणों से सम्पन्न हैं । प्रारम्भ में मुख्य कथा की ओर संकेतांकित मंगलाचरण विद्यमान है । समस्त काव्य में वीर रस अंगीभूत है, यारसत्य, दात रस सहायक रूप में प्रयुक्त हुए हैं । पायवस्तु— पाचों नाटकीय सधियों में विभक्त है । राजा स्तुति एवं खल निंदा का प्रसंग यत्र तत्र आया है । प्रात काल, गो दोहन, गो चारण, कटुक श्रौडा सयोग, वियोग, सयवणन, युद्ध इत्यादि प्रसर्गों का यथानुसूल वणन हुआ है । समग्र काव्य में मंगलाचरण तथा कल्याण की छोडकर एक ही छंद का प्रयोग हुआ है । इसका नाम कथावस्तु के आधार पर है । पुरपाय घतुण्ड्य फल के रूप में प्राप्त है जिसे स्वयं नागदमण कार ने यत्र तत्र स्वीकार किया है । इतना सब फुछ होते हुए भी यदि कोई श्रुति है तो वह है—काव्य की संगहीनता और वस्तुसंक्षेप । नागदमण की कथा का सबध मात्र एक दिन की घटना से है । इसमें समग्र जीवन की ध्याएया समुपस्थित करना कवि के लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी था । फिर भी क्षुत्ता सांघा ने अपनी काव्य प्रांतभा के धल से भगवान धीशृष्ण के लोकीय

धारक स्वरूप की चित्रमय भावी उपस्थित करते हुए गौरवा का सदेश प्रस्तुत किया है वह किसी भी महाकव्य से कम नहीं है। परन्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खड्गकाव्य की ही परिधि में आता है।

नागदमण का रस-निरूपण

रसयुक्त वाक्य ही काव्य है¹—कह कर रसजादियों ने रस की महत्ता प्रस्थापित की है। नागदमण बीर रस प्रधान काव्य है। झूला सायाजी का भगवान् श्रीकृष्ण के अन्तर्गत भक्त होते हुए भी वीर रसाञ्चित भगवच्चरित्र का छाटवान करना उनकी घमगत विनोयता है। चरण कुल सदा से ही वीर भाव का विस्तारक रहा है। नागदमण का नेति नेति प्रक्रिया द्वारा चतुर्विध सँघ तथा गद्ग्रास्र वणन उक्त परम्परा का सुन्दर निर्वाह है।

विभाव अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के सयोग से परिपुष्ट स्थायी भाव ही रस का स्वरूप ग्रहण करता है।² वीर रस का स्थायी भाव उत्साह माना गया है।³ इसके दान, धम, युद्ध और व्रथा यह चार भेद अलंकारिका ने बताया है।⁴ नागदमणवे जगिरस स्वरूप युद्धवीरका चरान हुआ है। रसके आश्रय भगवान् श्रीकृष्ण हैं और आलम्बन है कानिय नाग। नाग का विष-प्रभाव से घमुना के जल को दूषित करके गो तथा गोराल समाज को हानि पहुँचाना और नागपत्नियों द्वारा भगवान् को केवल साधारण बालक एव कालिय को एक बहूत बड़ा वीर समझना, उद्दीपन है। कानिय के भयकर आक्रमण के समय भगवान् का निश्चल रह कर उसके प्रहारों को विफल करने की चेष्टाएँ अनुभाव के रूप में वर्णित हैं। गव, तक, स्मृति इत्यादि सञ्चारी भावों का यथा स्थान निरूपण हुआ है तथा घातस्थ, कुरुण और रीर रसों का सहायक रसों के रूप में वणन है।

यद्यपि वष्य त्रियय परतु के आपार पर नागदमण एक वीर रसाञ्चन सङ्गकाव्य ही निर्णीत हुआ है। परतु कवि का अंतिम लक्ष्य भगवान् श्रीकृष्ण की सीमा गायन द्वारा सासाक्षि दुर्घों से विमुक्त होकर मोक्ष प्राप्ति है। इसी कारणसे यह कृति भक्ति रसाञ्चित ही मानी जाएगी।

नागदमण में भक्तिरस

प्राचीन आचार्यों ने भक्ति को रस के रूप से रस की सहा नहीं दी है। गीत रस के अन्तर्गत भावरूप का द्वयका वणन है। देवता आदि विषयक रसों की भाव कहा गया है⁵ रसमहा परतु यह बात बड़ी तक उचित है?

¹ वाक्य रसात्मकं काव्यम्—विरचनाय

² विभावश्चानुभावे सञ्चारिक सञ्चारिणः तथा।

रसनामनि ररादि स्थायी भाव रुचनसाम् ॥—सा० द० परि० ३

³ उत्साह स्थायी भाव — वी० परि० ३

⁴ स च दान धर्म युद्ध दया भा समीचीनश्चतुः।—वही परि० ३

⁵ रतिर्देवादि विषया व्यभिचारी तथाजिन । भावप्राक्त ।—काव्य प्रकार

भगवद्भक्त भागवत जाति के ध्वज से जो भक्ति रस का अनुभव करते हैं वह उपेक्षणीय नहीं। उस रसका आलवन भगवान, पुराणादि ध्वज उद्दीपन, रोमांच आदि अनुभाव तथा हृय आदि संचारी हैं। स्थायी है—नगवद्विषयक प्रेम रूप भक्ति। इसका गीत रस में समावेश नहीं हो सकता। कारण यह कि—प्रेम, निर्वेद या धराभ्य क विरुद्ध है और धराभ्य ही गीत रस का स्थायी भाव है।¹

ईश्वर में परम अनुरक्ति को भक्ति कहते हैं। यह दो प्रकार की मानी गई है—रागानुगा और वधी। वधी से रागानुगा भक्ति को श्रेष्ठ माना गया है। इसके भी दो भेद हैं—कामरूपा और सम्बन्धरूपा। विषय सम्भोग तत्त्वा को काम कहते हैं। इन्द्रियाय हो बद्ध जीव का विषय है। इसीलिए पण्डित लोग इसे काम कहा करते हैं। जिस जगत् परमत्त रूप भगवान, विषय रूप में धरण निय जाते हैं, उस जगत् विषय सम्भोग तत्त्वा को प्रेम कहा जाता है। काम और प्रेम में स्वल्पगत भेद नहीं है, केवल विषयमात्र का भेद है।²

प्रेमानुक्ति की दो अवस्थाएँ होती हैं—भाव और प्रेम। अलकारिक वैयादि विषयक रति को भाव कहते हैं रस नहीं यह पहले प्रकट किया जा चुका है। पर धृष्टभाव भक्तों का भाव उससे भिन्न है। जहाँ अलकारिक कृष्ण सवधी रति को केवल भाव कहने रस नहीं, वहाँ भक्ति शास्त्री उसे रस भी कह सकते हैं। भाव शुद्ध रति है। अलकारिकों की रति से यह रति भिन्न प्रकार की है। स्त्री पुत्रादिक के प्रति जो रति है यह बद्ध जीव की जड विषया रति है। पर ध्योकृष्ण के प्रति भक्त की रति चिद्विषया होती है,³ अर्थात् अलकारिकों के रस जडो हुए हैं और भक्ता के रस ईश्वरोन्मुख यही दोनों में भेद है।

भक्तिरस शास्त्रियों के मतानुसार भक्तिरस व्यापार में निर्धारित पांच भाव होते हैं—१ स्थायी भाव, २ विभाव, ३ अनुभाव, ४ सात्त्विक भाव और ५ संचारी भाव। इनकी परिभाषाएँ अलकारिकों जसी ही होती हैं। स्थायीभाव नाम प्राप्त रति, विभाव अनुभाव, सात्त्विक तथा ध्यनिचारी भावों से परिपुष्ट होकर पांच स्वभावों को ग्रहण करती है तथा उसी के अनुसार रति के पांच भेद होते हैं जसा कि निम्नांकित तात्त्विका से स्पष्ट है—

¹ श्री रामदहिन मिश्र—का व दर्शन पृ० २१२

² श्र—भाषता अनुरक्ति ईश्वरे । —शाटिल्य सूत्र

श्र—सा तु श्रमिन् परम प्रेम रूपा । —नारद भक्ति सूत्र

³ श्री हजारीरसाद द्विवेदी—सुख सात्त्विक पृ० ३०

⁴ श्री श्रीचैतन्य गिरिदास पृ० २१०-२११

⁵ डा० रामरतन मटनागर—द्विदी भक्ति साहित्य पृ० ८८

स्वभाव	शांत	दास्य	वात्सल्य	सत्य	शृ गार
रथायो	गातरति	दास्य रति	वात्सल्य रति	सत्य रति	मधुरा रति
आत्मव्यन	परब्रह्मत्व	सवधरत्व	मुकुमारत्व	मुजानस्य	मनहरणत्व
उदीपन	एकांतव्यान	नमस्कार वदन	बाल गुलम चेट्टमपु	स्तम्भादि आठो	वसत कटु, वस्त्रामुपण
सांख्यिक अनु०	सुदर्श के अतिरिक्त	स्तम्भादि आठो	स्तम्भादि आठो	स्तम्भादि आठो	रतम्भादि आठो
संचारो	मति, घति, निर्वेद, स्मृति	हर्ष, गव, चित्त, मति, घति, निर्वेद, तर्क, गका, दीनता तथा विप्रलन के आय संचारो	दास्य की तरह	दास्य की तरह	दास्य की तरह
नागदमन में वणन	आरम्भ तथा अंत की स्तुति एव यमुना द्वारा स्तुति का वणन	नागपत्नियों द्वारा पूजा अर्घ्य का वणन	दास्य की तरह	दास्य की तरह	दास्य की तरह
	रागानुगा नक्ति को प्रेम नक्ति की पुष्टिकारिणी समझकर प्रचारक रहे हैं। इन्होंने विजयनगर के राजा बृहस्पदेव को समाने शकों को पराजित करने के उपरांत दक्षिण से बुदावन आकर गोवर्द्धन पर श्रीनायकी के मंदिर की स्थापना की तथा अपने उपास्य बालकृष्ण (श्रीनायकी) के नित्य तथा नमित्तिक आचारों द्वारा सेवा का प्रवच किया। बल्लभगुल संप्रदाय में वही प्रणाली वर्तमान तक गृहीत है।	गोप पत्नियों के स्वरूप दर्शन एव कथोप-कथन का वणन	गोचारण के समय यमुना तट पर कटुक-कोडा का वणन	गोचारण के समय यमुना तट पर कटुक-कोडा का वणन	नागपत्नियों द्वारा स्वरूप दर्शन तथा कथोपकथन का वणन

रागानुगा नक्ति को प्रेम नक्ति की पुष्टिकारिणी समझकर प्रचारक रहे हैं। इन्होंने विजयनगर के राजा बृहस्पदेव को समाने शकों को पराजित करने के उपरांत दक्षिण से बुदावन आकर गोवर्द्धन पर श्रीनायकी के मंदिर की स्थापना की तथा अपने उपास्य बालकृष्ण (श्रीनायकी) के नित्य तथा नमित्तिक आचारों द्वारा सेवा का प्रवच किया। बल्लभगुल संप्रदाय में वही प्रणाली वर्तमान तक गृहीत है।

श्रुता साधाली श्री बालकृष्ण (श्रीनायकी) के अत्यन्त मक्त थे। प्राचाय बल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित नित्याचार हरितेबा का वणन इन्होंने नागदमन में बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है—

अध्याय बल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित आठों प्रहर की सेवा तथा नागदमणकार की वणनमूचन तालिका—

क्रम	सेवा का नाम	समय	भाव	नागदमणकार का वणन
१	मंगला	प्रातः ५ से ७ बजे तक	अनुराग के पद, जगाने के पद, और दधि मथन के पद	बिहानू नबोनाथ जागो बहेला इत्यादि छंद म० १
२	शृंगार	७ से ८ बजे तक	बाल रूप सौंदर्य, वेग सूया, बाल ब्रीडा के पद	लिया सार तितार गोचार नीला इत्यादि छंद स० ३
३	स्वाल	८ से १० बजे तक	सरप-नाथ बौसान, गोचरण आदि के पद	नटयो माय सिद्धर मारग नाउ इत्यादि छंद सख्या ४ से ७ तक
४	राजभोग	१० से १२ बजे तक	छाकू के पद	गिमाव जिक नायता मोग बाणो इत्यादि छ० स० २
५	जलपान	साय ३ से ४ बजे तक	लीला के पद	बई बांताली तीगिळी नादवा तां इत्यादि छंद स० ८ से १२ तक
६	मोग	साय ५ बजे	कृष्ण रूप, गोवीदगा, मुरली, रूप माधुरी, गाय गोप आदि के पद	अबाणक ऊनौ दरवार आन इत्यादि छंद स० २१ से ११९ तक सन्नी नावो या वणन है।
७	संध्या	६ से ७ बजे	गो ग्वाल सहित वन से आगमन, गोदोहन प्रयाग, वास्तव्यमाव से यगोदा का मुलाना आदि के पद	महाकाळ काळी तणी माण मोडो, जसोदा दितो जावियो पाण जोडो। छ० स० १२०
८	शयन	७ से ८ बजे तक	अनुराग के पद तथा सयोग शृंगार के पद	रख्यो नरय राधारमण छंद स० १२२ म बैबल सकेत किया है।

पहल १५ वाँ है। यह तत्कालीन गोप-भोजन के प्रमाणों का प्रमाण है।

मान म भी गोप सभा के विद्याकलाप नागमनकार के वनानुसार ही सप्ताह दिन होना है। यथा (१) प्रातः काल उठना, (२) बलवा, (३) गोचारण सायत्री तथा परिधान, (४) खलों के साथ वन गमन, (५) शीटा, (६) मघा न भोजन, (७) सायंकाल म गायों सहित वन से आगमन, (८) भोजन गमन। अलंकार

रस या व्यंग्य के पदवाच्य यदि वाच्य में किसी और का सह्य है तो अलंकारों का। अलंकारों का अर्थ है भूयण। जो अलंकार पर वह अलंकार जिसके द्वारा अलंकार किया जाय इस कारण व्युत्पत्ति से उपमा आदि का ग्रहण हो जाता है।^१

अलंकारों का उपयोग सौंदर्य-वृद्धि के लिए किया जाता है। यह सौंदर्य भावों का ही या उनकी अभिव्यक्ति का। भावों को सजाना, उन्हें रमणीयता प्रदान करना अलंकारों का काम है और दूसरा काम है भावों की अभिव्यक्ति को प्रामाण्य करना य उन् प्रमाणात्मी बनाना।^२

रस मिष्ट कवियों का अपनी रचनाओं में अलंकारों के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। दृढ्यालोक के मतानुसार— निरूप्यमाणरी कविनाइवों को भेदने पर भी प्रतिभाशाली कवियों के समस्त अलंकार प्रथम स्वयं ग्रहण करने की अपन आपको हम पहले हम पहले कहते हुए दृष्टे से पड़ते हैं।^३

कविजनोचित सस्कार मूल्य वतमान होने के कारण नागमनकार को अलंकारों के लिए प्रयास नहीं करना पडा है। नागमन म डिगल के वयणमगाई जैसे किल्ल पर अतिवाच्य नागमनकार का सत्र मुचर निर्वाह हुआ है। वयणमगाई के सफल प्रयोग से अथ समस्त वाच्यगत दोषों का परिहार हो जाता है।^४ अथ उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग भी यथा-स्थान हुआ है तथा मूल्य सायाजी की उपेक्षाए तो अलंकारों म अपना एक

^१ अलंकार शब्दकार काण्य-सुपया दुः अलंकार सन्दोषमुपमादिषु वर्त
— वामन शि

^२ श्री रामान्ध्र मिश्र—काय दण्ड पृ० २०२

^३ प्रलंकारान्तराणि द्वि निरूप्यमाण द्वारा यपि रम सया द्वि वनम प्रति प्रकलन
कवे अद्वैतिका पराप्तमित — काय लो

^४ काण्य इण म/ग अलं, वयणमगाई वम

दण्ड अलंकार द्वारा, ल । नैव लवनम— इति म— रघुनाथ मर गीता से

आविर्भावक समसङ्कर सर्वप्रथम निरूपण किया जा रहा है।

उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार भेद से घयणसगार्ई को तीन वर्गों में रखा गया है। उत्तम के भी आदिमेल, मध्यमेल और अन्तमेल नामक तीन उपभेद माने गए हैं।¹ इनको अपिच अक्षरोट, सम अक्षरोट और यून अक्षरोट भी कहते हैं।² अरथ अक्षरोट एक घोषा भेद भी कहीं कहीं मिलता है।³ नागदमन में घयणसगार्ई के सभी भेदोपभेदों का व्यवहार हुआ है। यथा—

अन्तिम वाक्य के आदि से होती है।

उदाहरण—

विहाणू, नवो नाप जागो षहेला,
हुयो बोहिवा धेनु गोयाळ हेला।

जगाढ जसोदा जनुनाय जाग,
मही माट घूम नवनीत भांग ॥ छ० १

विशेष—उक्त उदाहरण में व व, ह ह, ज ज तथा म म की आवृत्ति बशनीय है।

मध्यमेल—अरण के प्रथम वाक्य के आदिघण की आवृत्ति उसी अरण के अन्तिम वाक्य के मध्य में होती है।

उदाहरण—

१ सारद करी पत्ताय ।	छद	१
२ लियां लक्ष्मी कथ ऊमा हुलासे ।	„	१०
३ रीतो बाहुङ्ग जे अजीत्यो घरांन ।	„	७०
४ घडीय बिहू नीमब आ जघामौ ।	„	७८
५ होहि गोपद अखुरारि ।	„	१२२

अन्तमेल—अरण में प्रथम वाक्य के आदि घण की आवृत्ति उसी अरण के अन्तिम वाक्य के अन्त में होती है।

उदाहरण— तव नदरं नैस यलमद्र न हुता। छद ७५

अरधमेल—अरण से प्रथम वाक्य के आदिघर्ण की आवृत्ति उसी अरण के

¹ वयणसगार्ई तीन विध, आद मध्य तुक् अन्त ।

मध्यमेल हरि महमहण, तारण दास अन्त ॥

आढा दिगनाजी—रघुवरजस प्रकाश प० १५२

² वरण मित्त क्षु धरण विध, कवियण तीन कहंत ।

आद अधिक सम मध अवर, यून अंक सो अन्त ॥

कवि मल्ल—रघुनाय रूपक पृ० ३४

³ अरध मेल अक्षरोट इव, चल तुक् विण कवि चाल

कवि मल्ल—वही पृ० ३५

मध्य वाप्यों में होती है ।
 उदाहरण— १ बलद व वृष्यो दलाळ यो मुदामा ।

- २ हाहाकार ह्कार सतार सार । छद १९
- ३ सब सुदरी मुदरी देखि मोही । " १५
- ४ ढळकुतडी ढाल नेजा न घज्जा । " २५
- ५ त्रिलोकी न त्रासई बीहा औ न बूक्ष । " ४९
- ६ क्षणी बात सारावधी कोड काना । " ८८

मध्यम कोटि की वयणसगार्ई में असमान स्वरों, तथा स्वरों के साथ य, घ, अथवा ट का मेल होता है । यथा—
 उदाहरण— १ आप बपाणो ऊगल ।

- २ इकी बेवटी चौवट आय ऊनी । दूहा ३
- ३ ऊमा गाय गोवाळ क्षूरत आर । छद ६
- ४ इल बाळ गोपाल पामो अचना । " १५
- ५ इल नासिका सिध्ध दीपक ऐरी । " २१
- ६ अमारा भगत्ता तर्णा एह ओरा । " २६
- ७ उड डोंगळा पींगळा रा अगारा । " ५८
- ८ ऐरी जोबोन देखी चखे न हेरी । " १०३

अधमकोटि की वयणसगार्ई में विभिन्न वर्णों जसे 'ट' वग और 'त' वग अथवा अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों का मेल होता है । यथा—
 उदाहरण— १ इडो लार काहो चळ्यो वृच्छ डाली ।

- २ तब नदरी लार आहीर टोळा । छद १३
- ३ बरब्बार काळी तणी मेलिह डालो । " १७
- ४ ढळवक्तडी ढाल नेजा न घज्जा । " ३८
- ५ जाल ब्रम्ह नीला बह विहल झाळा । " ४९
- ६ फणिनाथ न झालबू ऐण पाणो । " ५०
- ७ तर्णा देव मोटा अमा मत थोडी । " ५५

नागदमण में उक्त वयणसगार्ई के अतिरिक्त—छेकानुप्रास, वत्यनुप्रास, धृत्यनुप्रास, लाटानुप्रास अत्यानुप्रास, पुनरुक्ति, वक्रोक्ति इत्यादि गद्यालंकारों के उदाहरण यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं तथा उपमादि अर्थालंकारों का व्यवहार भी यथास्थान हुआ है । इतिपय उदाहरण गृह्य हैं—
 उपमा—

- १ मुष्यो घात आघात माता सनेही,
 जसोदा ढळी कदळी सम जेही । छद १६
- २ नहीं नागणी बोल एरा निकास
 वस रसण डरसण विरववास । " ३५

रूप—	१	मुण्णो घात आघात	छंद	१६
	२	लण लण गाराणा भाळ मू वा ।	"	२०
	३	उड डींगळां पींगळारा जगारा ।	"	१०३
	४	समद्रो पार संसार होहि गोप अणुहारो ।	"	१२२
उपदेश—	१	हुई गदरी घेन मू घेन हेला, मिल बाळया जाणि श्रीगग भेळा ।	"	६
	२	पुळी नर नीसार आयी प्रहट्ट । त्रिवेणी उत्तट्टीय समद्र तट्ट ।	"	७
	३	बालिनी तण आई लीटत कांठ, गपी जाणि चिंतामणि रक् गांठ ।	"	१६
	४	इल नासिका सिध्द दीपकर तेरो, बळी घप जाण लुगी लप करो ।	"	२६
	५	अली सकुली जाणि विधी अलक्षर ।	"	२७
	६	घेयो नदरो धोट अट्टिपोट एहो, जळाबोळ मांह बळा सोळ जेहो ।	"	९९
	७	गोपीनायरा हाय जापा गडह अही गारडी जाणि छाट उडह ।	"	१००
	८	अही मूठ बाज जिहा नां उपाट अही गारडू जाणि बाळी रमाड ।	"	१०
	९	काळी नागरा बाह संमाळ केया, लघी जाण मूटयो दधी मच्छ लेवा ।	"	१३
असम—		महा खम्मिया निधि जा'म मोटा, खरो हेक तू ही बिया ख'ब सोटा ।	"	११४
अतिशयोक्ति—		जाळ विरह्य नीला घट्टे विरह्य झाळा वदन सहस्ती वध द्योम द्याळा । यडा शृङ्ग सीतग हेमग बाळा, जिरी फू क आम भर दू क फाला ॥	"	५३
रूपश्रुतिशयोक्ति—	१	महाकाळ काळी नको बाळ मान, पडी दोतडी बाज ही बाघ पान ।	"	३६
	२	जुड रूप तीन प्रणाघत जेहा, कुहाडा प्रणा ऊपरां मार बेहा ।	"	११४
व्याजश्रुति—	१	मनासू न मूकड घडी हेक मामी, वर मूर ऊगां तणी तित्य सामी ।	"	५९

- २ प्रिया तात न गोत्र धारा विद्याया,
बडा गोपरो पुत्र आयो विहाण्या । एव ६७
- ३ जोयो नदर प्रह सयवट जागो,
हिव लागवा सक थो लोक सागो । " ७६

नागदमण म प्रयुक्त छद
नागदमण काव्य मे प्रारम्भ के चार दोहों तथा अन् के एक पंक्ति के अतिरिक्त सबत्र भुजगप्रयात छद का व्यवहार हुआ है । भुजगप्रयात सुप्रसिद्ध समवर्णिक छद है जिसका लम्पण राजस्थानी छदगास्त्र म इस प्रकार दिया गया है—

ध्यार यगण पद प्रत चवा, छद भुजगप्रयात ।
आटा किगनाजी रघुवर जम प्रकाश प० १३६

नागदमण के मवाद और उक्ति वचिच्य
नागदमण का विशेष महत्व उत्तक वणन और सवाओं क कारण है ।

X X X विद्योतया नागणी और कृष्ण क सवाओं म माधुय, वातसल्प, आचय, मय उत्माह जात्रि माओं का एक साथ सुन्दर सामञ्जस्य मिलता है । वे बड़े बढते हुए और उपयुक्त हैं । ^१कवि को प्रकृति चित्रण करते हुए काव्य के अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करने में विगण सफलता मिली है । ^२सफल सवादों का विवरण इस प्रकार है—

- १ नागणी और कृष्ण सवाद— एव ३० ५५
- २ नागणी और यमुना सवाद— " ५६
- ३ नागणी और कृष्ण सवाद— " ५७ ८४
- ४ नागणी और अय स्त्री सवाद " ८१ ९३

उक्त सवादों में तथा वणनों मे लोकोक्तियाँ और मुताबरे मणिकांचन योग स्वरूप प्रयुक्त हुए हैं जो भाषा की सजीवता तथा सौन्दर्य वृद्धि के मूल उपादान समझ जाने हैं । कतिपय सफल प्रयोग हृष्टय्य हैं—

- १ बईकुठ र नाय स्त्री विचारी । एव ९
- २ रम मग गावाजिया रगरातो । " ११
- ३ मन्वी दूसरो सेत खेखन माय, त्रिव ज्वरा वात गोवाळ हाय । " १४
- ४ घणा भोम चाली चढी वात घोड । " १५
- ५ लिपा जोह दत नहीं लोक लोरी गुड गाय गावाळ मूरत्य गोरी " १९

^१श्री मोतीलालजी मेनारिया—राजस्थानी भाषा और मान्दिय पृष्ठ १२३
^२श्री पुढोरामजी मेनारिया—कविनीशेदरण [प्रभाकरा] ५८ २६

६	बुलाय मळ ताप नांसी भुरवरी ।	छव ३२
७	काळीनागमू रीगिए यमि पानो पडयो तान मोम पड मात पानो ।	„ ३४
८	रडीन इता मान ताप रडाळा, घयोज नहीं घोन ज बाळवाळा ।	„ ३७
९	दरवार काळी तणी मेल्हि डायी ।	„ ३८
१०	मरीज नहीं आम सू चाय भीळा ।	„ ३९
११	बधारया न बार अन वाळ वाळा ।	„ ३९
१२	अज मुय प पान री सोनि आव ।	„ ४०
१३	हारियां जीभिया करतार हाय ।	„ ४१
१४	सूतो ताप जगाडोज बेण को ।	„ ६८
१५	पिता मातरी औषणी पकरवानो मोह्यारी हुई घूघरी साव मानो ।	„ ७०
१६	लला तू नहीं ओह धूवत लूणी ।	„ ७१
१७	अमा पय लांडा तणी धार आय ।	„ ७३
१८	मिळ कसरा दूत पाणी न माग ।	„ ७५
१९	मिळ बादुरां मेह तो सांच मान ।	„ ७६
२०	रडीज नहीं अगळा जाट राणी ।	„ ७९
२१	किसू आपरो मोल आपे कराव ।	„ ८०
२२	नरां नारी को नागणी नां विद्याणी, रही चांद्राटा देव दाणव्य राणी ।	„ ८२
२३	नारी गाठियो सू ठ दूनी न सायो जणणी किणी ट्रेक तू ही ज जायो ।	„ ८३
२४	गिणां धाद जोता केई कोड गाडां ।	„ ८४
२५	सगो वाळ एन त्रिभुवद्र सूझ ।	„ ८८
२६	प्रभू अग लागी सोई फूल पाणी ।	„ ९९
२७	लोकांही दिवाळ प्रभू लीक लाग, जहेटा मुण्या ताप रा वेवि आग ।	„ ११४

नागदमणकार का काव्यगत संदेश

झूला सांयाजी ने प्रस्तुत काव्य में भगवान श्रीकृष्ण के सर्वोत्तर भक्तिवाद के साथ साथ गो संरक्षण के महत्त्व का भी प्रतिपादित किया है। भारतवर्ष में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक गो संरक्षण को एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में माना गया है। अनेकानेक भारतीय धीरों ने समय समय पर अपने प्राणों

की बाजी लगाकर गो रक्षा के महत्त्व को अभुङ्ग रखा है। वैज्ञानिकदृष्टि से भी गो रक्षा का महत्त्व कम नहीं है। भारत एक कृषिप्रधान देश है। गाय दूध देना की सर्वोपरि राष्ट्रीय निधि है। गायों के द्वारा दूध, दही, घृत इत्यादि अमृतोपम पृथिव्य साहार तो उपलब्ध होता ही है साथ ही साथ कृषि कार्य के सम्पादनाय बल भी गायों द्वारा ही प्राप्त होने हैं। इस प्रकार की राष्ट्रीय-निधि का दुबल होना, नष्ट होना देश का दुर्भाग्यभूचक लक्षण है। जिस प्रकार जगवान् श्रीकृष्ण गो रक्षा निमित्त महाकालस्वरूप बालिग नाग से लोहा लेने में नहीं हिचकिचाये उसी प्रकार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि गो संरक्षण के लिए यदि काल से भी टक्कर लेनी पड़ जाय तो उसमें खानाखानी न कर, इसी में राष्ट्र का कल्याण है।

शुला सायाजी
कृत
नागदुमण

मूलपाठ
महत्त्वपूर्ण पाठभेद
शब्दार्थ एव भावार्थ

अथ श्री नागदमण लिग्यते

दूहा

बळ^१ वा सादर^२ वरणवू^३, सारद^४ वरी पसाय ।
 पवाडी^५ पतगा सिरै^६, जदुपति कीधी^७ जाय ॥ १ ॥
 प्रभू घणा^१ चा पाडिया, दत वडा चा दत ।
 के पालणै पोडिया, के पय पान करत ॥ २ ॥
 किणै न दीठी कानवी^१, सुण्यो न लीला सघ^२ ।
 थाप वधाणो^३ ऊवळै, बीजा छोडण वध ॥ ३ ॥
 अवनी भार उतारवा, जाग्यो^१ एण जुगति ।
 नायि^२ विहाण नित^३ नव नव विहाण नति ॥ ४ ॥

छद भुजगप्रयात

विहाणू^१ नवो नाय जागो वहेला^२
 हुयो^३ दोहिवा^४ धेनु, गोवाळ हला^५ ।
 जगाड जसोदा जदूनाथ जागै^६,
 मही माट घूमै, नवनीत^७ मागै^८ ॥ १ ॥

- १ ^१बळतो [ख ग], वाणी वाज वरणवा [घ], विधि [ङ]^२ सारद [ग, ङ] ^३कीनवु [ख ग घ ङ], ^४सादर [ग], ^५पवाडु [ख] पुवाडा [ग], ^६सरस्य [ख], सरस [ग], ^७कीनी [ङ च] ।
- २ ^१प्रणाय पाडिया [ख] घणाई [ग], ^२पालाण [ङ] ।
- ३ ^१कागुमा [ख], ^२सुघ [ग] ^३वधाव [ख] ।
- ४ ^१जायो [ग ङ], ^२नाय [ग ङ च], ^३नवेनित [ख] ।
- १ ^१विहाणे [ङ], ^२वहिला [ख], ^३दीयो [ख च], ^४दूहवा [घ], दोडिया [ङ], ^५हिला [ख], ^६जागो [ख च ङ], ^७नवनिदि [ङ], ^८मागो [ङ] ।

अथ श्री नागदमण

दोहे

हे गारवा ! आप मेरे पर अनुग्रह कीजिय जिससे मैं यदुपति श्रीकृष्ण
ने कालिय नाग के सिर पर चढ़कर जो पराक्रमपूर्वक युद्ध चरित्र किया,
उसका सादर वणन कर सकूँ ।१।

प्रभु श्रीकृष्ण ने अनेक बड़ बड़े दैत्यों क—कइया क पलने मे सोते
हुए और कइया क रसनपान करत हुए, दाँत उखाड डाले (नष्ट
कर दिये) ।२।

भगवान श्रीकृष्ण क लीलायुक्त चरित्र ऐसे हैं जो न तो बेले गये
हैं और न सुन गये हैं । दूसरों को वधनयुक्त करने वाले स्वयं ओखली
से बध हैं ।३।

भगवान श्रीकृष्ण भूमि का भार उतारने के लिए इस रूप मे प्रकट
हुए हैं कि—नित्य प्रात काल मे नवीन नवीन उच्छलल व्यक्तियों को
अपने वध मे कर लते हैं ।४।

भुजगप्रयात छंद

हे नाय ! प्रात काल मे गायों को दुहने के लिए ग्वालों की पुकार हो
रही है अत शीघ्र जागिए । इस प्रकार जसोदा के जगाने पर यदुपति
श्रीकृष्ण जागे और मटके मे दही मयते देव कर नवनीत मागने लगे ।१।

१ वळ=पराक्रम। बो=बह। सारद=सारवा। पषाय=प्रनुग्रह। पवाढी=
युद्ध चरित्र । पनगां=सप के । सिर=ऊपर । कीघी=किया ।

२ घणां वा=अनेकों के । पाइया=उखाटे । वडां=मोटे । के=
कइयों के । सोडियां=छोते हुए । पय=दूध । करत=करते हुए ।

३ कियो न=किसी ने भी नहीं । दीठी=देखा । सीता-सध=लीला-
युक्त । बीजां=दूसरों के । वध=पाप ।

४ भवनी=पृथ्वी । भार=भोग । जाग्यो=प्रकट हुआ । एण=इस
प्रकार । जुगति = युक्ति, रूप । नाधि विहाण=निरकुच,
उच्छलल । नव=नवीन, नमस्कार करत हैं । विहाण=प्रात काल
नसि=वध में कर लते हैं ।

१ विहाणू =प्रात काल । नवो=नवीन । बहेना=शीघ्र । दोहिवा=
दुहने के लिये । हेना=पुकार। जगाईं=जगाये । नवनीत=भवसन ।

जिमाव^१ जिव भावता भोग जाणि
 पस्म जसादा जिम^२ चक्रपाणी ।
 अराग अधायें कियो^३ आचमन,
 कपूरी^४ ग्रह पान बीडा^५ कसन ॥ २ ॥

लिया सार^१ मिगा^२ गोचारली^३,
 कर जाज का^४ जम्मुना तट्ट कोला ।
 गुण्या साम आगम्म^५ ऊभी महली,
 हरवा हग्वा हवली ह्वेली ॥ ३ ॥

भरघा^१ माग सिदूर मारग भाळें,
 वह सामलो व्रज मेरी विचाळें ।
 वहै अर ख्वार पिडार वाळ,
 उवा नेह सू तेह^३ गोपी निहाळ ॥ ४ ॥

हरीहो^१ हरीहो हरी^२, धेन हाक,
 झरुला वढी नदबुम्मर^३ चाक^४ ।
 अहोराणिया अब्रला^५ झूल आवें,
 भगव्यान न धेन गोण्या भळाव^६ ॥ ५ ॥

इकी^१ वेवटी चोवट^२ आय ऊभी
 मभाली^३ लियो स्याम^४ मोरो^५ सुरम्भी^६ ।
 हुई^७ नदरी धेन सू धेन^८ हला
 भिलें^९ वाळगा^{१०} जाणि थीरग भेळा ॥ ६ ॥

२ ^१ जिमाव [ग] जिमावो [ङ], ^२ वमी [ङ], ^३ किये [ख ग घ],
^४ कपूरे [ख ग घ], ^५ बीडी [व] ।

३ ^१ लार [ख], ^२ घाजरो [ङ], ^३ घाग [घ पा ख] ।

४ ^१ भरि [व], भरे [ङ], ^२ लेवार [ङ] लवार [ग], ^३ देह [ख ग ङ] ।

५ ^१ हरीहे इरीहे [ख ग], ^२ देरी [ख], ^३ कूवार [ग], ^४ भाळ
 [ख], ^५ घावलो [ख] घावला [ग], ^६ भुनाथ [ग] ।

६ ^१ इकु [ख], एके [ग], ^२ चुवटे [ख], ^३ सपाले [ख ग], ^४ नाथ
 [ख ग], ^५ गोपी [ग], ^६ गचरो [ग], ^७ हुव [ख ग], ^८ गोवाळ
 हवा [ङ] । ^९ भेला [ख], ^{१०} बाहुला [ख] ।

श्रीकृष्ण को जा जो व्यजन इचिकर हैं उ ह ही परोत्त पर यशोदाजी भोजन करवा रही हैं । तप्त होकर भोजन कर लने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण ने आचमन किया और कुरी पान का बीडा ग्रहण किया । २ ।

भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण क शृङ्गार प्रसाधन कर लिये क्योकि आज वे यमुना-तट पर कोई खेल करेंगे । उनका आगमन सुन कर गोबुल बालाए प्रत्येक मकान पर उह देखने को खड़ी हो गई । ३ ।

श्यामल पात्र श्रीकृष्ण दूज की गली में चल रहे हैं और उनके पीछे दुधमुहे बछड़े तथा बाल खाण चल रहे हैं जिहें माग में सिद्ध मरे गोपियां नूतन स्नेह सिक्त होकर माग में देख रही हैं । ४ ।

भगवान श्रीकृष्ण हरी हो ! हरी हो ! कहते हुए गायों को हाक रहे हैं । इधर अहीरनिमा शरोखा पर चढ़ी नदकुमार को देख रही है । उधर अहारनियो का सुन्दर समूह तथा गोपिकाए आकर अपनी अपनी गायें श्रीकृष्ण को सम्हला रही हैं । ५ ।

इकी दुकी गोप बाला चौराहे पर आकर खड़ी हो गई और भगवान से कहने लगी कि—श्याम ! मेरी गाय को सम्हल लना । नद के गो-समूह के साथ अथ गायें इस प्रकार आ-आ कर मिल रही हैं मानों नाल आ आ कर श्रोगगा में मिल रहे हा । ६ ।

२ भावता—इचिकर । भोग—भोजन सामग्री, व्यजन । जिमें—साते हैं । चक्रगाणो—मुखधारो श्रीकृष्ण । शरोग—भोजन किया । घषाय—वृत्त हुए । प्राचमन—हाथ धोना, पाना । ग्रह—लिये ।

३ लिपा सार—कर लिपा, सम्भारपर लिवा । गियार—शृङ्गार । गोचार लीला—गोचारण लीला क । का—कोई । तट्ट—बिनारे । कीना—खेल । प्रागम्प—जाना । हरका हरेषा—देखने के लिए । हवेली हवेनी—मकान मकान पर ।

४ भरषा—भरे हुए । मारग्य—माग । भाळ—देख रही हैं । ब्रज सरी—ब्रज का गली । बिवाळ—मध्य में । चार—पीछे । तध्वार—दुधमुहे बछड़े । विठार—गोप । तेह—उनकी, सिक्त । निळाळ—निहार रही हैं ।

५ हरी—भगवान कृष्ण । येन—गाय । भक्त्या—वातायनों । भाऊ—देख रही हैं । घव्यन भूम—सुन्दर समूह । मळाव—सम्हला रही हैं ।

६ इकी मयगी—इकी-दुकी । चौवटे—चौराहे पर । ऊभी—बड़ी रह गई, ठहरी । माग—श्याम । सुरभी—गाय । हेना—सम्बन्धित । मिळी—मिलते हैं । बाळवा—नाल । जाणु—मानो । भेसा—साथ ।

पृष्ठी^१ नैर^२ नोसार आवी^३ प्रहट्टे,
 त्रिवेणी उळट्टीय^४ ममद्र^५ तट्ट ।
 महकत सोधा^६ तणी सोड^७ माय,
 हरी मजरी^८ तिल्लन वेण^९ हाथे ॥ ७ ॥
 वई^१ वासळी सिगळी नादवा^३ ता ।
 गळें माळ गुजा^४ ब्रज वाळ गाना ।
 सब आमला^५ सामला प्रत्य सदा,
 जमूना तण तीर^६ आटी^७ जदा ॥ ८ ॥

रमेवा राव^१ गाय सू हेव राग,
 रह^३ कीजिये काह भोळ विभाग^४ ।
 वईकुठ रे नाथ रढी^५ विचारी^६
 किया मारया लोक^७ वह^८ विनारो ॥ ९ ॥

पस पार^१ पिडार था दोहू पास,
 लिया^३ लकडी कघ^४ ऊभा हुलाम ।
 घड-गेडिय गेंद मदान घेरी^५,
 घणी घूमर डवर घेर घेरी^६ ॥ १० ॥
 शिले आवता ऊलट^१ हक-झेर
 फिरी राम चोटा कही^३ दोट फेर ।
 मझी आवरो^४ माझिया^५ खेल मानो
 रम सग गोवाळिया रगराता ॥ ११ ॥

७ १ पुरे [ग], पुरा [ख], परे [ङ] - नगर [ख] नगरे[ग] ३ कीषा [ख ग], कीधी [ब] ४ फिरडनरा [ख], फिरडलस [ग], ५ सिधु [ख ग] ६ सुधा [ख], नुषा [ग], ७ सोड [ङ], ८ मुदढी [ग ब], ९ बीण [ख] ।

८ १ बाह [ख ग] २ सगना [ग], सगली [ग] ३ हेवराता [ख ग], ४ ब्रज बाल गोधाग गाता [ख] ५ घायुना [ख], ६ तीर [ङ] ।
 ९ १ सम [ङ], २ रगा [ख] ३ वही [ख], ४ विमगा [ख] ५ सारी [ख ग], ६ विस्तारी [ख], ७ जाघ [ख ग], ८ दुहू [ख] धोनू [ग] वेवे [ङ] ।

१० १ बाल [क], २ दोय [ङ], ३ किया लाकडी वय गेभी कला से [ख ग ङ] ४ गज [ख], ५ घेर [ग] ६ फेरी [ङ] ।
 ११ १ उलटा [ख ग] २ दोट [ख ग], ३ करे [ग ङ], तणी (ब), ४ भाकुडे [ग], भाकडे [ङ], ५ खेतते [ग] ।

सारी गायें चल पड़ों और नगर से निकल कर समतल भूमि में आ गईं जैसे सागरतट पर त्रिवेणी उलट आई हो । श्रीकृष्ण तिलकयुक्त मस्तक पर हरी तुलसी और सोंघा की सुवासित सुगंधि धारण किये तथा हाथों में बांसुरी लिये आ रहे हैं । ७।

बांसुरी एवं सोंघा के बजने की ध्वनि हुई । ब्रज बालकों के शरीर पर गुनाओं की मालाएँ शोभित हो रही थीं । इधर उधर वाले सारे गोप-बालक यमुना तट पर परस्पर शब्द करने लगे । ८।

खेलन के लिए सब बालकों ने एक स्वर से कहा कि—हे कृष्ण ! आप हमारे साथी (भाह) बाट दीजिए । अकृष्णपति श्रीकृष्ण ने अच्छी तरह विचार करके बराबर के लोग दोनों ओर बाट दिये । ९।

दोनों ओर अपार गोप बालक कंधों पर लाठियाँ लिये उत्सहित हो रहें थे । इतने में ही गँडे हुए गेड़िये से गँडे की मँदान के अंदर घुमाने का प्रदर्शन करते हुए घेर लिया । १०।

मुख्य खिलाड़ियों में प्रमुख खिलाड़ी श्रीकृष्ण खेल में मस्त तथा लीन होकर ग्वालों के साथ खेल रहे हैं । वे अघर माय से आती हुई गँडे को एक ही घोट से उत्सद देते हैं एवं 'राम घोट' कहते हुए उस गँडे की घाल को पलट देते हैं । ११।

७ पुळी=चलकर । नगर=नगर । वीसार=निकलकर । प्रहट्ट=समतल भूमि पर, चोद में । तट्ट=किनारे पर । सोंघा=इत्र, माये में डालने का सुगंधित मसाला । सोडि=सुगंधि । माये=मस्तक पर । मजरी=तुलसी । बेणू=बांसुरी । हाये=हाथ में ।

८ बई=बनी । बांसुळी=बांसुरी की । सिगळी=छोंगी की । माववा=ध्वनि । ता=बहाँ पर । गाता=घरीर पर । भामला समना=इधर उधर बात । प्रत्य सदा=परस्पर शब्द करने वाल । माहीर-जहा=महीर बालक ।

९ रमेवा=खेलने के लिए । डेक=एक । राग=गायन से । विम गै=हिम्नों में बाँटना । रुडी=अच्छी । सारखा=समान । बहू=दोनों । किनारी=किनारे, तरफ में ।

१० पखेपार=अपार । कष=कंधों पर । हुनास=उत्सहित हो रहे हैं । मैशन=घोलने का घोसान । पणू=बहुत । घेर=घेरे में ।

११ ऊपट=मोड़ देने हैं । केर=प्रहार से । फिरि=घूमकर, पुन । घोट=घलती हुई गँडे । मझी=मुखा । भाकरो=नेज । मातो=मस्त । रम=खेल रहा है । रग राती=लीन होकर ।

मिलै चाट रामो^१ सरो^२ दाट माये,
 हुई दुई^३ मरला तणी हल हाथ ।
 चढाय^४ घणू मावड तीर चाड^६,
 जमूना तग नागिया नीर जाड ॥१२॥
 दडी^१ लार का^२ हो च्यो वच्छ^३ डाळी
 भरी वप^४ काळी द्रै नाग वाळी^५ ।
 काळीनाग रा^६ का ह सभाळ केवा
 लवी जाण वूत्रो दवी^६ मच्छ लेवा ॥१२॥
 मड्यो^१ दूसरो खेल नेउत माये,
 हिव^२ ऊनरी वात गोवाळ हाये ।
 कर^३ श्रीन गटा नमतेय^४ काहा,
 जोव धेन घडीक^५ वाठे जम ना ॥१४॥

जदुनाथ काळी रामो^१ राथ जोड,
 घणी भोम चात्री चडा वान घाड ।
 ऊभा गाय गावाळ^३ बुरत जार,
 हाहाकार हक्कार समार सार ॥१५॥
 मुण्यो वात आघात माता साही,
 जसोदा टळी वदळी^२ सब जेही ।
 सप्राहे^५ सग्री लार हाली सयाणी
 रहावी त्रिचालेयकी नदराणी^३ ॥१६॥

१२ ^१ रामो [ग], रामा [र] ^२ सरो [ट व] ^३ दुई [ग], दुद [ड],
^४ चढाव [र], ^५ दोट [ख ग], फेर [ड] ^६ चाडे [ड] ।

१३ ^१ दडी [ख ग] ^२ दू [ड], ^३ घात्र [ग] ^४ भाक [ख],
 भाप [ग] ^५ भाणी [ख ग ड] ^६ सु [ख र] ^७ द्रै
 [ख] ।

१४ ^१ विम [ख] ^२ रि [ड] ^३ करत्रिण [ख], ^४ नम देव
 [ख], नमदेय [ड], ^५ डाडक [ख] ^६ वेधीक [ग], धुकार
 [ख] ।

१५ ^१ सरोसी वप [ग], ^२ ऊमी [ग], ^३ गोवार ।

१६ ^१ कदळी [ग], ^२ सप्राहे [ग], ^३ द्रत्र राणा ।

दोनों ओर के खिलाड़ियों के सम्मिलित हाथों से गेंद को सभी खिलाड़ों पर आसने सामने प्रहार होने लगे तथा यमुना तट पर अत्यन्त निकट ले जाते हुए गेंद को यमुना के गहरे पानी में डाल दिया । १२।

गेंद के पीछे श्रीकृष्ण वृक्ष की डाल पर चढ़े और जहाँ पर कालिय नाग का कुण्ड था उसमें छलांग लगाई । श्रीकृष्ण, कालिय नाग का वर स्मरण करके इस प्रकार कूदे मानो लुम्बक (किलकिला पक्षी) मच्छी प्राप्त करने के लिए समुद्र में कूदा हो । १३।

खेत जा रहे खेप के ऊपर अथ खेत रच गया । अब ग्यालों के हाथ सब बात चली गई । श्रीकृष्ण को तीनों खड नमस्कार करने लगे और यमुना व तट पर लड़ी हुई गायें स्तम्भ होकर देखने लगीं । १४।

'यदुपति श्रीकृष्ण कालिय से बाहु युद्ध करेंगे' यह बात घोड़े चक्कर (अत्यन्त तीव्र गति से) दूर दूर तक पहुँच गई । गायें एवं ग्याल खड हुए आसनाद पृथक् विलाप कर रहे थे । सारे विश्व में हाहाकार मच गया । १५।

यह सुनकर स्नेहमयी माता यशोऽज्ञा इष बात के आघात में बदली स्तम्भ की तरह गिर गई । ममतादार सखिया ने उर्ल सन्हाला जीर फिर वे उनके पाँच पीछे चलने लगीं किन्तु चलने चलने वे माग में ही थक गईं । १६।

१२ चोट = प्रहार । सामी = सामने । सभी = सारी । खली = खिलाड़ियों । तणी = की । साकड = निकट । खालियो = डाल दिया । नीर जाई = गहरे पानी में ।

१३ पार = पीछे । प्रचद = वृक्ष । डाली = गाम्रा । भप = छलांग । काली वृहै = कालिय नाग के कुण्ड में । मभान = स्मरण करके । बेबा = वर । लकी = लुम्बक पक्षी (राजस्थान में हमें किलकिना भी कहते हैं) । मच्छ = मच्छी । इधी = समुद्र । लवा = लेने के लिए ।

१४ खेतत = गेने जात हुए । मथ = ऊपर । हिव = घब । भीन = तीन जुव = जसती है । पडीरु = स्तम्भ । कोठ = तिनारे पर ।

१५ समी = सामने, से । बाव जीव = बाहु युद्ध करेंगे । भोम = पृथ्वी । ऊमा = लड़े हुए । मूरत = विनाप कर रहे थे । पार = प्राप्त । सार = समस्त ।

१६ भाघात = प्रहार । दळी = गिर पयो । मम = स्नेह । मवाट्टै = मग्धान करके । हायो = पक्षी । सपाणी = चतुर । रहायी = राह व । विचालै = भाव में । पक्षी = निविच हो गई ।

तव नदरी गर^१ आहीर टोळा
 रवें आपड हेव हेवा^२ यगोळा^३ ।
 जुव^४ जोपिता जूय भेळी जसूदा,
 वपयो^५ हुई, वानहो भेघ तू दा ॥१७॥
 विह^१ लोचने नीर घारा बहती,
 वनेयी^२ कनयी जसूदा बहती^३ ।
 वउदी^४ तण आइ^५ लोटत^६ वाठ,
 गयी जाणि^७ गितामणि रव गाठे ॥१८॥
 बलहेव वूझ्यो^१ दिवाळघो^२ गुदामा,
 रम्यो साम ते ठाम जोवत रामा ।
 लिया जीह दते नही लीक^३ लोपी,
 गुहे^४ गाय गोपाळ झूरत्य गोपी ॥१९॥
 ऊभी घूट^१ हेको करी^२ जात आरा,
 थभेरी म^३ हुका लहैका मथारा ।
 जसोदान के^४ झप साघी जमना,
 पहे लाभियो मान हू जात पना^५ ॥२०॥
 अचाणक ऊभी दरद्वार आव,
 मिळी नागणी हेव हुका मिळवे ।
 इख^१ वाल गोपाल पामो अचभा,
 रही दोवळी^२ नागणी देव रभा ॥२१॥

- १७ १ नारि [ग घ ड] = हानी [घ], २ हनोले [ख घ], पलोले [ग ड],
 ४ जाई जोवती [ख ग], ५ बावीयो [ग] ।
 १८ १ बहे [ख ग] २ काहुठो वाहुठो [ग], ३ करती [ख] ४ बालीद्री
 [ख], कुलीद्री [ग], ५ घावि [ख ग], ६ झूरति [ख], ७ नग [ख ग]
 १९ १ झूम [ड घ] २ दिखावो [ख] लिखाले [ग घ घ] ३ निज [ख ग]
 लभा [घ], ४ गयो [ख में नहीं ग] ।
 २० १ घोट [ख ग], छोट [ड] २ करिजास [ख घ] करिनास [ग], कर
 जास [ड], ३ यभ राम ऊभी [ख घ], यभे ऐम [ड] ४ यह पद्यां
 नहीं है [ख ग घ], ५ वेहलो मरे मात हू तात प ना [ड] ।
 २१ १ वाम [ख ग] २ देवळी [ग] ।

तमो नद के पीछे अहीर समूह एक दूसरे के कंधों को पकड़ पकड़ कर चलने लगा तथा छो समूह में यशोदाजी घातक के समान बनी हुई क हैया रूपी मेघ दू दो को देख रही थीं । १७।

यशोदाजी कहैया ! कहैया ! कहती हुई, दोनों आँखों से अधुंधारा बहाती हुई, यमुना के तट पर लोट रही थीं माना किसी दोन हीन के पास से चित्तमणि रत्न लो गया हो । १८।

वलदव के पूछने पर सुदामा ने जिस स्थान पर श्रीकृष्ण खेले थे वह स्थान बताया । उसे यशोदाजी देख रही थीं । पास ही गाँव, ग्वाल बाल और गोपिकाएँ, दाँतों तल जीम दबाये हुए विलाप कर रहे थे । १९।

समस्त गाँव, गोप एवं ग्वालिनिया मानसिक पीडा न रुकने के कारण उच्च स्वर से आर्त्तनाद करती हुई शूय बनाए खड़ी थीं । इधर भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना के जल में छलाँग लगाई । उनको पानी के अंदर माग मिल गया । वे जल में ऐसे विचरण कर रहे थे मानों सप पानी के अंदर विचर रहा हो । २०।

श्रीकृष्ण को अकस्मात् दरवार में जाया देव समस्त नागिनियाँ परस्पर एक दूसरे से मिलीं । बानक गोपाल को देखकर विस्मय को प्राप्त हुई तथा उनके आसपास अक्षराज्यों की तरह एकत्र हो गई । २१।

१७ तब = तभी । आहीर टोळ = अहीरों के समूह में । लड = चले । पापड = पकड़े हुए । हेक हेका = एक दूसरे के । लपोल = कंधे । जुव = देखती है । जोपित शूय = स्त्री समूह । ननी = साथ । बपयो = चातक पत्नी ।

१८ बिहूँ = दोनों । लोचन = नेत्रों से । बहती = बहाती हुई । कहती = कहती हुई । बलदी = यमुना । तण = के । काठ = बिनारे । बाणु = मानो । रक = नील । गाँडे = पल्ले से ।

१९ वूड्यो = पूछा । रम्यो = वेला । ते = वह । ठाम = स्थान । जोवत = देख रही थीं । जीट = जीम । लीक = लकीर । गुठ = समीप । भूराय = विलाप कर रहे थे ।

२० घूट = शूय जटया । हेको = एक । धारा = घातनाद । धभेरी म = दहरी नहीं थी । लका = मानसिक बदनाएँ, कसकें । लहैका = घात । मधारा = नदी । पहे = माग । लाभियो = मिला । पना = सप ।

२१ मवाणक = मवम्मात् सत्सा । इय = देवकर । पामी = पार्श्व । मचमा = प्रा चय । दावळी = इद गिट, आसपास । देवरमा = अक्षरा ।

जप ^१नागपत्नी^२ रघुनी न्य जोनी,
महाभद्र जाती तणा वान^३ मोती ।
पुणी^४ सामळी पात्र पोळा पिछोरा,
वणा ऊपरा नग ओप कदोरा ॥२२॥
पगा^१ धधरी रोळ आणद पुजा,
गळ हार मोती रळ माळ गुजा ।
विच दूळडी हेव चीकी विराज,
जिसी^२ राजवी वेहरी नग्य राम ॥२३॥
बिहू^१ वव वाज् तणा^२ नग वाहै,
मणी^३ नग हीरा तणी ज्योन माहै ।
अहीनारि जप लई^४ मोल ऊची,
पहच प्रभूर लटक प्रहूची ॥२४॥
सव सुदरी मुदरी देग मोही^१
वळ दाडिमें दत योनी विमोही ।
जधूरै^२ अमृत न जाय अघाई,
जिगे कु डळा लोळ^३ वपो^४ खाई ॥२५॥
इख नामिका सिध्द^१ दीपक ऐरी,
कळी चप जाण रळी^२ तप केरी ।
नवा नेह दीरघ्घ पवज नेत्र
सोभा मीन रजन मृगा महेन^३ ॥२६॥

- २२ ^१ जपि [स] जोव [व] ^२ पुत्री [र] ^३ नाग्य [स व],
^४ पुण [स] पणा [ड] ।
२३ ^१ ववे [ग] पाए [स], - इमो [व]
२४ ^१ वाही [स] घरी [ग], ^२ बाजूणा [व] ^३, मणि जोत
हीरा तणी घग माहै [स] ^४ लीया [स] घही परी रीफ
मुपक ची [ग] ।
२५ ^१ मोही [ग घ ड], ^२ गधरे [स] ^३ वान [व] ।
२६ ^१ तिप [ग], जाणि [व] ^२ पुनी [व] ^३ सनेत्र [ग] सवेने [ड]

वे क्षत्रिय बालक धीवृष्ण क स्वरूप को देखती हुई कहने लगी कि—अरे ! इनके बानों में तो महामुद्र जाति का मोती है तथा श्याम गात्र पर पीताम्बर सुशोभित है एवं उसका किनारे पर नगीने और करघनी शोभायमान हो रहे हैं । २२।

परी में धानद का समूह, पुष्पधर्मों का शब्द हो रहा है तथा गले में मोतियों का हार एवं गुजाआ की माला झूल रही है । साथ ही दो लटवाली सांकल के बीच में एक चौकी शोभा द रहा है । जिस प्रकार का यह राजकुमार है उसका ही अनुरूप यह सिंह नर शोभित हा रहा है । २३।

दानों बाहों पर बाहुबद्ध बांध हुए हैं जिनका अन्तर मणि, हीरे आदि नगीनों की ज्योति प्रकाशमान हो रही है । एक दूसरी नागिन बोली—अरे देखो ! नगवान के पहुँचे में जो यह पहूची लटक रही है, यह तो बहुत ही ऊँची कीमत में खराब गई है । २४।

सभी सुन्दरिया मुद्रिका का दलत ही मोहित हो गई । फिर सम्मोहित करने वाली दादिम क बोजों के समान दातों की पक्ति थी जो धपराभृत यान से तूल ही नहीं हो रही थी, साथ ही कपोल चञ्चल कुडलों की धामा से प्रकाशमान हो रहे थे । २५।

इनकी नासिका बोधक की लो के समान (तोली) दिखाई दे रही है वह मानों चम्पे की बली एवं छांप की नोक है । नयीन स्नेह के समान सवदनशील बड़े नेत्र, कमल क समान शोभायमान हो रहे हैं । इसप्रकार मानों मोन, खजन एवं मृगों की समी छाटा यहाँ एकत्र हा गद है । २६।

२२ अप=कहने लगी । खत्री=क्षत्रिय । ओती=देखती हुई, ज्योति । साँभलो=व्याभवण का । गात्र=शरीर । शोभा विद्योरा=पील रण का वस्त्र । कण्ठो ऊररे=किनारे पर । नग=नगीने । शोव=सुशोभित हो रहे हैं ।

२३ रोळ=शब्द । लळ=झूल रहे हैं । बिच=मध्य में । केहरी नकल=दोर का नाचून । राज=कबला है ।

२४ बिहू=दानों । बाहू=भुजाओं में । ओती=ज्योति । माई=अन्तर अप=कहती है । मोल=कीमत । पहूची=पहुँचे का धामुवण ।

२५ मुदरी=मुद्रिका समूही । मोही=मोहित हो गई । यळ=फिर । दादिमै=दादिम के बोजों के समान । धबूर=धपरी के । मघाई=वृत्ति ।

क्रिय=प्रकाशमान । सोळ=चवन, वणवानि । माई=पतिबिम्ब ।

२६ तिष्व=की । एरी=इनकी । चप=चम्पा । सली=नोक । सप=लोप नामक धाग । डोरष्व=बड़े । पकज=कमल । शोभा=शोभा ।

दोहू भ्रुकुटी पोर हू^१ भेनि हू है,^२
 भ्रम^३ भ्रग मृता अली^४ जाण भू है ।
 अली सतुनी जाणि वीवी अलकव,
 तणी केमरी वस्सतूरी तिलकव ॥ २७ ॥
 यधी चोळमा^१ रग रगी विरगी,
 सुहै ऊपरा पाय लागी सुचगी ।
 चवे^२ नागणी चद्रका मोर ची ही,^३
 ओपे चोप^४ पावम घटटा अछेहो ॥ २८ ॥
 अराहै सराहै करै^१ आवलोक,^२
 रूधी नाग त्राना तणी राज लाव ।
 ऐमी^३ भागणी वृण जे वृष^४ आयी
 हिटोनी घडाड^५ घर हू उरायो ॥ २९ ॥
 हूई रूपमयी देव देख^१ हैरान्न^२
 जप जागमी नाग रापो जनन ।
 अरु^३ दागव बाळ^४ होसी अवारो,
 पगल्ले पगल्ल महल्ले पधारी ॥ ३० ॥
 रहा ता घर दाव^१ दूज रहावू,
 मारी घाट वराट एय न मावू ।
 चमरी चमकी सबे चित्त^२ चेतो,
 लुळो^३ पाय लागी वळ लूण लेती ॥ ३१ ॥

२७ ^१घोर [ख,ग], ऊर [ङ], श्यामधी देग देहे [च], ^२द्रोह [ट] ^३भ्रमे [स,प], ^४सखि [स,ग,प] ।

२८ ^१चोळ [ख], रगसई रग रते [प] ^२तव [ट] ^३मूरसोही [ख], मोर तेही [घ,ङ], ^४चाप पारप [ख], चोप पावर [ग], उप साख पारिख [घ] ।

२९ ^१रूई [ख] ^२कीयी [घ] पणू [ङ] ^३आविलोके [ग] ^४मग्ननाक [ङ], ^५एही [ख], ^६प्रुधज [घ] ^७अवारो [ख,च], घवारो [घ] ।

३० ^१देखी [ङ] ^२हरने [ख], हराने [ग] हिरने [ङ] ^३अशो [ख], अरो, [ग], भोग [ङ], ^४दान [ख] ।

३१ ^१देव [ख,ग], आव [घ,च], ^२चेन [ग], ^३साणू [ग,ग] ।

हे सखी ! दोनों मृकृटियों के किनारों को देखकर ऐसा भ्रम होता है मानों दोनों भीहों के ऊपर मोटे मो रहे हों और अलकें मानों भ्रमरों की शृंखला हो । इसी प्रकार केगर तथा कस्तूरी का तिलक भी गोमायमान हो रहा है । १२७।

विविध रंगों में रंगी हुई घोळमा बांधी हुई है और मस्तक पर देखी पगड़ी मली गोमित्त हो रही है । इसके अतिरिक्त मयूर घटिका भी लगाई हुई है । नागिन कहती है कि—इतकी प्रमा तो वर्षा श्रुतु की अतहीन घटा के समान प्रतीत हो रही है । १२८।

इधर उधर से श्रीकृष्ण को देख कर नागलोक का दरबार साधारण लोगों में खचाखच सर गया और वे लोग कहने लगे कि—ऐसी कौन माग्यवान है जिसकी खोज से इस (बालक) ने जन्म लिया और जिसने अपने घर पर हिंडोला छालकर हुलराया । १२९।

स्वरूपमय भगवान् श्रीकृष्ण को देख कर सभी आश्चर्यचकित हो गए और कहने लगे—नागराज जय जायेगा, इस बालक को दत्तपूर्वक रखो । ऐसा मुनकर नागिनें भगवान् कृष्ण से कहने लगीं—दास ! तुम्हें बेर तो होगी फिर भी बाप धीरे धीरे हमारे महल में घबे चलो । १३०।

यह मुनकर भगवान् कृष्ण ने प्रत्युत्तर दिया कि—यदि तुम्हारे घर रहूंगा तो किसी धन्य अवसर पर रहूंगा, मेरा स्वरूप विराट है अतः अभी यहाँ नहीं समा सकता । भगवान् क मुल से इस प्रकार का कथन सुनकर सभी नागिनें चौंक चौंक कर अपने मन में सावधान होती हुई भगवान् के परो में भुक्कर पठने लगीं और बलया लेन लगीं । १३१।

२७ कोर=किनारा । भ्रम=मह । प्रती=सखी भौंसा । प्रूहै=भौंकों में । सखी=शृंखला । कीपी=बनाई ।

२८ घोळमा=बतमान चाल के स्थान पर पहना जाने वाला वस्त्र । रंगीविरंगी=विविध रंगोंवाली । खानी=देखी । चणी=प्रती । उप=शोभायमान । घोप=काति । पावस=वर्षा ऋतु । अडेही=अतहीन ।

२९ धराहै=विना मार्ग के । कर भावलोड=देख करके । रूपी=कतू हो गया, भर गया । लोके=साधारण लोगों से । जे=जिसकी । कृष्ण=कृष्ण । हिंडोली=पजना । हुलरायो=दुखार किया ।

३० हैरान=चकित । जर्प=कहने लग । जत न=दत्त पूर्वक । बाल=बालक । पधारी=धनो ।

३१ दास=अवसर । घाट=स्वरूप । बराट=घनत । एबी=इस स्थान पर इसल । माडू=समा चकता है । बेडी=सावधान हुई । चुन्नी=भुक्कर । बूण=बलया ।

सुण्यो रप वेदे सु पेरयो गवेही,^१
 वडा भागरी नागरी नारि^२ वेही ।
 माहो माह^३ आणद दाग^४ मुरवरी,
 वोलाव^५ भळ^६ नाय नाखी भुरवकी ॥३२॥
 वठाहूत आपी वठ वाज^१ वेहा
 ग्रहा भूलियो वापरी, साप गेहा ।
 भली^२ नागणी नाखियो राह भूली,
 दवी^३ आपरी लाज लीघो^४ दडू गी ॥३३॥
 गटवक मुहै^१ नागणी वोठ खारी,
 प्रभू जागसी^२ मूझ पाछा पवारो ।
 काळो नाग^३ सू गीजिय वगि वानी ।
 पडघो^४ तात मोच चढ मान पानो ॥३४॥
 नही^१ नागणी वोळ तेहा^२ निकाम
 वम रस्सण इस्मण विग्लवा^३ मे ।
 किही^४ कोर चपी, रही^५ मा^६ बकाव
 इसी वाळ देखी दया मूक्ष^७ आव ॥३५॥
 हजारो मुख्या^१ जागसी नाग हेवा,
 अहीलो^२ न छाड निराधार ऐवा^३ ।
 महावाळ काळो न वा^४ वाळ माने,
 पडी दोतडी^५ आज ही^६ राघ पान ॥३६॥

- ३२ ^१ सुवेई [घ], सवायो [ग] ^२ नागो भूतो न प्रायो [ग], ^३ महामोह
 [ख ग] महामोद [घ] ^४ दप मुरकी [ख ड] ^५ मुलाहं मे [ख ड]
^६ वळो [ख ञ] ।
- ३३ ^१ वाप [घ] ^२ भोळी [ख घ], भूली [ग], ^३ लिघ [ग] दिघी [ड],
^४ लाघी [घ], दीघं [ग] भापे [ङ], राख [घ] ।
- ३४ ^१ मुन [ख ग घ], मूही [ड] ^२ जागिस्य [ख घ] ^३ बुळी [ग],
 वानी [ड], ^४ पार [ख] परा [घ], परो [ङ], ।
- ३५ ^१ अहो [ख] ^२ इहा [ग] ऐसा [ङ], ^३ ब्रवघाते [ख], ^४ बहे
 [ख] वही [ग], वही [ङ], ^५ रहे [ख], ^६ वाभ्य वाव [ख], वहे
 घापि [ग घ], भाव वाव [ङ] ^७ मोप [ङ] ।
- ३६ ^१ मुहे [ग घ] ~ लहीली [ख], न हूली [घ ड], ^२ सेवा [ख],
 नेवा [घ ड], ^४ न वपू [ख], ^५ दो वणी [घ], वीवडी [ङ], ^६ इ
 [ख ग] ।

भगवान के जिस स्वरूप का वचन वेदा में सुना या वही स्वरूप आज सबने प्रत्यक्ष देखा अत वे नाग नारियाँ बड़ी भाग्यशालिनी हैं । नागिनें परस्पर हसती हुईं अपार आनन्द का कथन करने लगीं । इनने मे ही भगवान के मोलों ने उन पर फिर बुरकी डालदी । ३२।

एक नागिन कहने लगी कि—लाला ! तुम कहा से आए हो और यहां पर तुम्हारा क्या काम है ? कहीं तुम अपना घर तो नहीं भूल गए हो ? यह सप का घर है । ऐसा सुन कर भगवान धीकृष्ण बोले—हू मन्त्री नागिन ! मैं माग भूल कर यहां नहीं आया हू वरन् तुम्हें तुम्हारी प्रतिष्ठा रखनी है तो मेरी गंद जो तुमने लेली है उसे लौटा दो । ३३।

हू नागिन ! तब यह कटु वचन—“मेरा स्वामी जाग जाएगा तुम वापस चले जाओ” मेरे हृदय में छटक रहा है । नागिन बाली—मैं आपसे फिर कह रही हू—आप कालिय नाग से शीघ्र किनारा कर लो अन्यथा तुम्हारा पिता इधर उधर खोजता फिरेगा और माता क (स्तनों में) स्तन बढ़ जाएगा । ३४।

भगवान धीकृष्ण कहने लगे—नागिन ! तुम्हारी रसना के अवर घुट्ट सप के विष के समान निवास करनेवाले यचन मत निकालो । किसी अन्य नागिन ने उसका पत्ला दबात हुए कहा—अरी ! ठहर, क्यों बकवास कर रही है । ऐसा बातक देखकर मुझे दया आ रही है । ३५।

क्योंकि हजार मुखोंवाला कालिय नाग अभी जाग उठेगा और वह शहीला इस प्रकार के आश्रयहोन को नहीं छोड़ेगा । महाकाल-स्वरूप कालिय कोई बालक नहीं जानेगा ! (बालक समझ कर नहीं छोड़ेगा ।) आज यह कृष्ण स्वरूप बकरी, वाय स्वरूप कालिय के पाल पद गई है । ३६।

- ३२ पेश्यो = देखा । मांही मांही = परस्पर । दाप = कहने लगीं । मुरककी = दिसत हास्य से । बुलावे = बर्षों ने । नांखी = बाली । मुरककी = कगीकरण प्रीपधि, मुरकी ।
- ३३ बटाहुत = कहाँ से । घटै = यहाँ । केहा = कहा । प्रही = घर । नावियो = नहीं पाया । राह = माग । सीवो = बिधा हुआ ।
- ३४ मुहै = मेरे को । सारी = कटु । मूक = मेरे । पाछा = वापिस । बग = शीघ्र । जानो = किनारा । सीक = दू बना फिरेगा । पानो = स्तन्य
- ३५ गेहा = इस प्रकार के । रसणो = रसना में । हसने = हसने वान । विश्रया से = विषय के समान । किही = किमी ने । कोर = किनारा चपो = बचाया । रही = ठहर । मू क = मुझे ।
- ३६ हेवा = मधो । शहीलो = शही । निराधार = आश्रयहोन । भंवा = ऐसा, इस प्रकार का । मान = समझेगा । गोटड़ी = बकरी । पान = पाते ।

जावो^१ नागणी नाग वैगी जगाडो,^२
 अठ गाडसा आज वड^३ अवाडो ।
 रडीज^४ इसा^५ मात आग^६ रडाळा,
 चवीज नही बोल, ए काळ चाळा^७ ॥३७॥
 न दीठो रुदीय^८ न^९ नेत्र निहाळी,
 कान ही नगी^{१०} साभळघी नाग-याळी ।
 दरव्वार काळी तणी^{११} मेल्लि जावी,
 खड जम राणा^{१२} न कोलाभ लावो ॥३८॥
 चाळा मा कर^{१३} सामुहा जुद्ध चाळा,
 बजारघा^{१४} न थारे अज चाळ वाळा ।
 पेलीज रमीज^{१५} पिता^{१६}-मातु खीळा,
 भरीज नही आभ सू वाय भौळा ॥३९॥
 जुडवा^{१७} जु तू^{१८} नाग वाळी जगाव,
 अज मुख प-पान रो^{१९} मोडि^{२०} आव ।
 जुन वस थारी परस्स मनही,^{२१}
 वाळी नागसू जुद्ध^{२२} रोलाग केहो ॥४०॥
 च्छमा^{२३} वाल देखे^{२४} विसू^{२५} वाळ छेड^{२६}
 कटववा अटववा^{२७} नही तूझ वेड^{२८} ।
 दुरगा दुवाहा दुहल्ला^{२९} दुसल्ला,
 भडा रा नही जव्वला झूल^{३०} भरला^{३१} ॥४१॥

- ३७ ^१ जा हे [ख] ^२ जगावो [ख] ^३ वडे [ग घ] दोनू [ङ], ^४ इसू
 मात [ग घ] घतोमात [ङ] ^५ चविडोली मितप्य प्रकान वाला [ख],
 थव बात एह थवा काळ चाळा [ग] पवई वोन ऐई चवई चक्काळा
 [घ] ।
 ३८ ^१ लडुयेप्य [ख घ], जणियाण [ग], कदेईन [ङ] जडीकेण
 [घ] - छी [ख], काही नही [ङ], ^३ न थयो [ख] निवयो [ग],
 विवे [ङ] ।
 ३९ ^१ करती [ख], समा [ग घ], ^२ बघे थोन थारे [ग], बघेरान थारे
 [ङ], ^३ यह पद्यांग नही है [ख ग], घणू [ङ] ।
 ४० ^१ जडेवा [ख], ^२ न तु [ग], ^३ रा [ग], नही है [ङ], ^४ मोड
 [ख], ^५ जुन वम थारी परास स जेहो [ख घ घ], ^६ सम्राज [ङ] ।
 ४१ ^१ छावा [ख], छत्रा [ग] थवा [ङ], छवि [घ], ^२ कसू [ङ],
^३ अटववा [ग], हटववा [घ], ^४ तू हामी [ख], तू हाटव [घ],
 थोष^५ [ख], कुत [ङ], ^६ माला [ङ] ।

ऐसा सुनकर भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे—हे नागिन ! तुम गीघ्र
 खाकर कालिय की जगा दो हम दोनों यहां पर अछाढा रचेंगे । नागिन
 बोली—लाल ! इस प्रकार का रोना मा के सामने रोना (इस प्रकार मा के
 सामने सघलना) यहां ये काल को प्रेरित करने वाले वचन मत कहो । ३७।

तुमने कभी कालिय नाग को आंखों से निहार कर नहीं देखा
 है और न कानों से सुना है । कालिय क दरबार की ममराज भी बापा रस
 कर चलते हैं और तुम भी कोई लाभ नहीं उठाओगे । ३८।

तुम युद्ध को प्रेरित करने बापा चालें मत चलो (अपनी शक्ति और
 उम्र से बढ़ करके स्वयं मत करो) । अभी तक तुम्हारे वधपन के केशों का
 मुण्डन भी नहीं हुआ है । तुम अपन माता पिता की गोद में खेलना,
 कूदना । मोले । आकाश की बाहुपाय में नहीं मरा जा सकता । ३९।

तुम कालिय नाग को युद्ध क निमित्त जगाते हो । अभी तक तो
 तुम्हारे मुंह से दुग्ध-पात्र की गंध आ रही है । हृदय में लगाकर स्पृश
 करने असौ तुम्हारी अवस्था देखत हुए कालिय नाग से युद्ध का लगाव
 कंसा । ४०।

मैं बालक देखकर कहता हू कि—क्यों मोत की बुला रहा है । तेरे
 पास सेना जादि भी कुछ नहीं है और कुरत्यय, दुबह, दुलम, दुड प एव
 श्रेष्ठ योद्धाओं का अच्छा समूह भी नहीं है । ४१।

३७ गीघ्र=शीघ्र । मठ=यहां । मघारो=दगल । रबीर्ष=रोना (क्रि०)
 रवाळा=रोना । कबीज नहीं=नहीं कहना । काळ पाळा= दान
 के उपद्रव, काम को प्रेरित करने वाले ।

३८ दीठी=पैसा । निहाळी=निहार कर । नपी=नहीं । सामळपी
 =सुना । बापी=बापा । खड=चलते हैं ।

३९ पाळा=पाल, सारारत । मा=नहीं । मामुसा=समुस । जुद्ध-
 पाळा=युद्ध के उपद्रव, युद्ध को प्रेरणा देने वाल । कधारपा
 =काटे । मत्रे=ममी तक । वाळ=केग । सोळा=गोद में ।
 माम=माकाश । बाप=बाहुपाय ।

४० पुदेवा=युद्ध करने को । प पानरी=दुग्धपात्र की । सोदि=गंध
 जुन=देखकर । पररसं=प्यार करें । लाग=लागव, कर ।

४१ क्यर्वा=कहवा है । किमु=क्यों । कडवकी घटवकी=भ्रमण घीम
 मय्य । कड=पास । कदारा=कीरी क । मभना=श्रेष्ठ ।
 मूम=समूह ।

न को^१ हैदळे पदळे मेघ नद्दा,
 जुड वा न को उम्मरा^२ नाम जद्दा ।
 सचाळा भुजाळा लकाळा न साथी,
 हठाळा पटाळा दताळा न हाथी ॥४२॥
 घाडा ग भटा रा नही घाग्रट्टा,
 नही घूघरे पापरै रोळ थट्टा ।
 माहै बाहु^३ बाजू हजार न भक्ती,
 तही^३ अगि अग, नही जीवरक्षी ॥४३॥
 ठवै हाथळा राग^१ रागै न ठाई,
 प्रहूच^२ प्रहूची लोह मीजा न पाई ।
 जडो छक्कडी^३ टोप नाही जरद्दा
 गुपती न छती त कती न गद्दा ॥४४॥
 फिरै डवरी सैय^१ नाही फरस्ती,
 वडै वीळ^२ कट्टार कस्ती न^३ कस्ती ।
 टकारी न भारी न अडार टाकी,
 पपाण^४ न वाण न रुमाण वाकी ॥४५॥
 नफेरी न भेरी न निस्साण-नद्दा,
 रिणतू^२ वाज न गाज र्वद्दा ।
 त को बाजद पाय^१ पायाळ^२ वज्जई,^३
 छिण ऊफण रेण रणा न छज्जई^४ ॥४६॥

४२ ^१ नही [ड], ^२ रणण चघाह जद्दा [ड] ।

४३ ^१ बाहु बाहु [ख], ^२ महवी [ड], ^३ नही जीण धंगासगत जीव रखी [ख घ], जुड [ड] धंग घणे [घ] ।

४४ ^१ हाथ रगीत ठाई [ख ग], ^२ प्रहूच प्रहूरै [घ घ], ^३ जडो छक्कडी [ख ग] ।

४५ ^१ सेल [ख ग] ^२ कवीली [ड], ^३ स [ड], ^४ बघाण [ख ग ड],

४६ ^१ बाजनों पाय [ख], बाजनों पाय [ड], ^२ पद्दमाळ [ख घ], वेपाल [ड], ^३ वाई [ड], ^४ छाई [ख ड] ।

नहीं कोई ह्यदल एव वैदलों का मेघ गजन हो रहा है । सबने के लिए चुने हुए प्रसिद्ध उमराव भी नहीं हैं । चंचल भुजाओंवाले सिंह के समान साथी भी नहीं हैं और हठील घोड़े एव बड़े बड़ दातों वाले हाथी भी नहीं हैं । १४२।

घोड़ों का और सुमट्टों का समूह भी नहीं है और पालरों में लगे हुए घुघरुओं की मनकार भी नहीं सुनाई दे रही है । बाहुओं के अंदर हजार फीलों वाला बाजूबंद तथा शरीर पर बस्तर एव जीवरत्नी भी नहीं है । १४३।

वीरों के हाथों में तथा रातों में मयास्थान राग के कवच भी नहीं दीख रहे हैं और पहुंचो पर पहुंचिया तथा परों पर लोहे के मोजे भी नहीं हैं इसी प्रकार छक्कियों द्वारा जटित गिरस्थाण युक्त कवच भी नहीं है । तुम्हारे पास युक्ति, शक्ति, कर्तारी एव गदा नायक शस्त्र भी नहीं दिखाई देते हैं । १४४।

विस्तृत सेना में फरसिया भी नहीं फिर रही है और कटियस्त्र से बटारी भी कसकर बांधी हुई नहीं है । भीषण टकार करने वाले घनुष भी नहीं दिखाई देते हैं । और तो और मामूली बाकी बचाए एव बाण तक भी पास में नहीं हैं । १४५।

नफीरी, मेरी, नगारे एव रणतूर भी नहीं बज रहे हैं और उनसे होने वाला नाद भी नहीं हो रहा है । घोड़ों के पद प्रहार से पाताल भी नहीं बन्न रहा है (या घोड़ों के पावों में डाली हुई पायलें भी नहीं बज रही हैं) तथा सौम्य पद रज से सूय भी ढका हुआ नहीं दिखाई दे रहा है । १४६।

- ४२ जुड़ेवा = मुद्र करने के लिये । उम्मरा = उमराव । नामजदा = चुने हुए । सचाळा = चंचल । सकाळा = सिंह । पटाळा = घोड़े ।
- ४३ पापरटटा = समूह । पातर = बस्तरों की । रोळ = मनकार । यट्टा = समूह ।
- ४४ ठव = मयास्थान । ठाई = जवाकर, युक्तिपूषक । पाई = परों में । जरदा = कवच । छतो = शक्ति ।
- ४५ बबर = समूह, विस्तार । बडे चीळ = कटियस्त्र म । घटार टकी = घनुष । पसाण = पास में लूणी (?) बाकी = मदमुत टेकी
- ४६ मेरी = मेर । निगाण = नगारे । रणतूर = युद्ध के बाज । घोर = शब्द का, बहुत । बास = घोड़ों के । रेण = युक्ति । रेणा = सूय, पाकाश ।

न का नकीऐ साप सापा न राज,^१
 वढे रागरो^२ धुनि फौज न वाज ।
 गुड नाळ^३ गोळा न दाए न गाज,
 वहे होक होना^४ न का साक वाज ॥४७॥
 न को^१ हुंवरक जत्र छूट ह्वार्,^२
 त्रिवाळ वडाळ न वाजै त्रिघाई ।
 घडे वहड^३ हूह माती न थटा
 घुर जाण^३ आसाढ रो मेघ^४ घटा ॥४८॥
 ढळनक्तडी^१ ढाल नेजा न घज्जा,
 दिसै मोरळी ह्य धारै दुभुज्जा ।
 आया औद्रक- सूरमा ऐणि^३ आर,
 अतै लोहवी^४ लोह रिछना न थार ॥४९॥
 नही सैन सैनाधि एको सजाई
 लड सो किस मूळ^१ पूछा, लडाई ।
 भण^२ नागपत्नी^३ जिता मूझ भीर,
 तिता माही^४ एको नही तूझ^५ तीरै ॥५०॥
 कटवका खगा बाहरो नाग^१ काठे,
 अमा नागणो-पत्य^२ रो जूझ आछे ।
 बुलाडो जगाडो जुवो जुध्व बाध ।
 हारिया जीपिया^३ करतार हाधो ॥५१॥
 इसी आज ते^१ कौण भूलोक आछे,
 काळीनाग सू जुध्व^२ संग्राम काठ ।
 चढ^३ कूण काळी तणी सीम चाप,
 काळीनाग हू आज ही कस काप ॥५२॥

- ४७ १ न कू नाखिये साप खगा न राज । ख ग ड, २ बहारागरी
 [ख ग ड], ३ गहीनालय [ख], गुडे [ग], गडे [ड], ४ कोका [ख, ग] ।
 ४८ १ वयो हूँ [ख], २ पद्म वेह वेहह [ख], घुडा वेहूँ वेहूँ [घ च],
 ३ जेम [ख ग] ४ मेह [ग ड] ।
 ४९ १ ढलकतडे [ख], रो [ग] नको [ड], २ भावे उमये [ड], ३ ऐह
 [ड], ४ लहडु [ख घ] ।
 ५० १ सूत्र [ख], सूत्र [ग], भाति [च], पूत्र [ड], २ मुणै [ग], ३ पुत्रो
 [ख ग], ४ माँदीलो एको [ख], ५ नाग [ड] ।
 ५१ १ नाम [च] २ मूऊरो पति माछू [ग], ३ वात [ख ग ड] ।
 ५२ १ जे [ड], २ जोघ [ड], ३ चढ विपवाला [ख ग] ।

सेना में गाथा प्रशान्त के तकीव भी नहीं घोषित हो रहे हैं और मारु राग की पुन भी नहीं बज रही है। तोपों के गोलों से तथा बारूब के छूटने से गजना भी नहीं हो रही है। युद्ध के गम्ब से होने वाला कोलाहल भी नहीं सुनाई दे रहा है। १४७।

‘हुक्क’ ऐसी आवाज करते हुए आग्नेयास्त्र भी नहीं छूट रहे हैं। बड़े नगरों का लयपूर्ण घोष भी नहीं हो रहा है। दोनों साथ समूह में आयाड़ की मेघ घटा के समान रव (हुकार) भी नहीं हो रहा है। १४८।
लटकती हुई ढालें एव मालों की नोक पर फहराती हुई ध्वजाएँ भी नहीं दिखाई देती हैं। हम तो तुम्हारे हाथ में केवलमात्र एक मुरली दिखाई देती है। इस कालिय के द्वार पर आते हुए अनेक शूरवीर भी भय खाते हैं। परंतु तुम्हारे शरीर पर तो लोहे का कवच तक भी तो नहीं है। १४९।

तुम्हारे पास न तो सेना है और न एक भी सेनापति है। मैं पूछती हूँ तुम किस आधार पर युद्ध करोगे ? भगवान् कृष्ण इस प्रकार के वचन सुनकर बोले—नागिन ! तुमने मेरे लिए जितने सहायक गिनाए हैं उनमें से तुम्हारे पास तो एक भी नहीं है ! १५०।

नागिन ! सभ एव वीरों से रहित नाग लड़ेगा उसका प्रीर हमारा युद्ध होगा। तुम नाग की जगा करके बुलाओ और फिर हमारा बाहु युद्ध देखो। हार-जीत की बात तो ईश्वर के हाथ है। १५१।

नागिन बोली—ऐसा आज पृथ्वी पर कौन है जो कालिय नाग से युद्ध लड़े और उस पर चढ़ाई करके उसकी हृद देवावे ? कालिय नाग से आज कस तक कांपता है। १५२।

- ४७ नकीए=नकीव (गाथा के सुयय गायक)। खाप=सागा। वही राग=मारु राग। युद्धनाळ=तोप, बटुक। बारू=बारूब। गाज=गजता है। हीठ हीका=युद्धरव।
४८ त्रिबाळ=नागारों के। बहाळ=बहो के। त्रिघाई=लयपूर्ण ध्वनि। पय=पयूह में। हूह=हूँकार। माती न=मची नहीं।
४९ नेत्रा=माते। घज्जा=ध्वजाएँ। बुमुज्जा=दोनों हाथों में। भौद्रक=मयभीत होते हैं। ऐणु=इगक। घार=तुम्हारे।
५० सेनाधि=सेनापति। मूळ=आधार। लहाई=युद्ध। मणे=कड़े। मूम=मेरे। भीरू=सहायक। तितामांशी=उनमें से। तीरे=पास।
५१ बटवर्ता=सेना। सगों=वीरों, सनवारों। पाछ=सदेगा, बचिगा। पाछ=होगा। जुवो=अंगी। करउार=ईश्वर।
५२ पसी=ऐसा। तं=वह। कूण=कौन। सोम=हृद (सीमा)। चाप=देवाव। हू=से। कापि=कांपता है।

जाळ शिखर नील वई विस्म झाळा,
 वदन सहस्र वधे ध्याम व्याळा^१ ।
 वडा शृंग मीतग इमग वाळा,
 जिरी फूक आग^२ भर हूक फाळा ॥५३॥
 अरठी घणो साम गूठी^३ अमारी ।
 हुसी ठाकरा आकरू आज^४ आरी^५ ।
 निज नारि वन्खाणिया कद्र^६ गाह ।
 वद^६ जस्म वरो जिक हृदय वाह^६ ॥५४॥
 पनगा नरा दाणवा देत्रि^१ वासा ।
 तुन देखावू^२ आज वगा तमामा^३ ।
 फणी^४ नाथ न शालवू ऐणफाणी^६ ।
 मोरी^६ एह^७ ककालियौ द्रोहमाणी ॥५५॥
 मुह^१ जोड होमी घडी हा माहे ।
 निची^२ नाग ते वोल घोटा त्रिवाहे ।
 जमना जप्पई नागणी छोडि जारा ।
 फणी फेण^३ न खावसी दलि फोरा ॥५६॥
 जमना तणे^१ नागणी वण^२ जागी,
 लियो^३ बाल^४ त खाजगा^५ लण लागी ।
 कठ वाम मूसाळ घोटी^६ त्रिणी रो,
 वळ दूसरी ताहर वृण वीरा ॥५७॥

५३ ^१ विष वाला [ग] ^२ सेनग [ग], ^३ बल [ग], ।

५४ ^१ गुठी [ख], हूठी [ङ] हूठऊ [प], ^२ भूभू मारी [गङ], ^३ इसके
 भागे च प्रति में अधिक पाठ है —

छई सीह मोनीग हुकार रवीज, करतार न भावती बात कीजै ।
 ववा मनवा कभणा जीव वाली ममज लीयी रज तज्जा सभाली ।
 भुर कान बडी हृगा मांडो हूक, चिहू छाण वालो परि पाव बूके ।
 वडा बोलियै बोन तेता दिचारी, पराहे मया मद गध उतारी ॥
^४ कद्र [ख ग], कप [ङ], गूहे [प], ^५ वडे [ङ], ^६ दध्य [ङ],
 पडा [च] ।

५५ ^१ वेग [ग], ऐलि [घ] ^२ तुना दालवां [ङ], ^३ हमे एकणी गाठ
 फेरा हजारी, नही नागणी लाग मारोनगारा । मया [ङ] ^४ पुणि
 प्रलि [ख ग] ^५ जाप्यो [ग], ^६ मुणे [ग], ^७ ऐण [घ], एक [ङ]

५६ ^१ मुर [ङ], ^२ नटयो [ख], नह [ग] निज [ङ], ^३ फुणा फीण [ङ] ।

५७ ^१ जप [ङ], ^२ वेण [ङ], ^३ लियै [ग], ^४ बोलजी [खङ],
^५ सोभना [घ], ^६ डोटी [ङ] ।

लव कालिय नाग के सहस्र मुखों से विष उवासाए निबलकर
 ध्योम में सर्पाकार होकर बढ़ती है तब हरे वृक्षों को जला देती है तथा
 जो हिमालय की बड़ी बड़ी शीतल चोटियाँ हैं वे ती उसकी पूंकार के
 सामने छलाने मरने लगती हैं । १५३।

मेरा पति कालिय प्रीणित हो जाने पर पागल हो जाता है
 ठाकुर ! आज बहुत ही घोर लड़ाई होगी । भगवान न कहा—नागिन !
 अपनी नारी के बखान करन पर पति को इज्जत नहीं बढा करती, प्रत्युत
 तिसके बाहु प्रहारों का बखान गभुगण करे तब ही उसकी सच्चे माने में
 इज्जत बढ़ती है । १५४।

पद्मों, मनुष्यों, रामों और देवताओं के समक्ष आज तुम्हें शीघ्र
 ही खेल दिखाना और इ हों हाथों से कालिय की वश में करके पकड़ना ।
 यह कालिय मेरा परम गद्दू है । १५५।

नागिन बोली—अभी घड़ी भर के अंदर धामना सामना हो जाएगा ।
 तुमने नाग को निदा का है इन वचनों की नागपुत्र निभाएगे । जमुना
 कहने लगी—नागिन ! तुम जोर छोड़ दो । इसको छोटा समझ कर कालिय
 नाग नहीं लायेगा । १५६।

जमुना के वचन सुनकर नागिन सजग हुई और वचन के द्वारा
 ही श्रीकृष्ण की परीक्षा लेन लगी । नागिन बोली—तुम्हारा नियास एव
 ननिहाल कहा पर है ? तूम किसके पुत्र हो और तुम्हारा दूसरा भाई
 कौन है ? । १५७।

५३ त्रिस्तम्भ = शम्भु । विरग्न = विष । म्हाळा = लपटे । व्याळा = सप ।
 शृ ग = चोटी । सातग = शीतल । हेमग = बर्फ वाले पहाड़ ।
 दू ग = पहाड़ पहाड़ की चोटिया । फाळा = छलाने ।

५४ घम्ठी = दृष्ट होन पर । साम = पति । भूठी = पागल । घमारी =
 हमारा । माकरू = नेत्र । भारी = मुद घातनायुक्त बोलनाहल ।
 वन्ताणियाँ = प्रससा करने पर । कद्र = इज्जत । बढ = कहे ।
 हत्यवाह = प्रहारों की ।

५५ पासा = समीप, से । बग = गीघ्र । तपासा = सत। फणों = नाग ।
 नायन = काबू करके । ऐण पाली = ६ दो हाथों से । द्रोहमाणी = शत्रु ।

५६ मु हजोइ = सामना-सामना । जपई = कहने लगी । जोरा = जोर ।

५७ बण = बबनों से । जामी = सचेत हाथर । सोजना = जांच, परीक्षा ।
 कठ = कहा । वास = निवास । मूसाळ = ननिहाल । धाटी = पुत्र ।
 कूण = कौन । बोरो = भाई ।

अमारा^१ भगता तणा^२ एह ओरा,
 मडाया^३ मधुरा धरा धाम मोरा ।
 मोरें नद बाबो जसोमति^४ माई,
 भली^५ हेक बळभद्र चै^६ नाम भाई ॥५८॥
 मोर वस मामी रहै^१ मूष मूळें,
 कियो वास^२ नैडो जमूना ज बूळें^३ ।
 मनांसू न मूवई घडो हेक मामी ।
 करै^४ सूर ऊगां^५ तणी^६ नितय सांमो ॥५९॥
 मांमै मोक्ळी गोजना^१ करण मासी ।
 इता दीह चौ^२ हू हुतो उप्पवासी^३ ।
 घणा दीहरो मुकिपी नेम घातै ।
 हव जीम सू जुज्ज विभ्रात जात ॥६०॥
 चवै^१ मात, भ्राता विहै^२ धन चारो,
 वहै आज ते नागणी मूक्ष^३ वारो,
 सुरभी तणी नागणी ऊच सेवा,
 गळे अघ्घ ओघा^४ घुरी तेह श्रेवा^५ ॥६१॥
 नरा^१ नेह लाग^२ रहै देह नीको,
 तिसी^३ नागणी गध्वुराचन^४ टीको ।
 बघा देस दीजै विप्र^५ वेद बोल,
 नही नागणी तोइ^६ गौदान तोलै ॥६२॥

- ५८ ^१ दमो [ग], ^२ रिद वास [ड] ^३ मडायामद्धे र धरा वास मोरा [ख] मडया धाम धरे धरा [ट] मडे रिदि वा विधि वा [च],
^४ जसोदासु [ड], ^५ बळ [ख], ^६ छ।
 ५९ ^१ बहू [ग] बहे [ड घ], ^२ नास [ख ग] ^३ मकोल [ग] मकूलें [ड], ^४ मज [ट], ^५ ऊग [ख ग] ^६ समेजुध [ड] ।
 ६० ^१ मारवा [ड] सोभना [च], ^२ रो [ड] ^३ उप्पवासी [ख ड] ।
 ६१ ^१ चवि [ख], ^२ बन [ड] ^३ आज तो घ० पा० [च], ^४ घाय घागें [ग] घग उधां [च], ^५ गवा [ग घ], ख प्रति में घद पद्यां ग नहीं है ।
 ६२ ^१ नवयो [ग], नको [ड], ^२ नागी रही [ड] ^३ त्रिमठ [ग घ] तसू [ड] ^४ गठराचन [ग], गवराइ चाभ्र [घ] नागरो चद्र [ड]
^५ विप्रानान [ग] गो वेद [घ], द्विजावेद [ख], ^६ कौप [ग], नागधर [घ], तेह [घ], ख प्रति में यह पद्य १.० है ।

मगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि—मेरे भक्तों के हृदयों में एय पृथ्वी पर मयुरा में मेरा निवास है। मेरे बाया नदजी क्षीर माता यशोदाजी हैं और मुझे से बड़ा बलभद्र नाम का एक भाई भी है। १५८।

मेरे कस नामक मामा हैं जो मेरे समीप ही यमुना तट पर निवास करते हैं। वे मुझे एक घड़ी भी मन से नहीं उतारते हैं, मित्य सूर्योदय होते ही सामना करने के लिए तयार रहते हैं। १५९।

मामा ने मुझे खोजने के लिए मोती को भी भेजा था। मैं इसने दिन से उपवास ही कर रहा हूँ। बहुत दिनों का नियम डाल रखा है, अब युद्ध की भ्रांति मिट जाने पर ही भोजन करेगा। १६०।

हूँ नागिन! माता ने कहा है कि—तुम दोनों माई गायें चराओ। आज मेरी बही (गायें चराने की) बारी है। गायों की सेवा बहुत श्रेष्ठ है। इनकी पद रज से पाप समूह नष्ट हो जाते हैं। १६१।

जिस प्रकार गो पद रज से मनुष्यों का शरीर अच्छा रहता है, उसी प्रकार गोरोंचन का निस्तक करने पर भी शोभित होता है। वेदों और ग्रन्थों का कहना है कि—समस्त देश का दान देने पर भी गो दान के तुल्य नहीं हो सकता। १६२।

१५ मगवान = हमारे। मोरा = हृदय (तर), कोठा। मोरा = मेरा। भाई = मा। मती = अच्छा। नाम = नाम वाला।

१६ मूक = मेरे। मूळी = समीप। नहीं = निकट। तट = तट पर। मामा = युद्ध, मगवानी।

१७ मोकली = मेरी। खोजना = जाच। मागी = मोती। दीहवी = दिनों का। उपवासी = भूखा। बरणा = बहुत। नियम = नियम, द्रव। पाले = डालकर। अब = अब। जुगम = युद्ध। विभ्रांति = विडम्बना। जाने = दीतने पर।

१८ अब = कहती है। बिगै = दोनों। बारी = चराओ। से = यह। मूक = मेरी। बारी = बारी। मुरम्मी = गाय। ऊव = श्रेष्ठ। गळी = नष्ट होते हैं। पश्य = पाप। मोर्या = समूह। सुरी सेह = सुरों की धूलि। मेरा = गायों की।

१९ नीको = अच्छा, सुन्दर। तिमो = उसी प्रकार। टीका = तिलक। बया = समस्त। मोन = यह है। तोइ = अब भी। तीने = तुल्य।

पचाअमते देव इच्छे^१ पवाळा ।
 सर्व तीथ वामो वस^२ गवुसाळा^३ ।
 दही दूध गवा^४ ची आ सुपदाई ।
 मठा घाळीया^५ लाड खोहा मळाई^६ ॥६३॥
 वळे हाय मू मात आफं विरोळें ।
 घृत पीजिये आण निवात^१ घोळें ।
 लियो मागि लूणी दियो मात लुदो ।
 न खर्म तिवं नागणी बोल यूदो ॥६४॥
 घणं^१ उच्छवं व्याहिया ग्रेह ग्रेवा,
 पियस दुवाचहि माहे परेवा ।
 अवनी तणी भारि ले वध आयी,
 जुवो^२ नागणी ते हुतो गवुजायो^३ ॥६५॥
 कही सु खडो कपडो तीर^१ काही,
 महमा घणी प्राणं^२ घेन माही ।
 खळा हळा नागळा पाण^३ सेतो,
 अर्म नागणी हाय मे^४ आय ऐती ॥६६॥
 पड लातरी घेन ओ^१ नीर पोथे,
 काळीनागनू जग्गवू^२ तेण^३ कीथे ।
 प्रिया, तात नै गोत्र थारी पिछाण्या,
 वडा गोप री पुन^४ आयो विहाण्या ॥६७॥

- ६३ ^१ कीज पवाळा [ग], घाळा वलाळें [र],^२ रहें [र],^३ घेनु [ह],
 घ प्रति में यह पद्यांश नहीं है । स्वामभ्र दे दूध डगे सवारो, एरी
 नागणी तोल मोटो भमारो भ० पा० [ह],^४ जे नवनिध [ग], री
 वासना [ह] नवनीत जे [च],^५ मीठा घोनवां [ग] घोलिण [ह],
^६मिलाही [ह], मिठाई [च], यह पद्य ए प्रति में नहीं है ।
- ६४ ^१ नीनीत [ह], निघाण [च], यह पद्य स प्रति में नहीं है ।
- ६५ ^१ वरा उवक माहू प्राप्ती गरबी, पचासा चव घेन माहे परबो [ग],
 घरद भुखवद ग्याहनद खेह प्रोभा पचू माधव माहे परेवा [च], गरा
 उवका यह ग्रेही गरबी, पचासाडते घेन माही परबी [ह]^२ जोते
 [ह]^३ घेत । यह पद्य ए प्रति में नहीं है ।
- ६६ ^१ नीर [ह] नीर [च],^२ पाहुणो [ग], पाहुण [च], प्रामणे [ह],
^३कीजेन [गड],^४ प्राथमी रात [ग च], स प्रति में यह पद्यांश नहीं है ।
- ६७ ^१ इथे [ग], मड [च], घे [ह],^२ न जागवा [ग], जगाडो घे [ह],
 जगाडो जे [च च],^३ केण [ह],^४ पूत [ग] ।

वही, ब्रूय, घृत, शहद एव चीनी (पचायून) के द्वारा प्रसालन की देयता जो इच्छा रखते हैं । समस्त तीर्थों का निवास गोगाला में होता है । वही, ब्रूय एव मट्टा मिलाई हुई राव, चीनी मिलाया हुआ खोवा तथा मलाई, मिथी मिलाया हुआ घृत पीने से यों ही सुख देने वाला है फिर शय माता उन्हें अपने हाथ से मथकर देती है तो उसमें स्वाद और भी बढ़ जाता है । मा से मथजन मागने पर वह उसका बडा सा लोंदा दे देती है । हे नागिन ! इस प्रकार पं खान पान वाला मनुष्य वचन कपी हूँ (छोटाकशी) महन नहीं कर सकता । ६३-६४।

घर के अंदर गाय के प्रसूत होने पर यडा ही उत्सव मनाया जाता है तथा उसका पीपूय मिट्टी के बतन (पारी) में दुहा जाता है । हे नागिन ! जो पृथ्वी का भार अपने कर्षों पर धारण कर के आया वह गाय की सतान ही था । ६५।

हे नागिन ! किसी भी किनार (छोर) पर चलकर बेल लो । जिसके प्रांगण में गाय है उसका बहुत महत्त्व है और खलिहान में तथा हल चलाने में बलों के आधार (शक्ति)से ही खेती का कार्य होता है । इस प्रकार का गो-बल स्वर्कपो घन हमार हाथ में है । ६६।

इस इह का पानी पीने से गायें दुर्बल होनी जा रही हैं । इसी कारण से कालिय नाग की जगाना है । नागिन ने कहा—प्रिय ! तुम्हारे पिता एव गाय को हमने पहचान लिया है, सुबह सुबह बहुत बडे गोप क पुत्र यहाँ आए हों । जिस प्रशार मेरे सामने कालिय नाग की जगाने की

६३ इच्छा = इच्छा करते हैं । पलाळा = प्रसालन । वसे = रहते हैं । गधुसाळा = गोदाना में । राव = दूध में मट्टा डाल कर बनाया हुआ पदार्थ ।

६४ बळ = घृत । भाफ = शहद । विरोळ = मथकर । जाण = मानो । निघात = मिथी । लूणी = मक्खन । लूबो = नोंदा । न तम = नहीं सहन कर सकते हैं । निके = व । बोलूनी = छोटाकशी ।

६५ उच्छ्रव = उत्सव । घेह = घर में । घेवा = गाय के । विष्म = खीर, पीपूय । परेवा = पारा में । मथना = पृथ्वी । भार = बोझ । कथ = कर्षोपर । गधुजायो = गो प्रसूत ।

६६ खडो = बला । कपो = पकडो । तीर = छोर (किनारा) काही = कोई भी । महंगा = बढाई । प्राण = पावन के । माहि = घर । खळी = खलिहानों में । टळी = तन में । पाण = आधार पर । नागळी = बलों के । मम = हमार, मेरे । हाथमें = वपवर्ती । घाय = घन सम्पत्ति । एनी = इसनी ।

६७ तातरी = दुबल । धो = वह । पीप = पीने से (पर) । जागवू = जगाना । पिछाणी = पहचाने । विहाणी = प्राप्त ।

जपे मो दिमी जेम^१ काळी जगाडी^२,
 इमा^१ टाड, ले मात सू वात^४ आडो ।
 हेका^१ मिल् वापसू पूछि होड,
 सुतो साप जगाडीज^५ केण वोड ॥६८॥
 कहै राप जे^१ सापरी आळ वीज,
 तरै^२ आविजो जागसी जाम श्रीज ।
 पछा पीव^३ रा नागणी तू पिछाण^४,
 वडै ठाकुरे वात वाच विहाणें ॥६९॥
 रीतो^१ बाहडू जे अजीत्यो घरान,
 निसाणी मणा केण पाख न मानें ।
 पिता मात री औधणो^२ पक्वानी
 मोत्या री हुई घुघरी साच^३ मानी ॥७०॥
 हूज नद र घेन नीलखल दूणी,
 लला तू रही एह बूदत लूणी ।
 जिहा^१ बोलता उपड बोल जेता,
 लला लहै^२ लेसो फणा केण^३ लेता ॥७१॥
 अही^१ नारि^२ तू एह नेठाह आणै,
 जिक् बोलिया^३ बोठ गैदत जाण ।
 वृथा वण जाणै रग^४ मूझ वाळा,
 पुणू^५ एकणी, वार इक्कीस पाळा ॥७२॥

६८ १ जेम [ग], २ कीली जगाडी [र], ३ घसी [ड] ४ मात [ख]
 भात [ड] ५ जगाडिय [ड]

६९ १ तो [ग] जो [ड] २ तुमे [ग], तया [ड], ३ पछा वावरा [घ घ],
 वापरा [ड] ४ पमाणो [ख] ।

७० १ रीतु बाहडु कोध जीतु नरानि [ख] रीतो बाहडु तो जीतो
 कुणरान [ग घ], जातु बाहिरो को भजे तू न जाण [ड], रीतो
 जाऊ तो कोइ जीतो घरान [च], रे उधण्यै [ग], वगडु [ख],
 पोखियत [घ], उलट्यो [ड] ३ साध [ख ड घ] ।

७१ १ जेहा [ड], बोलिज [ग ड] २ लहैस [ख], लेस [ड], ३ फुणा
 मोण [ग ड] ।

७२ १ घसी [ड], २ नागणि [ड] ३ नीकत्या [ग], नीसरघा [ड], ४
 नरे [ड], ५ पणो [ड] ।

बात कह रहे हो इसको छोड़कर माता से बातों में ही हठ कर लेना । यदि तुम्हारी माँ ही भर ले तो फिर पिता से गत बंद कर पूछ लेना कि—सोते हुए साँप को किस उत्साह के लिए जगाया जाय ? १६७-६८।

यदि तुम्हारा पिता कह दे कि—तुम जाकर भले ही साँप से छेड़-झानी करो, तो तुम तभी आजाता । साँप तीसरे पहर में जगेगा । भगवान ने कहा—नागिन ! तुम अपने पति के पक्ष की अच्छी तरह पहचानती हो तभी तो सुबह से ही उस बड़े ठाकुर (सप) की बातें बाँच रही हो १६९।

यदि मैं साँप को बिना जोते खाली घर लौट जाऊँ तो घर वाले साँप के बिना ही बिना यहाँ आने की बात को ही नहीं मानेंगे । नागिन बोली—लाला ! तू यह सब समझे कि—तुम्हारे माता पिता के पक्षपाल उलट गए हैं एव घृधरो मुक्तामूर्ति में परिवर्तित हो गईं ज्ञात होनी है १७०।

नद के घर नीलास दूध देने वाली गायें हैं अतः यह नाच-कूब तुम्हारी नहीं है, उस मक्खन का ही प्रताप है । तुम्हारी जिह्वा से जिनने बोल [दुग्धघन] निकले हैं उनका हिसाब तो कालिय ही लेता पर वह अभी सो रहा है १७१।

श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन ! तू यह निश्चयात्मक रूप से समझ ले कि मेरे बचन जो निकल गए हैं वे हथों के दाँतों के समान हैं जो निकलने के पश्चात् कभी नहीं मुड़ते । तेने मेरे बचनों की व्यय समझ रखा है, वास्तव में ऐसी बात नहीं है मैं जो एक बार कह बता दू उसका इक्कीस बार तक पालन करता हूँ १७२।

१८ मोदिसो—मेरी तरफ । जेम—जिस तरह । छोड़—छोड़ना । माँही—हठ । हेका—हाँ । छोड़—प्रतिपा करके । कोड़—धम नता के लिए ।

१९ झाल—छेड़झानी । झूठ । तर—तब । जाम त्रीजे—तीसरे पहर । पछा—पग । बाँच—बाँचती है ।

७० रीती—झानी । बाहुदु—लौढ़ । जे—यदि । निसाखी—बिन्दु । मखापेण—कालियनाग । पाम्प—बिना । झोधणी—बसटना । घृधरो—साबुत घन उबाल कर बनाया हुआ पक्कवान । माच—सरप ।

७१ दूखी—दूध देने वाली । बोल—बचन । लेखी—हिसाब । कणपेण—सप ।

७२ नेठाई—निश्चयात्मक । गै-दत—हाथी की दाँत । जाणें—मानो । वृषा—विजूल । मू भू—घेरे । पुणू—कड़ता है । वार—बना । पाळी—पालन करता हूँ, निभाता हूँ ।

अमा पय साटा तणी घार आग,
 मोरे देव धाहो^१ च गाम^२ माहै,
 खत्री उमट कचका मग वाहै^३ ॥७३॥
 खत्री वट्टा^१ कस रैयत्त^२ सासी,
 पर^४ वसरै वट माथ वहै ब्रज वासी ।
 रछी^१ वसर तातरी टाट घुट्टी,
 तदै ताहरी केध मप्रवट^२ घुट्टी ॥७४॥
 हिय^६ वसर राज प्रवेश रमता^२
 तद^३ नदर नेस^४ बलभद्र न हुता^५ ।
 नागणा मो बलभद्र आगे,
 जोवी^१ मिळ वसरा दूत पाणी न माग ॥७५॥
 नद र गेह^२ सत्रवट्ट^३ जागी,
 हिय लागवा सक बालाक लागी ।
 बहू नागणी सुण^४ तू रोप वान,
 काळीनू^१ मिळ दादुरा मेह तो साच मान ॥७६॥
 न नाथ तो थार^२ कमावू,
 जसोदा माई^३ नद बाध न जावू ।
 नही नागणी नाग^४ थागे निवार,
 हिय एक ही^५ गाठि फेरू हजार ॥७७॥

- ७३ १ घट [ग], घाट [ड], २ बाजाव [ख ड] ३ खत्री उम ही साण
 की खग वाहै [ड] ।
 ७४ १ काहै की [ड] २ रेहेत [ट] ३ विचेवा^३ [ड] ४ घर कसरेतुबसी
 तात [ल] टाटि [ग] घाठी [घ ड] घरै कसरे तातरी टाट घाठी
 [च] ५ विप्रवट्ट [च] ।
 ७५ १ हने [ड] २ पट्टना [ख], पोता [ड], ३ तदा [ड] ४ सेन [ख]
 नेह [ड] ५ नीता [ड] ६ बहै [ग] भावै [ड] ।
 ७६ १ जुए [ग] जोया [ड] २ नेस [ख ग] ३ सत्रोट [ड] ४ बोल
 रोप जाने [ख ग] हपयु बोल [ड] ।
 ७७ १ काळी नाग नाथून जो एए मायो [ड] २ तुहारो बमायो [घ च]
 ३ प्रसू [ड] ४ लाग [ग घ ड] ५ हेरणी [ड] ।

हमारा पथ (माग) छांटे की धार पर है अर्थात् दुगम है । इस दुगम माग का त्याग करने पर ही कोई कलत्र लग सकता है । हमारे गांव के प्रहीर-क्षत्रिय हाथों से सज्जु धारण किए कभी ५ उमड़ रहे हैं । (बि—कालिय नाग को ड्रह से निकाल कर छोड़ेंगे) ७३।

नागिन बोली—ब्रजवासी कब से क्षत्रिय बन गए हैं ? ऐसे तो कस की बहुत रयत है जा अपने अपने हिम्सा पर चल रही है । ब्रजवासी भी हिम्सा पर चल रहे हैं अर्थात् कस के अधीन रह रहे हैं । अब कस के घर तुम्हारे पिता का सिर मूड़ा गया था, तब तुम्हारी क्षत्रियता कहा चली गई थी? ७४।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन ! अब कस के राज्य में बहुत से लोगों ने मिल कर उपयुक्त नाटक खेला था, तब मद के घर बलभद्र के समान पुत्र उत्पन्न नहीं हुए थे । अब मेर और बलभद्र के सम्मुख यदि कस के बूत जा जाय तो वे पानी भी नहीं मांगते हैं अर्थात् हमारे द्वारा मार दिए जाते हैं । ७५।

नागिन ने अथ सखियों की ओर सकेत करके कहा—बेखो, बेखो ! नर के घर में क्षत्रिय जाग उठा है जिसमें अब तीनों लोगों की नय होने लगा है ! भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन तू क्या ताने द रही है ? ध्यान लगाकर सुन, घेंटक तो बर्बा होने पर ही बर्बा को सत्य मानते हैं, बर्बा की बात को नहीं । ७६।

मैं यदि कालिय को अपने कायू में न कर सका तो 'आजोवन तुम्हारे यहां ही धाकरी करता रहेगा' अपने माता-पिता के घर नहीं जाऊंगा । परन्तु नागिन ! मेर धार का निराकरण तुम्हारा कालिय नहीं कर-सकेगा । मैं अभी उस सट्ट-कण्ठपारी कालिय को इस एक गांठ की लकड़ी से घुमाऊंगा । ७७।

७३ अर्थात्—हमारा । पथ—माग । छांटे—सलवार । धार—नोक । पड़े—बाँ में । छांटे—दाग । माहै—मैं । अरर । ऊमट—उमड़ रहे हैं । कटका—कभी क । बाहै—हाथों में ।

७४ रयत—बनता । सखी—बहुत । घट—हिम्मे । टाट—सिर । तदे—तब । केच—कहा । नुट्टा—बौड़ गई थी, टूट गई थी ।

७५ रली—मिलकर, प्रसन्नता । नेस—पर । हिव—धब । मो—मरे । पाणी न माग (म०)—पृथु को प्राप्त हो जाते हैं ।

७६ जोयो—देखो । ग्रह—घर । धनवट्ट—क्षत्रिय । सक—बय । रोप-कान—कानस्थिर करके, ध्यान पूवक । दाहुरी—घेंटकों को । मेह—बर्बा । साध—सत्य ।

७७ न—नहीं । नायू—बाँ में कस । कयाऊ—धाकरी करना रहेगा । धारो—तुम्हारा । निवार—निवारण करकेगा । एक ही गांठ—एक ही धरो वाली लकड़ी में । फेरू—घुमाऊंगा । हवार—सहस्र फल धान, नाग को ।

पवाडा अवाडा पहला^१ पुमावो^२
 घडोए विऊ नीमड धा जघावो^३ ।
 सली बाद पूजा नही साम तोल
 बाल^४ बाढतो वार^५ पाघोर बोऊ ॥७८॥
 सुण्यो^१ न औग्याणी^२ पुराणी मयाणी
 रूडोज नही जगळा जाट^३, राणी ।
 काळी नागरी काण रागी न वाई,
 वकैवाळ^४ न मुह मा चाढि वाई ॥७९॥
 धुरा पोसियो^१ धान न धान घायो^२,
 वळ मोवळो मालीय लाडवायो ।
 अम्हा सामहो ह मन्वी विज्ज^३ आव,
 क्विसू आपरो माल आप कराव ॥८०॥
 पख त्रीहू पाढी, भानी सीय मोरी,
 अर कूण लाज पन्वी^१, आव ओरी ।
 नमो धोठ धोठा, चव नाग नारी,
 हिव^३ जोडि तोमू वाता वाद हारी ॥८१॥
 मढगा^१ क्हो^२ बोल जेता अघाए,
 पल^३ तैतला आज तोनू पसाए ।
 नरा नारी को नागणी ना घियाणी,
 रही बाझडी देव दाणव राणी ॥८२॥

७८ १ पहेली [ङ], २ पत्राये [ङ], ३ घडो राधयु निमडो घाजघाए [ख ग], घणाइ राधोयव नीवडड घा जु घाए [घ], घणो रू धियो नीवडे नेट घाए [ङ], ४ बधे [ङ], ५ कोइ [च] ।

७९ १ सुणोजे [ङ] २ उवाणु [ख घ], ऊवाणी [ङ] ३ जट्ट [ङ], ४ नीमु हो म चाढाव्य बाई [ख घ], मूडो चढवेत बोई [ङ] ।

८० १ पोसियो [ङ], २ घायो [ङ], ३ पूद [ख], वाद [ङ] परसा देखि [घ] ।

८१ १ पख्यु [ख], पगे [घ], पखो [ङ], २ घोट [ग], डीठ [घ] उजपा [ग], जपो [घ], हवे [ङ] ३ भजे [ग] हर्व [ङ] ।

८२ १ घटका [ग], २ कदा [ङ], ३ पतु तेवरा [ङ] ।

तुम अखाड के अंदर जाने से पहले ही अपने पति के युद्ध-चरित्र पर प्रसन्न हो रही हो। अभी इसी स्थान पर दो घड़ी में निष्पत्ति हो जाएगी। एक अन्य नागिन ने पहली नागिन से कहा—सखी ! 'याम के बराबर विवाद में हम नहीं पहुँच सकती हैं क्योंकि यह तो 'सीधा विनारा काटता हुआ' ही बोलता है। १७८।

नागरानी ! तुमने एक पुरानी लोकाक्ति नहीं सुनी है क्या— 'अगल में जाट को रोकना नहीं चाहिए'। हमने अपनी बख्वास में कालिय नाग की कोई प्रतिष्ठा नहीं रखी। इसमें कहती हूँ—बहिन ! इस मूल को 'अपने मुँह मत लगा'। १७९।

प्रारम्भ से ही हम लोगों ने इमे अनादि से पोषित करने और फिर महसूस के अंदर दुखारन का प्रयत्न किया। इतना करने पर भी यह हमारे सम्मुख बोधित हो हो कर आता है तो 'हम भी अपना मोल अपने आप क्यों कराए।' अर्थात् इससे दूर रहना ही अच्छा है। १८०।

तुम तीनों हा पत्नी (पीहर, समुराल, ननिहाल) में घतुर हो मत मेरा कृष्ण मान कर इधर आ जाओ। इस कृष्ण के किस पक्षवाले सञ्चित होंगे ? अर्थात् इसके कोई पक्ष है ही नहीं। नागिन ने कृष्ण की ओर संकेत करके कहा—हे धृष्ट बालक, तुम्हें नमस्कार है। अब मैं तुम से याद विवाद में पराजित हुई, तू विजयी हुआ। १८१।

तेरे पास जितने घेतुके बचन हैं उन्हें तृप्त होकर कहते, आज तुम्हें सब माफ है ! क्योंकि—मानव, नाग, देव, दानव जाति की कोई भी स्त्री आज तक प्रसूता नहीं हुई है, सारी बध्पाए हैं। १८२।

७८ पुमावी—प्रसन्न होवा। निमर्द—निपटेंगा। जयावी—स्थान पर। पूजा—पहुँचना। तोल—बराबरी में। काटनी—काटता हुआ। पापीय—सीधा स्पष्ट।

७९ घोसाणी—लोकोक्ति। रुठी जै नहीं—रोकना नहीं। काणु—प्रतिष्ठा। काई—किसी भी तरह की। माँ—पति।

८० घुरा—पहले। घान—स्वाणु, मूल। धनि—धन। घायी—तृप्त किया। मोरुडो—बहुत। विजम्भ—बोधित होकर। किसू—क्यों, कसे। मोन—कीमत। घाप—स्वय ही।

८१ प्रौड—घतुर, निपुण। घेर—इसके। पनी—पक्ष वाला। घाव-घोरी—इधर आजा। घीठ—घण्ट। जाहि—जोड़कर। तोसू—तेरे से। हारी—पराजित हुई।

८२ घरगा—स्वय। घपाए—तृप्त होकर। पन—समीप में। तेतसा—जितने। पसाए—समा किए। दियाणी—प्रसूता हुई। वामकी—बध्पा। राणी—रानिया।

नारी गाठियो नूठ दूजा^१ न खायो,
 जखणी^२ किणी हेव तू ही जायो ।
 आयी नाग सू झूज लवा अतागी^३,
 अहीलो हुवो आज पाछो न आगी^४ ॥८३॥
 बडा भीच^१ भूपाल केकाण वाळा^२,
 खिच^३ नागरी^४ वाण केवाण वाळा ।
 अहीराव न डावडो^५ एह आडा,
 गिणा,^६ वाद जोता 'केई'^७ काड गाडा' ॥८४॥
 भुजगा तणी घात^१ वारं भुजारी^२,
 दोहा^३ अतरा^४ रात^५ छाटा^६ दुजारी ।
 मदा आणियो^७ नागणी तेण^८ मारो^९
 थयो^{१०} वेद^{११} पाग^{१२} नक्यु पण^{१३} थारो ॥८५॥
 अहीनारि सू नारि भासै^१ अनरी
 अरी^२ जोवो न देखी^३ चले न हरी ।
 सुणो^४ नागणी आपणी हद्द माही,
 नरा अस्मुरा अम्मरा गम्म नाही ॥८६॥
 पवना न चदा न दुडदो^१ प्रवेसा
 अठ एहरी गम्म एहाअ देसा^२ ।
 सुण^३ नाम पारह्व विच्चार सूनी,
 घोटा^४ रूप, मोरारि निवाण धूनी^५ ॥८७॥

८३ १ भीची [ख] २ जनू भी तू ही हेव हेकीप्र जायो [ङ], ३ घताग [घ ङ], ४ घाग [घ ङ] ।

८४ १ भौच [ङ] २ बुला [ख घ] बोल्या [ग] ३ विस [ग], खिङ [घ] ४ सु केण [ग ङ] ५ दावडा [ङ] ६ घणी [ख], गिण [ग], गुणा [ङ] ७ बही [ङ] ।

८५ १ भास [ख], भाति [ग] भेट [ङ], २ भुजारी [घ] ३ दिती [ङ], ४ घात [ख] ५ राति [ग], राता [घ ङ], ६ घेनी [ख] ७ दुजारी [घ] ८ तेण [ख], बोल [ङ], ९ साह [ख ग], सार [घ], १० थऊ [ख], ११ देव [च], १२ पासा [ख, ग] १३ एण [ग घ] ।

८६ १ आखाई [घ] २ द्विपारी न जोवे चखे वाई हेरी [ङ], अहीराण चठ देव [घ] ३ जाह सल [घ] ४ मण [ङ], मुह [घ] ।

८७ १ दख्यो [ख], दुडदो [ग घ] दिणदो [घ] २ प्रवेश [ङ], प्रवेश [घ], ३ सुण्य शारस नाहि विचार सूनी [ख] मुण रूप विचार एतेह सूनी [ङ] सुण्य उर विचार को नाहि [ग] ४ दोटो [ङ], ५ नावाण [ख] निवाण [ङ] नेवाण [घ ग] ।

किसी भी अर्थ में ने सोंठ की गाठ नहीं छाई है । अर्थात् प्रसव नहीं किया है , *म सप्तर नर में किसी एक माता ने तुम्हें ही जन्म दिया है । जो तू कालिय नाग से पुत्र करने का दृष्टपूर्वक निश्चय करके आगे बढ़ रहा है । १८३।

तुम यह नहीं जानते हो कि—मेघ घटा के सदृश संघ वाले बड़े-बड़े शत्रु धारी राजा कालिय नाग की मर्षावा की मानते हैं । हे सखी ! महिराम कालिय एवं इस बालक की, परस्पर विवाद की दृष्टि से तुलना करें तो यह बालक कालिय से कई करोड़ गुणा अधिक है । १८४।

नागिन ने कहा—कालिय नाग शौर तुम्हारे बाहुओं की तुलना की जाय जो दिन और रात तथा द्यु और द्विजों व समान अंतर दिखाई देता है । मगधान कृष्ण बोले—हे नागिन ! जो सदा से आ रहा है वही अच्छा है । तुम्हारा प्रण क्या वेद से विपरीत नहीं हुआ है ? अर्थात् तुमने मेरे सनातन स्वप्न की नहीं पहचाना । १८५।

नागिन से एक अर्थ स्त्री ने कहा—अरी नागिन ! सुनो—क्या तुम अपनी आँसों से निहार कर नहीं देख रहा हो ? ये अपनी सोमा के अंदर हैं । इनकी जानकारी मनुष्य, देव तथा दानव किसी की भी नहीं है । १८६।

हे त्रिवारंगुण्य ! महा सूर्य, चंद्र एवं पवन का भी प्रवेश नहीं है , उन देशों में भी इनकी पहुँच है । इनके नाम स्मरण मात्र से (महसागर) पार हो जाता है । ये बालस्वप्न मे निर्वाण प्रदाता कृष्ण हैं । १८७।

८३ जायो=रक्ष न किया । भ्रूक=पुत्र । अतागो=इतना आगे । अशोला=हठी । पाद्मानशायो=स्थिर ।

८४ भीच=शूरवीर, बाल्य । केजाण=स य अक्षय । त्विवे=सहृद है, मागत है । कवाण=कृपाण । शायवा=पालक । एह=यह । भावा=मुलना करें । वेई कोट गावा (मु०) =अधिक । गिला=मानन है । जोता=देखते हुए ।

८५ मुजगातली=मुजगों की । मुजारी=मुजगों की । दीहा=दिन । अतरा=अतर । रात=रात । छोटा=पुत्र । द्विजारी=वचन वर्ग की । सग=परम्परागत । तण=वहाँ । सारी=अच्छ है । पयो=हुआ । पण=प्रण ।

८६ अनेरी=अर्थ । अरी=अरी । (स) । चर=आसों से । हरी=निहार कर । हद्=सोमा । भागुगो=दानवों की । अम्मरी=देवताओं की । गम्म=जानकारी, पहुँच ।

८७ पवनी=पवन । चटो=चंद्रमा । दुडो=सूर्य । गटो=महा । एहरी=इसकी । विक्वाग मनी=विचार गुण । रूप=स्वरूप से । मोरारि=भीकृष्ण । निवाण मनी=निर्वाण प्रदान ।

सहै^१ बोलीया बाल जेता मभाळी,
 वान वचन दोए दोडनाळी^२ ।
 त्रिलाकी^३ न आसई मीहा थीन^४ वृक्ष
 सखी बाळ एन त्रिभुखन सूक्ष ॥८८॥
 दिग्गळ^१ विसू नागवाळा दिवाजा,
 वणी वात माका-वधी कोड^२ काजा ।
 न मानत नारी मुरागी निरस्थो,
 पढी^३ सामद्रगा^४ वरगै^५ परखो ॥८९॥
 रामा^१ सारणी है सगी घण्ण^२ रेखा,
 ब्रह्माड^३ वाळी वळी वो विसेखा ।
 सहस्सा लिखी सोळ अरै सयाणी
 पचामा उभ^४ खट दा पट्टराणी ॥९०॥
 इठ्यामी^१ उभ सी दस^२ बाधि आठ,
 सखी देल बेटा लिम्ब्या^३ लख साठ ।
 जणणी^४ तणी जूण मा ए न जायो,
 उतारेवा^५ ए भाम चो^६ भार आयो ॥९१॥
 मजाण^१ बाळ तू, चवचवाल माधो
 वळीराव जेहो उळी एण बाधो^२ ।
 जितो डावडो ओ, वळो देली जाण्यो^३
 ठगेवा^४ गयो आप, बापे ठगाण्यो^५ ॥९२॥

- ८८ ^१ सब [ख ग] जेता बोलीया [ड] ^२ दूड [ड] ^३ ता सोटे [ख ग],
 न लोटे [ड], ^४ विरुखो न [च], विरुखू १ [ड] ।
 ८९ ^१ दिखाव [ड] ^२ काय [ग घ] कोय [ड], ^३ पोड [ख] पड [ड],
^४ शाम दूजो [ड], ^५ करुखा [ड] ।
 ९० ^१ रना [ग ड], ^२ प प [ड], दू पू [च], ^३ पढीपड वाळा सहै
 कोण लेखो [ड] ^४ अभिसिन्न [ख], अभे चन्न [ड] ।
 ९१ ^१ अभिसी [ख], अभ्यामी [ड] ^२ दरबार [ड] ^३ सख [ड],
^४ अनूनी तणी जाण मा एण जायो [ड], ^५ हवा [ड] ^६ बा
 [ड], तणी [च] ।
 ९२ ^१ घिया प्र०पा० [ड] ^२ लापा [ड] बाधा [च], ^३ जाति दाल के हे गखी
 देव तालू [ख] त्रिभया दावक सखी देव जाणू [ग] जसोण तणी
 नद ए देवजाणी [ड], ^४ छलेवा [ड], ^५ छसाणी [ड] ।

हे सखी ! इन्होंने जिनने वचन कहे उनको सुना ? प्रत्येक वचन में कितना घातुप था ! इनके मन से त्रिलोक प्राप्त हैं ये (कालिय नाम से) क्या ममभीत होंगे ? इन बालक को तो तीनों भुवन प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं । ८८।

इनको तुम कालिय नाम का क्या गीय दिखा रही हो ! इनके युद्ध बद्ध करोड़ों कार्यों का कपाशों में वणन है । यदि तुम नहीं माननी हो तो इनका हाथ पकड़कर सामुद्र गात्र क अनुसार हाथ की रेखाएँ पढ़कर परीक्षा कर लो । ८९।

हे सखी ! इनके हाथ में लम्बी जसी स्त्री हाने की स्त्री रेखा है और ललाट पर जो बलि है वह एक विशेष प्रकार की है । इनके सोलह हजार स्त्रियों का उल्लेख है जिनमें १०८ पटरानिया होंगी । ९०।

हे सखी ! देखो, इनक बहुत स पुत्रों का उल्लेख है और यह धर्म लोगों को तरह माता क उदर से नहीं उत्पन्न हुए हैं । ये तो पृथ्वी का भार उतारने के लिए ही आये हैं । ९१।

इनको तुम बालक मत समझ लना, ये चक्रधारी माधव हैं । बलि जस राजा का इन्होंने छल से बाध लिया था । जितना यह बालक दिखाई देता है वसा ही स्वर्ण बलि ने देकर इनको पहचान लिया था । ये माधव वास्तव में ता बलि को ठगने गये थे, पर आप ठगे गये । ९२।

८८ सहे=सब । बोल=वचन । सभाळी=सुना । दोड=घातुप ।
 बं हा=भय । मो न=यह नहीं । वू प=दर्, ममभीत होता है ।
 बाळ=बालक । त्रिभुवन=तीनों लोक । सूभ=दिखाई देत हैं ।

८९ किमु=क्या । त्रिजा=गीय । साका=युद्ध । बोड=करोड़ों ।
 कात्रा=कार्यों की । न मानत=नहीं मानती हो । निरकली=देखो ।
 करण=हाथ पकड़ कर । परसली=प्राय करलो ।

९० रामा=नकली । सारखी=तुल्य । धणए=स्त्री । बळी=रेखा ।
 विसेला=विशेष प्रकार का । सयाणी=चतुर स्त्रियाँ ।

९१ अणणी=माता । तणो=की । जू ए=पानि । मां=में । बायो=
 जन्म हुआ । ए=यह । माय चो=पृथ्वी का ।

९२ म=नहीं । बाळ=बालक । चक्रबाळ=पञ्च बसाने वाला ।
 माधी=धीकूरण । जेठी=जेठ का । छनि=छनकर । एण=
 इसने । बाधो=बाध निधा । डायडी=गात्रक । मो=यह ।
 धारै=स्वयं ।

वळी रावळी वणिओ^१ देगि वाई,
 प्रतिहार मा^२ सिद्ध कर्तार पाई ।
 सवैही^३ कयी^४ ग्यान^५ राणी सुणायो,
 अरुठी अतूठी भल वाज घायो ॥९३॥
 ऊभौ मूरळी आप लीव अधूर,
 मोरो जागगी साम वाय मरूर ।
 विकस्मी ह्मसी वण^१ ऊची वजाई,
 सपत्तै पताळ मरगी सुणार्ई^२ ॥९४॥
 वघार्ई वघाइ जसोदा वघार्ई,
 करै मूरळी नाद टाटो व्हाई^१
 मथ नीर ओछो- जिही मच्छ माही
 जमोदा किणी वाह जीत्यी न जाहो ॥९५॥
 वडा जोप सी जुव वाहै वडाई,
 ग्रागाचार नारद् सधेप गाई,
 रही मूरळी घुग वाजी रसाळी,
 वळी चेतना व्रजना^१ साव वाळी ॥९६॥
 लट्यो^१ साय जाण अमीघार लीघी
 करी^२ वण नाद सजीवत्त^३ कीघी ।
 विजोगी सजोगी वण^४ ऊची वजायो,
 प्रभू आपरा^५ जाणि अम्रत पायो ॥९७॥

९३ ^१ वळी रिष्यगदुतनक दासवाई [ळ], वळी राव सूनूठत [ळ], वणि
 र विणदातिके देववाई [च], ^२ कर्तार में रिद्ध [ग ड], प्रतिहार
 कर्तार मर्दाई पाई [च], ^३ सवाणी [ख ग] सवाई [घ], समाणी
 [-], ^४ ग्या [ख घ च], जमू [ड] ^५ गाग [ग घ ड च] ।

९४ ^१ घेण न चो वजायो [ग स ड] ^२ सुणायो [ख ग ड] ।

९५ ^१ काहा टगाइ [ख], ^२ तो छातरुण एां, एां [ख ग ड] ।

९६ ^१ रा [ड] ।

९७ ^१ लट्टु [ख], लटी [घ च], लुटे [ड], ^२ किणो [ड], ^३ सजीवन्न
 [ड], ^४ वगैवण वायो [ख ग] वजे वेण वायो [ड], ^५ री [ड] ।

बेसी महिम्न ! बलि इगवा अपना बना और द्वारपाल व स्वान पर भगवान को नियुक्त करके सिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार समस्त जात (पूर्वा बताए चरित्र सम्बन्धी जानकारी) नागिन को सुनाया और वह वाली— प्रसन्न तथा अप्रसन्न, किसी भी तरह से ये हमारे मन्त्र के लिए ही आये हैं। १३।

भगवान मुरली बधरो पर रखे हुए खड़े हैं नेत्र स्वामी वासिय, इनके मधुर वादन से जग जाएगा। भगवान ने प्रसन्न होकर हसते हुए इनका उच्च वासुरी वादन किया कि उसे सातों पातान एव स्वयं सब सुना दिया। १४।

मुरली की सरस ध्वनि को सुनकर यजमानियाँ भी चेतना का संचार हुआ। गर्गावाय तथा नारद जमीदा स कहने लगे—बधाई ! बधाई ! भगवान कृष्ण मुरली नाद कर रहे हैं। जिस प्रकार छोड़े पानी को मगर मसता है उसी प्रकार वे यमुना के पानी को मच रहे हैं। वे कृष्ण किसी से छीते जाने वाले नहीं, इनका भुजाओं में सुयज्ञ है अतः कोई बड़ा युद्ध जीतेंगे। इस प्रकार सम्प्रेषण बणन किया। १५-१६।

व्याकुल होते हुए समूह को मानो अमृतधारा स्वरूप धेरु-नाव करके जीवित कर दिया हो। जो वियोगी स्वर्गों तथा सयोगी स्वर्गों द्वारा बंध वेणु बानन किया है यह प्रभु ने हमें जानना ममक कर ही यह अमृत पान कराया है। १७।

१३ रावली=बचना। प्रतिहार=द्वारपाल। सिद्ध=सिद्धि। बधी=बहकर। प्रकठी=प्रमत्त। प्रवृत्ती=प्रप्रमत्त। भल=प्रच्छे। वाज=काय।

१४ ऊभी=सहा। नीध=निय हुए। धधुरे=धधुरों पर। वाय=वादन से। मधुरे=मधुर। विरुफमी=प्रकुलित होकर। हस्ती=हसन हुए। ऊची=तेज स्वर से। सपले पनाळी=मातों पताभ में। मरगि=स्वर्ग में।

१५ ठाठी=सहा। घाउ=कम। जिहो=जने। मद्य=मगर मद्य।

१६ जापमी=जीतिगा। बाहे=भुजाओं में। घवावार=गाववाय। सम्प्रेष=संक्षेप में। धुन=ध्वनि। रनाळी=मधुर। बठी=नीटी धनना=स्मृति।

१७ लटपी=व्याकुल, धरा टूटा। जारो=मानो। समीधर=अमृत की धारा। नवी=तीव्रतर। आपरा=अपना।

जिसी सिधवी^१ राग काळो जगायो
उपाहै फणाकार द्रव्यार आयी ।
फणाकार शाटवतै^२ पूछ फेरी,
घणो घातियो साकड साम घेरी ॥१८॥
घेयो नदरो धोट^१ अहिवोट अहो
जळाबोळ^२ माहै^३ कळा सोळ जेहो ।
नीळी वाटत सामटो^४ शाट नावी,
प्रभू^५ अग लागी सोई पूर पाखी ॥१९॥
गोपीनाथ रा हाथ आया गड्डू,
अहि गारडी जाण छाट^१ उड्ड ।
अहीमूठ वाज जिहा^२ ना उपाड,
रमै गारडू^३ जाणि काळी^४ रमाड ॥१००॥
जुडो^१ जाति टोळा मिळी नागजादी,
विढे साप नै सामळो सूरवादी ।
उभ जूग जेथी फिर नीर ऊड
काळो नाग^३ नू आणियो^४ काह कू डै ॥१०१॥
पसारा उसारा^१ खरा पाइकारा,
सहै^२ नाम^३ सारा^४ नरा नाइकारा ।
मच मूठ मारा^५ झरै श्रेण शारा
फणारा घणारा करै फूत्रकारा ॥१०२॥

१८ ^१ जिसे सिधव [ड] ^२ को नाटक [ट] ।

१९ ^१ डोट [ट] ^२ जळाबोळ [प], भळाबोळ [ड] ^३ वाणै [ड],
^४ सामठी [ख ग] साभूही [र], ^५ प्रभू [ड] ।

१०० ^१ छाटयो [ड] ^२ न जेही [ड] ^३ गारही जेम [ड] ^४ काळी [ड] ।

१०१ ^१ जोई नाम टोली [ड], जात्र टोळा [ख] जूडे नाग टोळे [ग]
^२ वड [ड], झभी जग जेठी फिर नीर डडी [ख च] डै [ड],
^३ सु [ड], ^४ घाविया [ट] ।

१०२ ^१ घोमारा [ड], ^२ सहि [ख] सहै [ड च] ^३ लाग [ख ग च]
^४ थारा [प], लारां [ड च], ^५ मर [ग ड] ।

जसो विषु राग मे कानिय को जगाया दनी नी श्कृति बनाए,
 फनों के समूह को ऊँचा उठाए वह दरवार में जाया । अपने फनों का
 प्रहार करते हुए अपनी पूछ का धारों ओर घेरा देकर कृष्ण को सकट
 में डाल दिया । १९८।

कालिय ने परकोट के ममान अपने शरीर का घेरा देकर नकुमार
 को घेर लिया । इसमें घिरे हुए धीकृष्ण बाइलों के अन्दर चद्रमा की तरह
 बिसाई देते थे । कालिय न डक डक गज्य करते हुए चोर का प्रहार किया ।
 प्रभु के अग पर वह पुष्प पागुडी की तरह लग्ता । १९९।

गोपीनाथ के दोनों हाथ कालिय की गदन के पीछे धाए मानों गाइयो
 साँव को बग म करने के लिए उडद छाट रहा हो । कानिय की देव्य कठ
 ध्वनि ही बज रही थी वह बिह्वान नहीं उठा रहा या मानों कोई गाइयो खेल
 करता हुआ साँव का थिल रहा हो । १९०।

जहां पर कालिय नाग तथा धीकृष्ण दोनों लड रहे थे वहां समस्त
 जाति की नागिनिया समूह बनाकर एकत्र हुई । पश्चात् उस स्थान मे
 कालिय को भगवान धीकृष्ण ब्रह्म के गहरे पानी में ले जाये । १९०१।

नरनायक धीकृष्ण द्वारा किये गये तीक्ष्ण पदाघात को कालिय
 सहने लगा तथा मुष्णिका प्रहार मे कालिय के मुह द्वारा आण्ड्रि के
 पट्टवारे चलने लगे और वह अपने सारे फनों से पूवार करने लगा । १९०२।

६८ सिधवी—सिधु (मारु) राग । फुणाकार—फनों का । श्कृति—
 प्रहार करते हुए । फेरी—पुमाई । घातिनी—डाल दिया । श्कृति—
 सकट में । घेरी—घेर कर ।

उट्टे^१ डींगळा^२ पीगळा^३ ग अगारा,
 अधीराज^४ मारा उव कीप आरा ।
 नाहारा^५ करारा ममे हाय मारा^६,
 वोछी^७ ताव^८ धारा वहे वाखारा^९ ॥१०३॥
 तिधारा^१ चौधारा जुडे^२ भवतारा,
 पादूरा प्रहारा घवा^३ डीचणारा ।
 घमूरा घसारा सहै साप^४ सारा,
 पडे पाव, पाणा^५ मय मिण्णिधारा ॥१०४॥
 ग्रह्यो^१ गूदळी^२ जेम काळी लगारा,
 खम^३ आज^४ धारा भुज^५ सेम भाग ।
 धुजती धरा रा ग्रत थम मारा
 निहस्म^६ नगारा सुराग मवारा ॥१०५॥
 काळी नाग न कान झूव^१ करारा,

काळी^२ नागरो कापरी हरि^३ हथ्ये,
 रह्या ठाठरी देखिवा देव रथ्य^४ ॥१०६॥
 जुडी^१ नाग^२ बाला पडी पाव^३ जाचा,
 कर^४ सापरी, साकळी सूत्र काचा ।
 रडे दाढ काट त्रियो^५ वा न रीमा
 वदत्र^६ वहे श्रौण^६ पचास वीमा ॥१०७॥

१०३ १ युट्टि [ख] उटा [ड] २ डिंगळा [ख], डगळ [घ], डेगळ [ङ]
 ३ किंगळा [ख घ] कौगळा [ज] ४ अधारा किगारा [ग ङ]
 ५ कहानिरा [ण], कनारा [ङ], ६ धारा [ङ] ७ उछी [ङ],
 ८ राठ [ज] ९ वारि [घ] ।

१०४ १ नधारा [ङ] २ जडे [ङ], ३ ठिका [ज] ४ सान [ङ] ५ पाणा [ङ]
 गहुसा ममारा गडी गुठलां रा [ख ग ङ घ पा]

१०५ १ ग्रहे [ङ], २ गुदद [ग], गुदडि [घ], गुदळ [ङ], ३ यम
 [ख ङ ञ] ४ प्रोच [ङ], ५ जेली [ख ङ], ६ नहस्म [ङ] ।

१०६ १ झूम [ङ], २ नाथी [ज], ३ नाग [ङ], वा ह [ख], ४ भर
 चुड चाडी चहे जाड भाड, बहु हापरी बाय पु नाथ बीड [ङ]
 घ० पा० ।

१०७ १ जरे [ङ], जडे [ख], २ हाय [ग ङ] ३ माव [ङ], पाव [ख ग]
 ४ पडी [ङ], ५ वडे नाग रीसे [ङ], ६ सोळ [ङ] ।

श्रीकृष्ण की मार द्वारा उसने आत्मनाश किया तथा अगारों के सहस्र द्विगलमय एव विगलमय वचन कहने लगा । श्रीकृष्ण के प्रहारों को सहता हुआ कालिय जल धारा के अंदर छोटी नाव के समान तैर रहा था । १०३।

नव तारक श्रीकृष्ण, कालिय के साथ तिरछे एव सामने से भिड़े तथा पंरों में पड़े हुए साप को हाथों से मचने लगे । साप, श्रीकृष्ण के द्वारा किए गये एड्डियों के, घुटनों के तथा भुवकों के प्रहार सहन कर रहा था । १०४।

श्रीकृष्ण की भुजाएँ आज शेष के समान कालिय के मार को सहन कर रही हैं । उन्होंने कालिय को गू दळी (हरे व्याज के पत्ते) के समान उठा लिया । उस समय मार से पृथ्वी कपायमान होने लगी । बड़े-बड़े स्तम्भ भी बिरकने लगे और देवताओं की विजय दुःखुमि बजने लगी । १०५।

कालिय नाग और श्रीकृष्ण भिड़ रहे थे ।

कालिय का सिर भगवान श्रीकृष्ण के हाथों से था । इसे देखने के लिए देवताओं के रथ ठहर गए । १०६।

समस्त नागिनियाँ एकत्र होकर भगवान के पाशों में पड़ीं एव साँप की याचना करने लगीं । उनके हाथों में पञ्चे सूत की शृंखलाएँ थीं । भगवान कालिय नाग के दाँत उखाड़ रहे थे अतः यह विलाप तो करता था, परन्तु श्लेष नहीं कर रहा था । उसके हजार कर्णों से श्रोणित यह रहा था । १०७।

१०३ पकारा—जलठा हुआ कोपला । उर्वे—उसने । धारा—आत्मनाश । करारा—तीव्र । हाथ—प्रहार । सम—सहता है । बोधी—पोधी, छोटी । धारा—नदी, तरण ।

१०४ विषारा—टेढ़े, पादव से । चौधारा—सामने से । भवतारा—भव तारक कृष्ण । पादूरा—पदतलों के । टोंचणारा—घुटनों के । घनू राधमारा—भुवकों के प्रहार । पाखा—हाथों से । मिष्ण्य धारा—मच को ।

१०५ पह्यो—पहण किया । गू दळी—हरे व्याज की कोपल । प्रजती—कपाय मान हुई । धरा—पृथ्वी । प्रकं—इगमगे । निदस्ते—बज । सुरारा—देवताओं के ।

१०६ भूव—भिड़ना, मारना । कोपरी—सिर । ठाठरी—स्विर । देव रथ्ये—देवताओं के रथ ।

१०७ माथा—याचना । दाड—दृष्टा । काडे—निवालने पर । रीसा—श्लेष । बदरने—मुस से । पथास बीमा—हजार ।

काळी नाग ने^१ जुद्ध माती किसन
 जमूना घही पर सिदूर व्रन ।
 कियो आप सू आप आळोच कान,
 माराध ही खप घावसू औ न मान ॥१०८॥
 बाहाल^१ वडाळ गोपाळ वडव्व,
 जो र्य नागणी झाग नाख जडव्वे ।
 अहीराव न डाव कोई न^२ सूझ्यो,
 इमो भीडियो सास^३ नासा अळूप्यो ॥१०९॥
 पयो^१ मार पाण^२ भयो^३ गात्र भग,^४
 प्रभू माडियो रास माय पनग^५ ।
 तिसी तत वसी वजी ताल ताळी^६
 माडै पाव आणी दियो व्र नमाळी ॥११०॥
 काळी^१ नाचियो ऊपरै नाग^२ काळी
 वळ रभ नाटारभी अक्वाळी ।
 डर नाग काळी झरै श्रोण डाच्या^३
 नमो नाच त नाथ नारद नाच्या^४ ॥१११॥
 भली नदकिसोर नारद भारा,
 पनगा सिर नाचियो नदि^१ पाख ।
 जप नाथ सू नागणी हाथ जोडी
 तमा देव^२ मोटा अमा मत्त थोडी ॥११२॥

१०८ ^१ नी [ङ], ^२ मरम्या पखि घाऊ सद्दु न मन [ख घ], मरम्या साप घाव सूधो न मान [ग], रम साप खेघाठ [ङ] ।

१०९ ^१ विहाल ह्याको [ङ], ^२ काहू न सूभ [ङ] एकोन सूभ [च], ^३ स्हेस नासे प्रवृभे [ङ] ।

११० ^१ पयो [ङ] पयु [ख], ^२ प्राण [ङ] ^३ कियो [ङ] ^४ भगो [ङ], ^५ पनगे [ङ], ^६ तिसी तत ताती वजी ताल ताळी, मळ्यो पांव शारभियो वध्रमाळी । तताथ तताथ तताथे सतान, उर अतय भजय सुलभान । गिडुयो गिडुयो गिडुयो क गाज, वाइ वासळी नाद बोकासु वाज ॥ [ङ] म पा ।

१११ ^१ काळी [ङ ग] ^२ नित्त [ग ङ घ], ^३ डाव [ग ङ घ] ^४ नमो नाथ तो नाच नारद नाच [ङ] ।

११२ ^१ नाथ पाख [ङ] यह पचाश [ग] प्रति में नहीं है । ^२ थयो दोस [ङ] ।

जित समय कृष्ण और कालिय युद्ध कर रहे थे उस समय यमुना लाल रग से परिपूर्ण होकर बह रही थी। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने आप मन्त्रणा की कि—यह कालिय प्रहारों से तो बस में होने वाला नहीं है, इसे तो मारने पर ही सफाया होगा। १०८।

बेलो नागिन, उस बड़े भारी सपराज को भगवान् कृष्ण ने अपने हाथों में उठा लिया है तथा उसे ऐसा पीड़ित कर रहे हैं कि—कालिय को कोई दाय पेंव स्मरण नहीं हो रहा है और उसका इयास नासा पुट में उलस गया है एव यह मुह से फेन गिरा रहा है। १०९।

पैरों की मार के कारण कालिय का शरीर दूट कर गिर पड़ा तब भगवान् ने उसके सिर पर नृत्य करना प्रारम्भ कर दिया। भगवान् ने जब कालिय के सिर पर पाव रखा, उसी समय यांसुरी बजने लगी सायहा चारों ओर से लय पूण तालियां बजने लगीं। ११०।

श्रीकृष्ण, कालिय नाग के सिर पर नाट्य की अप्सरा के समान अपनी कटि की मोड़ कर मुद्रा बनाते हुए नृत्य करने लगे। जिसके कारण कालियनाग नमनीत हो रहा है तथा उसके मुह से रक्तस्राव हो रहा है। इसी समय नृत्य करते हुए नारद ने आकर कहा— भगवान् ! आपके नृत्य को नमस्कार है। १११।

श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं, श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं ऐसा कहते हुए नारदजी भी भगवान् के पास नृत्य करने लगे। भगवान् श्रीकृष्ण से नागनियां हाथ जोड़कर कहने लगीं—हे देव ! जाय बड़े हो और हम अल्प बुद्धि हैं। ११२।

१०८ न=भीर । युद्ध माती=युद्धमत्वा । पूर=बहाव सम्पूर्ण । सिन्दूर व्रत=लाल रग की । घाळोच=मन्त्रणा । सप=नष्ट होगा । घाव सू=प्रहारों से । धो=यह । मान=समझेगा, वग में होगा ।

१०९ बडाळ=बड़े । भाग=फेन । जटव=मुह से । न=को । डाव=दाव, भवसर । सूक्ष्मी=सिंसाई दिया । भीडियो=पीड़ित किया, बसा । घळइयो=उलस गया है ।

११० पयो=परीकी । पांणे=ते, हाथों की । गात्र=शरीर । राघ=नृत्य । तिसी तत=उसी समय । माढ=गुहपर ।

१११ रभ=मासरा । न टारभी=नाटककी । घकवाळी=कटि मोड़कर । डाच्या=जड़ों से । त=घापना ।

११२ मलो=अधे । पाघ=समीप में । तमी=तुम । घर्मा=हम । मघ=बुद्धि ।

तुकारा^१ रेवारा जिहारा^२ तमासू ,
 आया आज ते माफ कीज अमासू ।
 महा खम्मिया निब्धि^३ जादम मोटा,
 सरो हक तू ही बिया सत्र खोटा ॥११३॥
 जुहे^१ रूप तोने^२ त्रणावत्त जेहा,
 कुहाडा पिणा ऊपरा मार^३ वेहा ।
 लोका ही विचाळ^४ प्रभू लीक^५ लाग
 अहडा सुण्या मापरा^६ केथि आगे ॥११४॥
 सामी^१ सेस मट्टेस जे^२ ही न सूझ,
 बुधी^३ हीण की रावळी गत्त^४ वूझ ।
 ब्रह्माड इकीसा देखावी^५ विहाण
 जसोदा सोई^६ राजन् पुत्र जाण ॥११५॥
 पयो^१ ब्रन्नरा पास^२ हू पध्धरावे,
 भज नद तोई तुना^३ पुन भाव ।
 पढीछा नही छी प्रिया राज पायो^४
 प्रभू वेदना^५ हुव^६ साप^७ दिरावो ॥११६॥
 देऊ^१ कत वगो हसै^२ वण दीधो ,
 काळी नागरी नार उछाह कीधो ।
 आगे नागणी भेट सामट्टी^३ आण,
 जदूनाथ लीजै जिन्नू^४ राज जाण ॥११७॥

- ११३ ^१ तुकारे रेकारे [ड] ^२ सुप्रया [ग] ^३ नद्ध सुवद [ड] ।
 ११४ ^३ जडि [ख] ब्रहो [ड], ^२ तुना [ड] ^३ माट [स] मात [ग च], मान
 [ड] ^४ लुकाई वचाळ [ड] ^५ लक [ड], ^६ सातरा [ड] ।
 ११५ ^१ सम्हो [ड] ^२ जाड [ड] ^३ बुद्धय [स], बुका [ड] ^४ गात्र [च]
^५ दात [ख ग], दाखी [घ] देखी [ड], ^६ भर्जो [ड] ।
 ११६ ^१ पिता [ड] ^२ हो [ग ट] ^३ तवो [ड] ^४ पढीछापि निषाप्यळ
 राज पाय [ख] पढी मापरी छापयो राज प य [ड] ^५ वेदना [ख ग],
^६ होयसी [ख ग] ^७ साप तरायो [ख] सात खरायो [ग घ],
 राज पायो [ड] ।
 ११७ ^१ बिया [ग] दीमठ [घ], दियो [ड], ^२ हवे [ड], ^३ सामेटय
 [ख ग], सम्मेट [ड], ^४ जको [ड] ।

ह मादव कुल श्रेष्ठ देव ! आप तो क्षमा के अथाह सागर हो । ससार मे एक प्राप ही सत्य हो, अन्य तो सभी मिथ्या है । अत हमारे द्वारा प्रापके लिए जो छोटे बड़े गद्द प्रयोग म आगए हों, उनको क्षमा करना । ११३।

आपका स्वरूप तो तृणावत जस राक्षसों से मिटने का है , हमारे जसे तुच्छ तृणों पर कुत्हाडे का प्रहार कैसा ? तीनों लोकों मे यह लकोर (लाभछन) लगजाएगी । भगवान ! कहीं आगे (पहले) भी साप की शिकार मुनी है ? ११४।

हे स्वामी ! प्रापका वास्तविक स्वरूप तो द्रोप नाग तथा भगवान शिव क लिए भी अगम्य है फिर हम जब-बुद्धि आपकी गति को क्या समझ सकते हैं । प्रात काल मे जब आपने इक़ोस ब्रह्माण्डों को दिखलाया था, फिर भी यशोदा जी तो आपको पुत्र ही समझती हैं । ११५।

पृदावन क पास ही आप अपने चरणों को पधराते हैं फिर भी नव लो आपको पुत्र भाव से ही देखते हैं । हे प्रभु ! आपके पाद-पद्मों को जानकारी इस कालियनाग को नहीं थी, तब वह थाप से मिटा । अब हमें कष्ट हो रहा है । आप कृपा करके इस साप को हमें वे दीजिये । ११६।

भगवान श्रीकृष्ण ने नागनियों को वचन दिया कि—“तुम्हारे पति को गोघ्न ही तुम्हें दे दू गा ।” यह मुनवर कालियनाग की स्त्रियों ने हर्ष प्रगट किया और भगवान श्रीकृष्ण के सामने बहुत लो भेंट लाकर रखी तथा प्रायना करने लगीं कि—इनमे से जो जो भी आपको पसंद हो वह ले लीजिए । ११७।

११३ तुसारा-रकारा=तिरस्कार मय शब्द । जिकारा=सम्मानमय शब्द । माफ=क्षमा । सम्मिया निष्पि=क्षमा के समुद्र । जादम=पादप । सरो=सत्य । सन्व=समस्त । छोटा=असत्य, नकली ।

११४ जुड=सड़ने का । कुहाडा=कुठार । केहा=कैसा । भट्टेडा=शिकार । कवि=कहो भी । प्राग=पहले भी ।

११५ सॉमो=प्रभु । सूभ=दिसाई देता है । को=क्या । रावली=प्रापकी । बूभे=जान सकते हैं । राअ नु=प्रापको ।

११६ पवी=धरण । मजै=स्मरण करते हैं । भावै=भाव से । पकीसा=परीक्षा । प्रिया=प्रिय को । राअ=प्रापके । वेवनी=कष्ट । दरारो=देखो ।

११७ बेगी=गोघ्न । वण=बचन । उथाह=उरसाह । भेट=भेंट । घामट्टो=बहुत । जिदू=जो भी ।

सवारे^१ घणा आप आपै अरच्च,
 चोव चदण चीत्र^२ नारी चरच्च ।
 अही नाथियो पोयणी नाळ आणी,
 असवार हूबो आप अप्पलाणी ॥११८॥
 वागा^३ शालिया प्रज्ज सेरी विचाळ,
 वळ फेरियो आगण नद वाळ ।
 शढी^४ देह^५ चिता पढी, कस जप,
 काळी मारिय^६ टार वेकाण कपे ॥११९॥
 काळी नाग वाळीद्रहा हूत^७ वाडे,
 दियो वास दूरतर^८ तिकी तूह^९ दाढ ।
 महाकाळ काळी तण माण मोडी,^४
 जसोदा दिसी^५ आवियो पाण^६ जोडी ॥१२०॥
 विढ^१ विज्जरी एह उच्छाह वाळी,
 कहता अळ्ळै^२ ग्रहा कपाळी^३ ।
 गोविददासरे आसर गुण^४ गायो,
 वाचता न पौचे^५ वहु^६ सेस वायो ॥
 समवाद वाळी तणो मत्त^७ सार,
 चवे दास दासानु सायो^८ चितारे^९ ॥१२१॥

११८ १ ऊपरि [ख], उवार [ग च] उवारे [ङ] । २ चील नारी [ख], चीर [ग घ], चाह [घ], काशमीर [ङ], काळी मारियो कमळी भार कान, पळ्यो घाय पाताळ सू घाय पान । असवार वाळी तणो, कान घायो, विविधि विधी प्रज्जनारी वघायो । भगवान सू गोप गोपाळ भेला, वडा वीच फोळी दुबा तेण वेला ॥
 [ङ ग घ ङ च] घ, पा ।
 ११९ १ वागे [ङ], २ मडे [ग] भरु [ङ], ३ ब्रह्म [ङ], ४ कूटिया, यो [ग ङ] ।
 १२० १ सहत [ङ] २ दूरे नका [ख], दूरे जिता [ग], दूरतका [ङ], ३ हूत [ग] ४ मोडे [ङ], ५ दसु [ख], मणी [ङ] ६ हाय [च] ।
 १२१ १ विठा [ख ग], मोठा [घ], वाई [ङ], वाता, [च], २ धवूक [ङ], ३ कमळी [ख] ४ जस [ङ], ५ पूज [ङ] ६ सवेस [ङ], काळी नाग वाळी सवाद कान, पया पेट नाव पडे तास पाने । ज्ञाणे वो न जायो जमदून जांड, पुराण घटोरे कियो वूम पाडे । रासमे समय कही सा मखे, ममवाद गातां ग्रहे पार सते । [ङ] घ पा भगवान त गोपाळ भेला, वद वात पूज दुबा तेण वेला । [ख] झ पा ७ समवाक्ष [ग] ८ एह सारो [ङ], ९ साइयु [ख], साइयो [ग], साइयठ [घ], १० चितारो [ङ] ।

नागिनियों ने अपने आपको सुश्रित करके भगवान को अर्चना की और घोवा तथा चन्दन के चित्र बना कर उन्हें चित्रित किया। तत्पश्चात् भगवान ने कमल ताल भगवाकर कालियनाग के नाक में नकेल डालकर उसे अपने वन में किया। फिर बिना काठी के ही उसकी पीठ पर सवार हो गए। ११८।

भगवान ने कालिय की लगाम को पकड़े पकड़े उसे वन की गलियों में घुमाया। उसके बाद नद के आंगन में लाकर फिराया जिससे उसकी वह चिता झट गई। कस ने कहा—कालिय जस टट्टू को मारने से कौनसे केवाण कांपते हैं? अर्थात् उस क्षुद्र जीव को मार कर कौनसा बड़ा कार्य कर दिया। ११९।

जिस तरह कालियनाग को काली-ग्रह से निवाल्कर उसकी बहुत ही दूर स्थान दिया। उसी तरह तेरे कालिय की बाढ़ वाला (विष) या उसे भी भगवान ने दूर किया। महाकाल स्वल्प कानिय का मान मदन करके भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथों को जोड़े हुए माता पद्मोदाजी के सम्मुख माये। १२०।

इस उ साहचर्यक वन की लड़ाई का वर्णन करते हुए यद्वा तथा शिव भी उलस जाते हैं। फिर भी मैंने श्री गोविन्ददासजी के सहारे से भगवान के गुण (धरित्र प्रथ) का वणन किया है। जो कोई भी इसे पढ़ेगा उसे सांप की हवा (पवन) तक नहीं लगेगी। यह भगवान श्रीकृष्ण तथा कालिय का सम्वाद (वणन प्रथ) अरुनी बुद्धि के अनुसार वासानुदान कवि साया ने कहा है। १२१।

११८ घाप=भैरी है, देकर। घोवा=एक सुश्रित द्रव्य। चित्र=चित्र। पोयणी नाळ=कमलनाल। घपलाणी=बिना काठी के।

११९ वाणा=लगामें। सेरी=गली, मुहस्ता। विचाळ=मध्य। टार=टट्टू। केवाण कापे (पु०)=घोड़े कांपते हैं।

१२० हूत=से। बाड=निवाल कर। वास=स्थान। दूरतरं=बहुत दूर। तिक्को=वह। लूम=तरे। दाड=बाडों में, बहुत। माण मोडी=मान मदन करके। दिसो=सम्मुख। पाण=हाथ।

१२१ विड=लड़ाई। एह=यह। उबद्धाह-वाळी=उरसाह बद्धक। घळूमै=उपभूत है। कपाळी=गिव। घामर=घाश्रय में। न पोच=नहीं पहुँचेगा। मस मार=मरत्यनुसार। चर्वे=कहता है। वितारे=कवि वितरण करता है।

॥ कलस रौ कवित्त ॥

सुर्णं पर्णं^१ ममवाद, नद नंदन अहिनारी ।
समद्रा पार ससार, होहि गोपद^२अणुहारी^३ ।
अनत अनत आनद, सब वपु तास समावै ।
भुगति जुगति^४ भडार, किसन मुगत्ताज कहाव ।
रम्यो^५ नृत्य राधा-रमण, दुहुमुज करि काळीदमण ।
ते चवण-भुणण अहि^६ रावतणा, मटण^७ काज आवागमण ॥१॥



कलस ^१ सणै सण [क] ^२ गोवि द [ग], गोपद [च], ^३ भनुहारी [छ],
^४ भुगति त [ख ग ङ] ^५ रचिपी चरित [ट] ^६ गहरा [झ],
^७ गमण काजि [झ], गमण कान्हि [ष] ।

कलस का कवित्त

नद नवन श्रीकृष्ण और नागिनियों का यह सम्वाद (घणनघण) को सुनेगा, कहेगा वह भय रूपी समुद्र को गोपद के समान तर कर पार हो जाएगा तथा उसके शरीर में अनन्तानन्द का समावेश होगा। भुक्ति, जुक्ति एवं मुक्ति के भङ्गार श्रीकृष्ण अज्ञ कहलाते हैं उ हीं राधारमण ने अपनी दोनों भुजाओं द्वारा कालिय दमन-नृत्य किया। उसी नृत्य को आवागमन मिटाने लिए कहना तथा मुनना चाहिए। ●●●

[कलस] पणु = कहेगा। मणुशरी = ममान। वपु = शरीर। तास = उसके। भुगति = भोग। जुगति = मुक्ति। भङ्गार = शीप। मृग छात्र = मज्जमा एव मुत्त। रम्यो = घना। राधारमण = श्रीकृष्ण। से = वह, उसे। शवण मुणुण = कहना तथा मुनना। मरण कात्र = मिटाने के लिए। आवागमन = माना जाना, न म मृत्यु।

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य में नागदमण प्रसंग

गीत नागदमण री चारठ मुरारिदास री कहियो

सोहे बाधियां जडू लो कडू लो करग्या किया

उधूडलो नागरो जडू लो नाग बाज ।

अडू लो आगणो ऊमो लडू लो सो रोस तियां,

काँनूडो कडू लो बोलें दडू ला के काज ॥१॥

घणो मिल नागणी हुमागणी मुहागणी सी,

मूणी यू पू छणी माघो जायो कुणी मात ।

मैसो फूणी मुणी बाग कुणीसू जमाणी बाध

तत्र मत्र हणी जनी अने तणी घात ॥२॥

बोलियो जाएद बर नद री हू कहाऊ बेटी,

चराऊ मुकद धेने जसोदारो चर ।

भोरी बेवो गेद काये जगावो नागेद माटी,

छोडो फद रवगारी नारियांरा फव ॥३॥

हस सारी नाग नारी उचारी बिहारी हूत,

रावारो पधारी बळे लेंतो आजो सूक ।

कठ थारो घेम असो जुद्धवारी बातें कर,

पूर्णाधारी दीठो ७ छ आगचारी फूक ॥४॥

माटी रोस काटी जसो आंटी आटी बाता मेळो,

मडासू उझाटी तेग बांटी न छ मीड ।

घेम बरा घाटी जघा पाटसो फुगारी फांटी,

पीड हीर वाटी चाटी पाटी तणो पीड ॥५॥

नागणी रहायो नाद बादियो अघाये बाद,
ताजे वातां भूलायो लखायो लाग ।
पायो अभी आपरां बजायो असो राग प्रभु
काहूटे जगायो काळी नोळी आयो नाग ॥६॥

राळतो कराळ भाळ फू णा घाळां फू कारडा,
घाळा लागो ठाला कर बायं असी घोट ।
सळवळां जोहां घणी गलाफा गु जाफां लाळा,
परनाळां पड जठी हळाहळा पोट ॥७॥

कर पू रपट्टां रट्टा नपट्टा कपट्टा कीघा,
छूटा पट्टां चहूवट्टां फिरतो छछाळ ।
बाष से उलट्टां दळतो वपट्टां ददळां,
कट्टां वट्टां कू टा करै काळी विकराळ ॥८॥

करां बी भूकियां शोक करियो क्यानी कू ड,
नादी नामजादी गायो वासळी रो नाद ।
मावी नागजादी जोयो महानोगी मश्रवादी,
अनादी जुगादी आदी बावी सेले बाद ॥९॥

लाग नहीं फू क शाळ लपेडा थपेडा लाग,
नेडा नेडा फुणा घणा ऊपरे नश्रीठ ।
राजवी अहेडां जाण यडां डाडा रोस रत्तो,
रमतो उरेडा दिव केडा आयो रोठ ॥१०॥

लडतो कळाप कर लाग लोप हुयो लोहां,
आप नाग पाकी फुणा बाहतो अमाप ।
स्याम थाप बाहे जफा ऊघटे जो छाप जती
सांपरो अंतर त्रिहू तापरो सताप ॥११॥

नायियो पोअेणनाळि वनमाळ घड नांच,
ताळी ताळी नृत याती होयतो प्रबक ।
उपाडी बडाली छाप कदम्मा चहना घाळी,
असा काळी कवाळी कोराळी मड अक ॥१२॥

बरल अनत फूल हरश्च नारव अह
निरहल अरोता शांक घट्टवाळी मार ।
आनइ जसोदा मव घनी घनी जीत अल्प,
न लक्षण अनल माया मोहिमां निहार ॥१३॥

रीतिपा नागणी हुती नामेंदा दिवदा रोमैं
 नमो नदन्या नम नागदारी नार ।
 छपीला दुडदा चदा तोमदा न जाणू छ्या,
 मत्त शाह हो । यथा मणदा 'पुरार' ॥१४॥

—श्री लोभासुन्दर शलावन क लीलय से

•••

अथ गीत पाठगती सुपन्वरा

दडो पडता इगामें घट्ट झांरियो बवव डाल,
 नीर पाये अवाघ घडता घाद नार ।
 खेल्ह गाल घ दर करता नगाडियो लेटी,
 काळी नाग जगाडियो नदरे कवार ॥

फन लीय घसमा कराळा भाग भाळा फुणा,
 ताळा व भुजाळा तू गुवाळा तोरवान ।
 विरवाळा सिपाळा मडाळा जोष घाळाबव,
 जूटा बिहू काळान वि घाळा जोरवान ॥

कवमा करणा घाव दाव ठ्हे अमृतकारा,
 उई मृतकारा विला फुणारा अमाव ।
 जद हरो यथ काळी सधणा जोडिया जक,
 सध सध विछोडिया नदर सुजाव ॥

महा भुजगेस नाव समाव लडियो माण,
 खम ठोर मराव लडियो जत लम ।
 दडियो जवड नीर उचाटां मिटाय ड्हे
 रजें मित्र फुणाटां मडियो मादारम ॥

धू धू कटां ध्रुवटा ध्रुकटा धू धू कटां धार,
 ता धिना ता धिना धि ना ता धिना गुताळ ।
 ता येई ता येई येई येई येई ताता,
 गता ज अहेस माया नदरी गवाळ ॥

रमां क्षमां रमा क्षमा रमा क्षमा क्षमा रमा,
 ठमका हमका क्षकां रमकां ठमका ।
 पाठगती गीत राधा रजण पयपे प्रयी,
 नाग धू सजणा निमो सगीत नितक ॥

—श्रावण मिश्रनाजी
 'रघुवर जस प्रकाश' से सामार

६६८

नागनायन लीला

कायन की रे बाळा गेंद बणी रे, काय स बेऊ घटाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

रुप्या की रे बाळा गेंद बणी रे, सोप्रा म. देऊ मडाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

पयलोज जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते दरवाजा मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

बूसरो जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते सेरी मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

तीसरी जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते बजार मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

चौथी ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते गोया मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

पांचवीं ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे गई ते जमुनारी पाळ ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

सेलत जो सेलत गेंद गिरा पटो रे गिरी ते जमनां रा मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

गेंद का छमचड बाळो बूदपो रे, झारो काहो बूदपो जमना धयरे ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

बाळा गुकाळा बीडया धाया रे धाया ते जमोदा रा पास ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

निबळ जसोदा माता भायर अं धारो काहो बूदपो जमना-मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

रदती ज कुदती माता नीसरी रे आई ते जमना री पाळ ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

×

×

×

नांग सोवऽ न नांगेण जागऽ,
जभाण नांगेण धारा राग छऽ घडी हुई खेलां वाद ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
की रे बाळा तू, मारण मूल्पो,
को रे बाळा धारी माता न दुरघो, बी घर छोटी नार ?
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
आंगठी जो मोडि नांग जगावियो रे,
नांग अवघूत जाग्यो, मची पमघोळ,
वरसो अगनि का लोळ जे का मुस मऽ जवाळ,
जळ जमना री पाळ, खेले नदानु बाळ,
नदानु बाळ माई—कसा-जु काळ ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

×

×

नांग नापीन बाळो हुयो अस्तवार रे
बोली ते नांगेण तय —
म्हारा हाप चुडा की लाज राखो,
म छऽ जुग जुग बीओ अह्मात ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
नांग नापीन बाळो हुयो अस्तवार रे,
आयो ते जमना री पाळ ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
बाळ-गुवाळ्या बीड्या आया रे,
आया ते जसोदा रा पास ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
निकळ असोदा माता मायेर ओ,
नांग नापीन बाळो आयो धारा द्वार ।
मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

मोतियन सीर धारो बाळो बघाओ,
 बूध पिलाव काळ नाग ।
 मोहन धारो गेद बणी रे ॥

—डॉ० वृष्णलाल हम

“निमाडी और उसका साहित्य” से सामार

•••

नाग अभिमान मदन

पुण जो साजन अचरज नो कथा । ॥ ए पाकणी ॥
 एक दिन जमुना हो जळ में परिसरे हरि रम मुत्रिचार । च० ।
 गिदुक उछळी न तव पडयो, काळिंद्रह मत्तार ॥१॥

घतुर नर हरि रम रस रग,
 जो हो सुंदर रूप सुलामणा, लाजा चचतो पाण अनग ।

पुण जो साजन अचरज नो कथा ॥
 ते लेधा न हरी ब्रह्मनर गया, सोषी लियो गयद । च० ।

विष्ट फिरतो तव पेलियो, आवाप्त तेजनो बंद ॥२॥ च० सु० ॥
 मितरे दीठी एक गवाक्षिका, कीतुक अयिको पाम । च० ।

बेई फलांग माहि गया निरोक्षण कर काम ॥३॥ च० सु० ॥
 भाग जातां पलग पे नीलता, दव काळी नाग । च० ।

सहस्र फणो सूतो निदमें महीरर विन्नो छग ॥४॥ च० सु० ॥
 कर तिहां नागणी पताळनी नव नव भांत विनोद । च० ।

पामो अचरज ताम हरिमणी, बोव वचन सरोद ॥५॥ च० सु० ॥
 नागणी बाच—

काई तू वाट बीसरियो रे बाला, काई तू मारग भुलियो ।
 काई ते सारो काळ घटियो जे इण मारग आवियो ॥६॥

जळ कमळ छडि जाय रे बाला स्याम मोरो जाग से ॥प्रांणणी॥
 कान बाच—

नहि ते वाट बीसरियो रे नागण नहि ते मारग भुलियो ।
 नहि ते मारो काळ घटियो हु एण मारग आवियो ॥७॥ जळ ॥

नागणी बाच—
 किहां तुमारी बेसणो रे बाळा कुण तुमारी पाम रे ।
 कुण राय ना चलग घाल, मु छ तुमारी नाम रे ॥८॥ जळ० ॥

कान बाच—
 मयुरा हमारो बेसणो रे नागण गोकुळ हमारो पामरे ।
 कस रायना चलग घाल, गोकुळीको माहूक नाम रे ॥९॥ जळ० ॥

नागण अगाडो तोरा ना, ने बडो कम ने विडातोयो ।

कस राय धी जुवट रमती, गह तुमारी हारीयो ॥१०॥ अळ० ॥
 नागणी नाग प्रबोधन वाच—
 धरण चोळी अग मोशे, नागणी ए नाही जगावीयो ।
 उठी न यळयत बंठा पात्री घालुबो हम घर दावीयो रे ॥११॥ अळ० ॥
 उळ्यो हो महिपर विष भर लोचने, कोप करी ततकाल । ख० ।
 आयो हो सनमुल हरिन ऊपरं रोस भरघो विकराळ ॥१२॥ ख० सु० ॥
 नाग्यो हो भाली मल तणी परे, पाग्यो अघिको प्राप्त । ख० ।
 ऊपर बेसी हो ह्य परे घाहियो, जोर कितो ह्ये पास ॥१३॥ ख० सु० ॥
 पात्री हो नाग तजी वमीमान ने प्रणमें प्रभुना वाच । ख० ।
 हु तुम पायक लायक साहीध, मेहेर करो मशाराज ॥१४॥ ख० स० ॥
 हिष हु सेयक दाजयो साहुरी, ग मजु अवर भूयाळ । ख० ।
 सेई सतकार आयो हुरी निज घरं, मिलीयां बाळ गोवाळ ॥१५॥ ख० सु० ॥

—५० श्री गुणसागर सूत्रि

“धो हरिपस धरित्र डाळ सागर” से सामार

●●●

नागनायण लीला

छोटी सो बहैयो काळीबह पर खेलण आयो रे ।
 भोळो सो कहैयो काळीबह पर खेलण आयो रे ।
 बाहे की पट गेंद बणाई, काहे को डडियो लायो रे ।
 पुष्पन की बाळ गेंद बणाई, हरि घदण को डडियो लायो रे ।
 खेलत गेंद पबो जमुना में, हरि काळीबह में घायो रे ।
 काई धारो नाव किर्णा घर जायो, कोण नाम धरायो रे ।
 सात जसोवा पिता नवजी, कुण्ण नाम धरायो रे ।
 बौण नाव सु आयो रे वाळा, काई रे कारण आयो रे ।
 गोकळ नगरी सु आयो अे नागण, नाग की नेतो लेवण आयो रे ।
 नाग नाथ प्रभु बाहर आयो, नगर तपास घायो रे ।
 पुरयोत्तम प्रभु की बळि जाऊ, नागनाथ धर आयो रे ।

—श्रीमती सुमतादेवी उपनाम ‘पपली’

से सामार

●●●

